सिकन्दरअली भी मेरे साथ आपके कमरे में चलेंगी ।

मिसेज़ अमीरहसन—मैं ग़ैर आदमियों को अपने कमरे में न जाने दूंगी मेरे ग़ौहर लोहेवाला बकस जिसमें मेरे सब ज़ेवरात हैं उठा लावेंगे मैं वह चीज़ें निकाल दूंगी जिसको ख़ुदा जाने आपको क्यों इसक़दर तलाश है ।

मिस्टर मावेल — मुझे कुछ उज़्र नहीं, मिस्टर अमीरहसन ! बराह मेहर्बानी आप वह बकस उठवा लाइये ।

मिस्टर अमीरहसन गये और अपनी बीबी के ज़ेवरात का बकस ले आये मिसेज़ अमीरहसनने उसे खोला और हीरे वाली चूड़ियां और अँगूठियां निकाल कर मावेल साहब के हाथ में दे दीं ।

मिस्टर मावेल—यही चूड़ियां और यही अँगूठियां आपने हिदायतरसूल से पाईं थीं ।

मिसेज़ अमीरहसन- यही और कोई नहीं (फिर कहा) मगर मैंने हिदायतरसूल से नहीं पाईं ।

हिदायतरसूल- यही हैं हुजूर जो मेम साहबा ने मुझसे चोरी कराईं और जिसके एवज़ में मुझे एक छल्ला नहीं दिया ।

मिसेज़ अमीरहसन — मैं चोरी का हाल कुछ नहीं जानती और न मुझे हिदायतरसूल ने यह चीज़ें दीं, मेरे बाप ने मुझे दी थीं ।

मिस्टर मावेल — आपके बाप का नाम गर्नर है ? आप उसको पहचान सकती हैं ।

मिसेज़ अमीरहसन— ज़रा ज़बान सँभाल के बातें कीजिये मेरे बाप का नाम गर्नर नहींहै और न मेरा बाप यहां है मैं एक सर्जण्ट की बेटी हूं । सर जान गार्डन उनका नाम था मगर अब यह नहीं जान्ती कि वह आजकल कहां हैं ।

मिस्टर मावेल—मिस्टर अमीरहसन येज़ेवर मसरूका है और बददियानती से आपकी बीबी के क़ब्ज़े में थे इस लिये मैंने उन पर दफा ४११ पिनल कोड का मुक़द्दमा क़ायम किया है और यह जुर्म नाक़ाबिल ज़मानत है ।

अमीरहसन — मगर मेरी बीबी भाग न जायगी आप इस दर्जा सख्ती न करें । आप जहां हुक्म देंगे मैं उनको पेश कर दूंगा ।

मिस्टर मावेल — मिस्टर अमीरहसन तुम अपनी बीबी के हालात से वाक़िफ़ नहीं हो मैं इस मामले में

कोई रिआयत नहीं कर सकता। मिसिज़ अमीरहसन! आप मेरे साथ चलें इतनी मैं रियायत करूंगा कि आपको हवालात में न भेजूंगा बल्कि डाक बँगले मे आपको ज़ेर हिरासत रहना होगा और किसी क़िस्म की आपको तकलीफ़ न होगी, मगर यह रियायत आप पर नहीं है बल्कि आपके शौहर पर है।

मिसेज़ अमीरहसन—मिष्टर माबेल! यह माल हर्गिज़ मसरूक़ा नहीं है मेरे बाप का अता फ़र्माया हुआ है आप निमकहराम हिदायतरसूल की बातें यक़ीन न कीजिये वह झूठा है, मुफ़सिद है, निमकहराम है, नाशुक्रगुज़ार है।

मिष्टर माबेल — मैं यह सब बातें अदालत में सुनूंगा और खुश हूंगा अगर आपका बयान सही निकले और यह माल मसरूक़ा न हो मगर जबतक यह मसले अदालत से तय न हो जाय आप हिरासत के बाहर नहीं रह सकतीं। आप पर एक दूसरा इलज़ाम यह भी है कि मिष्टर जान्स की ज़ौजा मनकूहा होकर उसकी ज़िन्दगी में आपने दूसरी शादी कर ली, यह समन है इस पर भी दस्तख़त कर दीजिये।

मिसेज़ अमीरहसन— मगर आप मेरा मुक़द्दमा नहीं कर सकते मैं यूरोपियन ब्रटिश सबजेक्ट हूं और जूरी के ज़रिये से अपना मुक़द्दमा कराऊंगी मिष्टर माबिल आप मेरे दुश्मनों के भड़काने से मुझपर ज़ुल्म न कीजिये।

मिष्टर माबेल— आप घबरायँ नहीं मगर आप यूरोपियन सबजेक्ट साबित होजायँगी तो मुक़द्दमा शेसन से होगा।

मिसेज़ अमीरहसन लाख रोती चिल्लाती रहीं मगर किसी ने उनकी न सुनी और ज़बर्दस्ती गाड़ी में बिठला कर ज़ेरहिरासत पुलिस डाकबँगले भेज दी गईं और वहां पहरा चौकी का पूरा इन्तज़ाम होगया।

मिसेज़ अमीरहसन ने बँगले से जाते वक़्त अमीरहसन की तरफ़ देखा और बाह पुर्दर्द ज़बान हाल से यह शेर पढ़ा और गाड़ी में सवार हुईं।

शीशा आया नकोई हाथ न साग़र पाया। साक़िया ले तेरी महफ़िल से चले भर पाया॥

जब मेम साहबा रवाना हुईं और माल मसरूक़ा भी दस्तयाब हो चुका मिष्टर माबेल ने अमीरहसन को अलहदा कमरे में बुलाया और उनपर भी समन तामील किया।

अमीरहसन— जनाबमन् यह बिल्कुल अफतरा और इलज़ाम है मेरी बीबी किसी तरह जान्स की मनकूहा औरत नहीं।

मिष्टर मावेल अमीरहसन तुम अबतक लड़कों कीसी बातें कर रहे हो तुमको क्या मालूम कि वह औरत किसकी जोरू है और किसकी नहीं, मैं तुम्हे दोस्ताना सलाह देता हूं कि तुम जान्ससे मसालहत करलो और इस मुकद्दमें में अपनी अच्छीतरह रोबकारी की फ़िक्र करो वर्ना खैर नहीं —

अमीरहसन— मेरे भाई और सुसर ने तहसीलदार की सलाह से यह सब बांधनूं बांधे हैं मगर मुझे ज़रा भी तरद्दुद या ग़म नहीं है जब आपने मेरा इतना एतबार न किया कि मेरी बीबी को रूबकारी तक मेरे यहां रहने देते, जब आपने मेरी इज़्ज़त का इतना भी लिहाज़ न किया कि मेरी बीबी को हवालात भेज दिया तो अब मुझे आप से और क्या उमेद हो सकती है और मैं आपकी नसीहतों को किस नज़र से देख सकता हूं—

मिष्टर मावेल— अमीरहसन मुझे तुम से माज़रत मांगने की कोई ज़रूरत नहीं मगर तुम बेइन्साफ़ मत हो जाओ और ना शुकरी न करो।

मैंने जहांतक मुमकिन था तुम्हारे एजाज़ वकार की तरक्की और तुम्हारी भलाई में कोई दकीका उठा नहीं रक्खा मगर तुम्हारे अफ़आल ने तुम्हें खुद ख़राब किया अब भी अपने को सम्हालो और कब्ल इसके कि मर्ज़ ला इलाज होजाय अपना इलाज करो—

नवाब महम्मद हुसेनखां और सिकन्दर अली को साहब मजिस्ट्रेट ने वहीं से रुख़सत करदिया और खुद मैं सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब पुलिस डांक बँगले को गये वहां ख़ान्सामां को ताकीद करदी कि मिसेज़ अमीरहसन को किसी चीज़ की तकलीफ़ न होने पावे और यह भी हुक्म दे दिया कि अगर शायद मेमसाहबा की तबियत कुछ बीमार हो तो डाक्टर साहब को फ़ौरन् ख़बर देना और उनको बुलालाना यह हुक्म देकर साहब मैजिस्ट्रेट अपने बँगले पर आये और हिदायतरसूल से पार्सी जौहरी और मुसम्मात कुन्दन का पता दर्याफ्त करके चीफ़ मैजिस्ट्रेट कलकत्ता को तार दिया कि गवाहों को बिला तवक्कुफ़ रवाना कर दो, माल द-

ख़याब हो गया है —

यह सब कार्रवाई ख़ाम तक ख़तम हुई और हमारे दोस्त मौलवी हिदायत रसूल साहब भी हवालात भेजे गये।

हिदायतरसूल—हज़ूर यह कैसा ? मैं हवालात में क्यों भेजा जाता हूं ?

मिस्टर मावेल — हम अपने वादे पर क़ायम हैं लेकिन जब तक रोबकारी ख़त्म न हो ले उस वक़्त तक तुमको हवालात में रहना होगा, यह क़ानूनी बात है तुम इससे ज़रा मत डरो तुम्हारा कुछ नुक़सान न होगा।

हिदायतरसूल— मगर ख़ुदावन्द मुझे खाने पीने की बहुत तकलीफ होगी।

मिस्टर मावेल— हम हुक्म दिये देते है तुमको खाने की कुछ तकलीफ़ न होगी, तुम कुछ मत घबराओ हमारी बात और हमारे वादे पर भरोसा रक्खो।

हिदायतरसूल— बहुत बेहतर, मगर हुजूर वह मसल न सादिक कीजियेगा कि मैंने पराई बदशगूनी को अपनी नाक कटवाई।

मिस्टरमावेल— ओ नहीं, हर्गिज़ नहीं।

सैयद महम्मद अकरम और मिस्टर जान्स दोनो अपनी मुतवक़्क़ा कामयाबी पर बहुत मसरूर थे और यही हालत तहसीलदारसाहब की थी।

तहसीलदार साहब पर क्या मुनहसर तमाम शहर में इसका हुल्लड़ मचा हुआ था और करीब २ हर शख़्स के ज़बान पर यही किस्सा था और हर शख़्स को यही मसर्रत थी कि अमीरहसन की मेम साहबा मुब्तलाय मुसीबत हुईं। अमीरहसन से गो लोगों को कैसीही नफ़रत पैदा होगई हो मगर सब के दिलों में अब तक इस्लामी हमदर्दी और क़ौमी खैरख़्वाही का जोश बाक़ी था और सब लोग यही चाहते थे कि यह होनहार नौजवान अपने हर्कत से बाज आये और दुनियां में वह वक़ार और दर्जा हासिल करे जिसका लियाक़त और ख़ान्दान के लेहाज़ से वह मुस्तहक़ है। इस मुक़द्दमे ने हरगिरोह में एक ख़ास दिलचस्पी पैदा कर दी थी यूरोपियन सुसाइटी में भी मिसेज़ अमीरहसन की पर्दाफ़ाशी पर बाज़ों को इस्तजाब और बाज़ों को मसर्रत थी मगर अमीरहसन की हालत पर कोई ऐसा न था जिसे ताअस्सुफ़ न हो।

बाब इकतालीसवाँ।

अमीरहसन को इन वाक़यात की इत्तला।

दूसरे दिन सुबही कचेहरी में हज़ार का तमाशाई जमा थे और तमाम शहर में धूम मची हुई थी कि अमीरहसन कि मेमसाहबा का आज मुक़द्दमा है वक़्त मुअइना पर मिस्टर माबिल कचेहरी आये और मिस्टर जान्स और मिस्टर गर्नर दोनों का हलफ़ी इज़हार तहरीर किया और २१ अकतूबर तारीख़ पेशी मुक़र्रर करके हस्ब ज़ाबता गवाहों की तलबी के लिये समन जारी किये। मिस्टर अमीरहसन को भी कचेहरी में बुलाकर तारीख़ मोक़र्रर से इत्तला दे दी इधर साहब मैजिस्ट्रेट कलकत्ते ने बज़रिये तार इत्तलादी कि गवाहान मुक़द्दमा सर्क़ा जवाहरात रवाना कर दिये गये मिस्टर माबिल ने उस मुक़द्दमे में भी वही तारीख़ मुक़र्रर कर दी।

अमीरहसन पर इन कुल मुक़द्दमात ने एक अजीब असर डाला था वह अब तक हिमाक़त से अपनी बीबी की बेक़सूरी और बेक़बख़्ती के क़ायल थे वह अब तक इन सब मुक़द्दमात को अपने क़सूर और अपने माँ की बदामलह का नतीजा समझ रहे थे और जान्स को वह एक फ़र्ज़ी शौहर यक़ीन करते थे। मिसेज़ अमीरहसन ने अपने शौहर को डाक बँगले से जो मेम साहबा के हवालात का घर था कई चिट्ठियां लिखीं और उसमें निहायत इस्तक़लाल से इस सदमे के बर्दाश्त करने की फ़रमाइश की, एक ख़त में यह भी हिदायत थी कि इलाहाबाद से मिस्टर कालविन को ज़रूर बुलाना चाहिये। अमीरहसन बेचारे इन बातों में महज़ नातजरबाकार थे और अपनी तनहाई पर ख़्याल करके बाज़वक़्त रो देतेथे, न उनका कोई ऐसा दोस्त था जो इस मुसीबत में शरीक हो और न उनके ख़्याल में उनका कोई ख़ैरख़्वाह था। वह इटावा छोड़कर कहीं जान नहीं सकते थे और ख़तके ज़रिये से वकील या बैरिस्टर मुक़र्रर होना दुश्वार था।

वह यह जानते थे कि जान्स ने उनको भी ज़ुमरै मुद्दालेहुम में रक्खा है लेकिन वह इस इल्ज़ाम को इस दर्जा बेहक़ीक़त समझते थे कि उनको ज़रा भी परवाह न थी—तहसीलदार साहब को भी इन मुक़द्दमात की मसर्रत

रही हो लेकिन वह दूर-अन्देश शख्स थे और कचेहरी में मुफ़स्सल किस्सा दर्याफ्त करके कि अमीरहसन का नाम भी मुद्दालेहुम में जान्स ने दर्ज कर दिया है उनको एक तरद्दुद पैदा हुआ कचहरी से आते ही सैय्यद महम्मद अकरम के पास गये।

तहसीलदार— २१, अकतूबर तारीख़ पेशी मुक़र्रर हो गई।

महम्मद अकरम— और कलकत्ते से गवाह तलब हुये ?।

तहसीलदार— जी हां कलकत्ते से तार आगया कि सब गवाह रवाना कर दिये गये वह मैं समझता हूं दो रोज़ में यहां पहुच जायेंगे चुनार से शादी के गवाह भी तलब हुये हैं।

महम्मद अकरम— और गर्नर का इज़हार होगया ? उसने क्या कहा ?

तहसीलदार— उसके इज़हार के मुफ़स्सल हालात मालूम नहीं क्योंकि साहब मैजिस्ट्रेट ने किसी को इजलास में नहीं आने दिया मगर यह तहकीक है कि उसने जान्स के कलाम की ताईद की।

सैय्यद महम्मद अकरम— फिर क्या है वो साहबा अपने आमाल की सज़ा पायेंगी।

तहसीलदार— मगर अमीरहसन का नाम भी ज़रूर मुद्दालेहुम में है।

सैयद महम्मद अकरम— क्या उनके नाम भी सम्मन जारी हुआ है ?।

तहसीलदार—जी हां।

सैयद महम्मद अकरम— मगर उनपर कोई इलज़ाम फ़ौजदारी का आयद नहीं हो सकता।

तहसीलदार — क्यों नहीं ? बीजा मनकूहा से शादी करना भी तो जुर्म है।

महम्मद अकरम— फिर क्या किया जाय यह मेरी हर्गिज मनशा नहीं कि उनकी ख़ुदानख्वास्ता कोई बेआबरूई हो, जो ज़िल्लत उनकी हर्कात की बदौलत हो चुकी वह क्या कम है।

तहसीलदार— अफ़सोस यह है कि अमीरहसन अब भी ख़बरदार नहीं होते, यक़ीनन् वह इस कुल किस्से से लाइल्म थे अगर अपने जवाब में वह लाइल्मी का उज़्र पेश करें तो ज़रूर मक़बूल होगा।

महम्मद अकरम— बेहतर यह है कि आज एक ख़त सैयद नज़ीरहसन को लिख भेजो कि फ़ौरन् चले आवें वह भी वकील हैं और कुल क़ानूनी

बारीकियों से वाकिफ़ हैं अगर खुदान-ख्वास्ता कोई नेक व बद हो तो नज़ीर-हसन हम सब पर इलज़ाम लगावेंगे ।

तहसीलदार— जी हां, मेरा भी यही इरादा था, नज़ीरहसन आ जायँ अपने भाई से मिलकर जैसी सलाह हो फिक्र करें मैं हर तरह उनकी अयानत को मौजूद हूं ।

सैयद मुहम्मद अकरम— अफ़सोस, सैयद काज़िमहुसेन मर्हूम अगर ज़िन्दा होते तो यह नौबत क्यों आती !।

तहसीलदार- क्या कहूं मुझे किस क़दर सदमा और किस क़दर शर्म है बखुदा ग़ैरत से आंख सामने नहीं होती, लोग हँस्ते हैं और उनका हँसना हक़ बजानिब है ।

सैयद मुहम्मद अकरम — मगर जनाब इसमें किसी का क्या अख्तियार है ।

शैर ।

ख़ुदनी ख़ुद वगर्चे खाहद ख़ुद

क्या आप समझते हैं कि गुस्से ने मुझे ऐसा अन्धा कर दिया कि मैं खुदा नख्वास्ता अमीरहसन की खराबी का ख्वाहां हूं ?! हर्गिज़ नहीं, कभी नहीं, उनकी ज़िल्लत ऐन मेरी ज़िल्लत और उनकी रुसवाई में मेरी रुसवाई है मगर क्या करूं—

शैर ।

ऐ फ़लक तुझको सदा रंग बदलते देखा । अपनी किस्मत के नविश्ते को न टलते देखा ॥

यह तक़दीर जो चाहे दिखलाये । देखा और सौ हज़ार बार देखा ।

तहसीलदार - मेरे नज़दीक नज़ीर-हसन के आने पर दो तदबीरें करनी चाहियें औव्वल यह कि जान्स से मसा-लहत की फिक्र की जाय अगर वह अमीरहसन का नाम ख़ारिज कर दे तो कोई डर नहीं, दूसरे अगर वह राज़ी न हो तो कोई लायक़ बैरिष्टर इलाबाद से बुलवाया जाय मैं जानता हूं अमीरहसन के पल्ले टका नहीं और न वह बेचारा अपनी रोबकारी खुद कर सकता है ।

मुहम्मद अकरम- भला इस मेम की तरफ़ से कौन पैरवी करेगा ?।

तहसीलदार— पैरवी क्या होगी मुक़द्दमा साफ़ है मुझे यह हैरत है कि कम्बख़्त क्या समझ कर अब तक अपनी अफ़्आल पर नादम नहीं होती ।

तहसीलदार साहब ने उसी वक्त अ-

ज़ीरहसन को इस मज़्मून का ख़त लिखा।

ख़त।

अज़ीज़ अज़जान वालाशान, बाद अदीय व अफ़ीय, अज़ीज़ सैयद अमीरहसन इफ़्अहुम अल्लाताला अन हवादिसुल-ज़मन के हालात ग़ालबन् आप सुनचुके हों मुख़्तसर यह है कि उनपर और उनकी अहलख़ाना जदीद पर मुक़द्दमात फ़ौजदारी कायम हुए हैं और २१ अक्टूबर तारीख़ पेशी मुकर्रर है अहलख़ाना तो हवालात में हैं और सर्क़ा ज़ेवरात का इलज़ाम भी उनपर आयद है मगर सैयद अमीरहसन पर सिर्फ़ अज़्दवाज मुकर्रर का इल्ज़ाम है. आली जनाब मख़्दूम नियाज़ केशां सैयद महम्मद अकरम ख़ां बहादुर यहां मुकीम हैं और ता इख़्तताम रोबकारी यहीं तशरीफ़ फ़र्मा रहेंगे आप फ़ौरन् तशरीफ़ लाइये और अपने बिरादर मजबूर की अयानत फ़र्माइये ख़ुदा ने आपको इसी लायक किया है कि बिला ख़्याल बेइल्तफ़ाई व कजरवी अज़ीज़ अज़जान अमीरहसन के आप उनकी अयानत व इमदाद को अपने लिये ज़रिये अफ़्तख़ार समझें, मामलात इस क़दर पेचीदा होरहे हैं कि ज़्यादा तहरीर फ़ज़ूल है, जब आप ख़ुद यहां आवेंगे सब कैफ़ियत बाज़:राय अफ़ादत हो जायगी, मुझे इन सब वाक़यात से जो रंज है उसका आलिम व दाना आलिम उलग़ैब है मगर ब़ैर दोआये ख़ैर और मेरा कुछ अख़्तियार नहीं अज़ जनाब सैयद साहब बहादुर बअहदत मज़्मून दोआ क़बूल बाद ज़्यादा दोआ।

राक़िमुद्दुआय महम्मद मुकर्रमहुसेन अफ़ीअनहो।

इसख़त के पेश्तर सैयद नज़ीरहसन को कुछ उड़ती हुई ख़बरें पहुंच चुकी थीं मगर उन्हों ने इसको यक़ीन नहीं किया था क्योंकि तहसीलदार साहब इटावा ने जो अमीरहसन के हालात के बाज़ाप्ता नामानिगार थे कोई ख़बर नहीं दी थी इस ख़त के पातेही नज़ीरहसन के होश व हवास ग़ायब होगये और वह सख़्त घबरा गये, फ़ौरन् शेर ख़ां कोतवाल को बुलाया और उनसे मश्विरा किया इसी तरह उनके जितने दोस्त अहबाब थे सबसे इस मुक़द्दमे में सलाह ली, रफ़्तह २ यह ख़बर घर में पहुँच गई वहां एक आफ़त मची हुई थी, इस ख़बर से और भी क़यामत ब-

रपा कर दी ।

और ।

समन्द नाज़ को एक और ताज़ियाना हुआ ।

अमीरहसन की मां जिस तरह बेचैन हो २ कर रोती थीं नाज़रीन खुद समझ सकते हैं, वाक़ई मोहब्बत मादरी इसी की मुक़्तज़ा थी, अमीरहसन के अहलख़ाने का इज़तराब और भी क़यामत बरपा कर रहा था, वह इस ख़त को सुनतेही अपनी सास के पास गई, मो आंसू किसी तरह थमने का नाम न लेते थे और तिफ़लअयक बेतरह मचले हुये थे —

और ।

थमते थमते थमेंगे आंसू ।
रोना है यह कुछ हँसी नहीं है ॥

मगर फिर भी कलसुमबिसा बेगम ने उसवक़्त अक़्ल से काम लिया ।

बहू— अम्मां अब क्या होगा अभी कम्बख़्त ब्याह का दाग़ अच्छा न हुआ था यह मुसीबत और पड़ी, उनके पास रुपया पैसा भी कुछ न होगा रोबकारी कौन करेगा (रोकर) ऐ मेरे मालिक आबरू तेरे हाथ है ।

सास— बेटी मैं अभी नज़ीरहसन को बुलवाती हूं उनको आकर अपने भाई को बचाना चाहिये ।

बहू— अम्मां आप नाराज़ न हों तो मैं खुद उठाये जाऊं अल्लाजान वहां मौजूद हैं मुझे कोई तकलीफ़ न होगी मेरे पास जो कुछ ज़ेवर असबाब है सब फ़रोख़्त करके उनकी रोबकारी में ख़र्च करूंगी, अब उन्हीं की आबरू पर दाग़ आगया तो यह ज़ेवर असबाब किस दिन काम आवेगा— अम्मां मैं अपना ज़ेवर उनपर तसद्दुक़ कर दूंगी, यह मैं खूब जानती हूं कि उस हरामज़ादी की बदौलत एक पैसा भी उनके पास न होगा ।

सास— तुम अकेली क्यों जाने लगी, मैं भी अपने लाल को देखने चलूंगी, खुदा तुम्हारा ज़ेवर रहतेदुनियां तक सलामत रक्खे और तुम्हें पहनने को रोज़ी करे ज़ेवर बेचने की क्या ज़रूरत है नज़ीरहसन ऐसा नालायक़ नहीं है जो भाई के दुश्मनों को क़ैद होने दे और अपना रुपया न ख़र्च करे ।

सैयद नज़ीरहसन फ़ौरन् बुलाये गये ।

मां— बेटा अमीरहसन के बुढ़ापे में क्या होगा, हाय मेरी ज़िन्दगी में यह दाग़ भी बदा था ! ! ।

नज़ीरहसन — अम्मांजान आप घबरायें नहीं खुदा चाहेगा तो मुकद्दमा खारिज हो जायगा ।

मां— मुझे इटावे ले चलो मैं अपने प्यारे बच्चे को नज़रभर कर देख तो लूं, तुम्हारी भावज कहती है कि तुम्हारे भाई के पास कुछ न होगा वह अपना ज़ेवर देती है कि उसको फरोख्त कर के रोबकारी में खर्च करो ।

नज़ीरहसन— अम्मांजान आप घबरायें नहीं मेरा माल मेरी जान सब अमीरहसन पर निसार है, मगर आप इटावे जाकर क्या करेंगी ।

मां— क्या तुम समझते हो मुझे मेरा लाल भूल गया? क्या तुम्हारी दानिस्त में अमीरहसन की इन बेइसमाईयों ने मेरी मोहब्बत घटा दी? हर्गिज़ नहीं हर्गिज़ नहीं । मेरा वही शाहज़ादा और दिल की खुशी और आंखों का नूर अमीरहसन है जैसा पहले था । ऐ खालिक बेनियाज़ ! उसको सब बलाओं से महफूज़ रख या अली मुश्किलकुशा तुम्हारा कुन्डा चढ़ाऊंगी जो मेरा लाल सब आफतों से महफूज़ रहे, या हज़रत हुसेन अबकी तुम्हारी मजलिस बड़ी धूमधाम से करूंगी जो मेरा शाहज़ादा फतहयाब रहे ।

नज़ीरहसन— अम्मां आप समझती हैं कि अमीरहसन आपही के बेटे हैं मेरे भाई नहीं और मुझे उनसे मोहब्बत ही नहीं? खुदा के लिये आप एक लहज़ा के लिये ऐसा ख्याल न करें अमीरहसन चाहे कैसीही बेपरवाही करें मुझे कुछही समझें मगर मुझे उनसे वही मोहब्बत है जो पहले थी ।

मां— शाबास शाबास लायक भाई ऐसेही होते हैं ।

नज़ीरहसन— मगर मेरी राय हर्गिज़ नहीं कि आप इटावे का सफ़र अख्तियार करें अलावे तकलीफ़ के सख्त बदनामी होगी ।

मां— इसमें कोई बदनामी नहीं अपने बेटे को देखने कौन मां नहीं जाती और तुम्हारी भावज किसी तरह नहीं मानती रो रो कर अपना बुरा हाल कर दिया है, एक तो जब से उस बदनसीब फिरंगिन का हाल सुना बेचारी अधमूई हो रही है इस पर इस मुकद्दमे की खबर ने और तुर्रह कर दिया । ऐसे में जब उसके बाप भी इटावे में मौजूद हैं मैं किसी तरह उसको वहां नहीं रोक सकती ।

नज़ीरहसन — क्या भावज इटावे जाना चाहती हैं? भला इस तरद्दुद और मुसीबत में औरतों का वहां जाना किस दर्जा नामुनासिब और ना ज़ेबा है, मेरी हर्गिज़ राय नहीं, आइन्दा आप मालिक हैं।

मां— बेटा तुम नहीं समझते ऐसे नाजुक वक्त में अगर तुम्हारी भावज न जायगी तो सारी दुनियां क्या कहेगी मियां पर मुसीबत पड़ी बीबी को ख़बर भी नहीं हुई लड़का ख़ुदा नख्वास्ता कैद हुआ मां आगरे में बैठी रही, भैया तुम हम लोगों के तकलीफ़ का ज़रा भी ख्याल न करो और ऐसा इन्तज़ाम करदो कि कल यहां से हम सब सवार हो जायें, कल बहुत मुबारक सायत है जुमेरात और सनीचर सफ़र के लिये बहुत अच्छे दिन होते हैं।

नज़ीरहसन— अम्मांजान जब आप लोग इस दर्जा मुस्तैद हैं तो मैं सिवा तामील हुक्म के और क्या एतराज़ कर सक्ता हूं, बहुत बेहतर मैं इस वक्त स्टेशनमास्टर को ख़ास गाड़ी के इन्तजाम के लिये लिखता हूं।

मां—इटावे में अमीरहसन के मकान में क्या तुम लोगों के ठहरने की जगह न होगी?

नज़ीरहसन अम्मा मुझे इस वक्त आप की बातों पर हंसी आती है अमीरहसन मालूम नहीं किस बँगले में रहते हैं और उसमें पर्दे का इन्तज़ाम है या नहीं। वहां आप क्योंकर ठहर सकती हैं मैं तहसीलदारसाहब को तार देता हूं वह कोई मकान आप के कयाम के लिये तजवीज़ कर देंगे।

नज़ीरहसन ने तहसीलदार साहब को जवाबी तार दिया और अपनी मां और भावज के इरादे से इत्तला दी।

तहसीलदार साहब ने सैयद महम्मदअकरम को तार का मज़मून सुनाया।

महम्मदअकरम— क्या वाहियात इरादा है, ऐसे मामलात में औरतों का कोई काम नहीं बड़ी बेगमसाहबा का या नूरचश्मी कलसुमुन्निसा का यहां आना ख़िलाफ़ मसलहत है और मुझे इश्तबाह यह है कि यहां अमीरहसन के देखने को वह बेचारीयां इतनी दूर से आवेंगीं और यहां इनसे मुलाकात भी हो सकेगी या नहीं मुमकिन है कि अमीरहसन न मिलें और इनकार करदें तो नाहक बात का बतङ्गड़ होगा।

और भी बहुत से वजूह हैं जिनके सबब से औरतों का ऐसे नाजुक वक्त में यहां आना दरकार नहीं औरतों को सिवा इसके कि इजतिराब हो तरद्दुद हो और कुछ तसकीन हासिल नहीं हो सकती, हम लोग जो इधर उधर दौड़ धूप में वक्त सर्फ करें गे वह औरतों की मुहाफिजत और तसकीन दिही में आया होगा ।

तहसीलदार— फिर क्या किया जाय मेरी यह मजाल नहीं कि नजीरहसन को मुमानियत का तार दूं वह समझेंगे कि अपनी तकलीफ बचाने को हीला गरई कर दिया ।

महम्मदअकरम— आप मेरी तर्फ से तार दीजिये और कहिये कि औरतों की यहां कुछ जरूरत नहीं और न यहां कोई बात ऐसे तरद्दुद के लायक है जैसा आगरा में सब लोगों ने तसौवर किया है ।

तहसीलदार— जनाब मेरी राय यह है कि अभी २१ अकतूबर को हफ्ता भर का वकफा है, जनाब अगर खुद आगरा तशरीफ ले जा कर बड़ी बेगम साहबा और साहबजादी को सब हालात से खबरदार फर्मा कर मुतमैयन करदें तो फिर उन लोगों को जरा भी इजतिराब बाकी न रहेगा, और फिर यहां आने का इरादा न करेंगी आप अगर आज शब की रेल में तशरीफ ले जायें तो कल रात की रेल में मैं सैयद नजीरहसनसाहब के वापस आ सकते हैं ।

सैयदमहम्मदअकरम— वाकई में यह राय आप की निहायत मुनासिब है बगैर मेरे गये औरतें न मानेंगी ।

इस सलाह के मुताबिक सैयद महम्मदअकरमसाहब शब की रेल में आगरे गये । अमीरहसन की बीबी और मां को मुकद्दमे के हालात बतलाये, और हरतरह तशफ्फी दी कि घबराने का कोई मौका नहीं है बलकि मसर्रत का मौका है, वह बला जिसने अमीरहसन को इसतरह बर्बाद कर रक्खा था अनकरीब दफा होनेवाली है और मौलवी साहब को उमेद थी कि अमीरहसन सब वाकात के बाद जरूर सँभल जायेंगे और अपनी हर्कात लगोसे बाज आयेंगे । सैयद महम्मदअकरम साहब की पुरअसर तकरीर से यह नतीजा जरूर हुआ कि औरतों का इरादा मुलतवी रहा । दूसरे रोज शब को रेल में सैयद साहब-

बहादुर में सैयद नज़ीरहसन फिर इटा-वा वापस आये, शेरखां कोतवाल भी इटावा चलने को तैयार थे, मगर सैयद नज़ीरहसन ने मना किया और कहा कि अभी ज्यादा हुल्लड़ की जरूरत न हीं है बहालत ज़रूरत फौरन आप को इत्तला दूंगा, शेर खां बहुत मायूसी के साथ स्टेशन से वापस गये।

सैयद नज़ीरहसन ने इटावा पहुंचते ही सब से पहले मिस्टर जान्स से मुला-कात की और मुकद्दमें के मुफस्सिल हालात दर्याफ़्त किये। जान्स के पास जो जो सबूत इस बात के थे, कि मिसे-ज़ अमीरहसन उसकी जौजा मनकूहा है नज़ीरहसन को दिखलाये और इस बात पर उसने अपना सख़्त गुस्सा और रंज ज़ाहिर किया कि अमीरहसन ने उसकी फहमाइश पर ज़रा भी ख्याल न किया और उसको झूठा समझा।

जान्स— मुझे सब से ज्यादा रंज है कि मिस्टर अमीरहसन ने उस हरा-म जादी की बात को हम सब की बातों पर तरजीह दी और हम सब को झूठा समझा। तहसीलदार साहब के रूबरू हमको अमीरहसन साहब ने इन्सल्ट किया।

नज़ीरहसन— अमीरहसन की बा-तों का बुरा मानना महज़ फजूल है, जो शख्स अपनी मां, बीबी, भाई सब को एक कलम छोड़ कर उस औरत के पीछे अपने को बरबाद कर दे मेरे नजदीक उसको मजनूं समझना चाहिये और उसके किसी बात का बुरा नहीं मानना चाहिये।

जान्स— वह आप के भाई हैं आप उनको पागल समझें या मजनूं समझें मगर मैं ऐसा नहीं समझ सकता अप-नी बीबी की बात मानने में उनकी अक्ल खूब दुरस्त है सिर्फ हमारे झूठा करने को वह मजनूं हैं। बहरहाल मिस्टर नज़ीरहसन! मेरा जहां तक अख्तियार था और मुझसे जहां तक बर्दाश्त मुमकिन थी मैंने कोई दकीका उठा नहीं रक्खा, मगर जब मैं सब तरह मजबूर हो गया और मिस्टर अमीरहसन ने किसी तरह मेरी तर्फ तवज्जह न की मुझको अदालत से मदद मांगनी पड़ी, और इसके वास्ते मुझे कोई इलज़ाम नहीं दे सक्ता, मैंने वही किया जो हर भले आदमी और इज़्ज़तदार को करना चाहिये।

नज़ीरहसन वहां से रुख़सत हो कर

और फिर मिलने का वादा कर के अमीरहसनके यहां गये। सैयद महम्मद अकरम से बगैर इनका मुलाकात करने का खटका वह सुन चुके थे इसलिये उन्हों ने भी वही ढंग अख्तियार किया और वे कहे सुने अन्दर कमरे में घुस गये। अमीरहसन दफ्तर के कमरे में आराम चौकी पर उदास बैठे हुये थे, भाई को देखतेही खड़े हो गये, गो जबान से कुछ न बोले मगर उनके चेहरे की ताज़गी ने यह राज अफ़शा कर दिया, कि इस मुसीबत में भाई की मुलाक़ात को बहुत ग़नीमत समझे, और खुश हुये।

बाब बयालीसवां।

भाई भाई की मुलाकात।

अमीरहसन— भाई तुम कब आये और क्यों आये ? —

नज़ीरहसन— मैं आजही सुबह को आया, अम्मां और भावज भी आती थीं मगर बड़ी मुशकिल से फिलहाल अक़ीमत की, यह वाक़ा ऐसाही था कि इसको सुनकर कोई घर में रह सकता था ? अमीरहसन ! तुम्हारा यह सवाल कि मैं क्यों आया महज़ वाहियात है मैं इसलिये आया कि मेरा भाई मुसीबत में मुबतिला है, मैं इसलिये आया कि मेरे भाई को मेरी मदद की ज़रूरत है, मैं इसलिये आया कि मेरे भाई ने अपने को ऐसा कर रक्खा है कि उसको किसी से मुसीबत के वक्त मदद की तवक्का नहीं है।

अमीरहसन— मैं वाकई में किसी इमदाद का मोहताज नहीं हूं मगर तुम्हारे आने से मसर्रत और खुशी हुई मेरा पहिले यह ख्याल था कि यह मुक़द्दमा तुम्हारे वर्गलाने से दायर हुआ, लेकिन इसवक्त तुम्हारे बेतकल्लुफ चले आने ने मेरे वह ख्यालात तबदील कर दिये और अब मुझे तुमपर कुछ शुबहा नहीं है।

नज़ीरहसन— क्या अमीरहसन तुम्हारी अक्ल बिलकुल ज़ायल हो गई और ज़रा भी कूवत ममीज़ा तुम को बाक़ी नहीं रही ? मैं और तुम्हारे ऊपर मुक़द्दमा दायर कराता ? मैं और तुम्हारी तहज़ीब का दरपे होता ? अफसोस तुम ने मुझे आजतक पहचाना नहीं अमर तुम्हारे यह ख्यालात हैं तुमने भाई की क़द्र न जानी सद हैफ ! अगर तुम्हारे यह शुबहायात हैं।

अमीरहसन - मेरे यह ख़्यालात ख़ुदबख़ुद दफ़ा हो गये अब उनका तज़किरा फ़ज़ूल है। मेरी बीबी के बे-शक यही ख़्यालात हैं और चलते चलते उन्होंने मुझ से यही कहा कि तुमन्हीने यह सब आफ़त बरपा कर दी।

नज़ीरहसन— ख़ैर यह आफ़त किसी ने उठाई हो यह बतलाओ कि तुम्हारे ख़्यालात अपनी मेमसाहबा की तरफ़ अब क्या हैं?।

अमीरहसन— मैं उसको बेख़ता और बेक़सूर समझता हूं यह सब मु-क़द्दमात उसपर झूठे और सिर से पैर तक बनाये हुये हैं।

नज़ीरहसन— अगर तुम मिसेज़ अमीरहसन के बयानात को आयते ह-दीस समझे हो तो तुम से गुफ़्तगू क-रना बेकार है अगर तुम्हारे पास कोई और सबूत इसकी ताईद में मौजूद हों तो मुझ से बयान करो मैं ग़ौर से सुनूंगा, तुम इसको बावर करो कि मुझे उस औरत से कोई अदावत नहीं और जब तुम्हारा ताल्लुक़ उसके साथ हो गया तो अब उसकी इज़्ज़त बचाना भी मेरा फ़र्ज़ है, बशर्ते के बच सके—

अमीरहसन— मेरे पास सिवा मि-सेज़ अमीरहसन के ख़ुद बयान के और कोई सबूत नहीं, हां हिदायतरसूल ने मुझ से उसके बयान की ताईद की थी मगर अब मालूम होता है कि वह मु-नहरिफ़ हो गया है।

नज़ीरहसन— मैंने सुना हिदायत-रसूल भी हवालात में हैं, शादी के मुक़द्दमे से ज़्यादा ज़ेवर की चोरी का मुक़दमा संगीन है।

अमीरहसन— मुझे अब याद आता है कि जब मारे की कल ख़रीद ने मिसेज़ हील कलकत्ता गई थीं हिदा-यतरसूल उनके साथ गया था और वहीं से वापस आकर उन्होंने चूड़ियां और अंगूठियां मुझे दिखाई थीं और कहा था कि मेरे बाप ने सालगिरह का तोहफ़ा भेजा, अगर ठीक उन्हीं दिनों कलकत्ते में चोरी हुई और हिदायत-रसूल का बयान सच है तो शायद ज़े-वर के मुक़द्दमे में मेरी बीबी ने मुझ से दरोग़बयानी की हो मगर अबतक यह अम्र पाये तसदीक़ को नहीं पहुँचा, कि दर असल मेरी बीबी के बाप का नाम क्या है और वह कौन है।

नज़ीरहसन— तुम्हारी बीबी के बाप का नाम गर्नर है उस से मैं ख़ुद

मिला हुआ चला आता हूं और एक नहीं दस हज़ार खत उसके कबज़े में हैं जिन्में तुम्हारी बीबी ने उसको डियर पापा लिखा है, यह वही गर्नर है जिसको बर्सफर्ड के नाम से मिसेज़ खील ने तुम्हारे यहां असिस्टेन्ट मनेजर आराघर के वहदा पर नौकर रखवाया था। अमीरहसन अगर तुम ज़रा इन्साफ से काम लो और सब काग़ज़ात को ग़ौर से देखो तो तुमको मालूम हो जायेगा कि इस परीज़ाद औरत ने तुम्हारे साथ किस क़दर फरेब किया, और तुमको कैसी तबाही में डाल दिया, और मैं यह भी तुमसे बतलाता हूं कि उसने लाइलमी की हालत में तुमको नहो फँसाया बल्कि जान बूझकर, तुम्हारी शादी के तीन रोज़ पेशतर जान्स मैं ऐटकिन्स के आगरा गया, और मिसेज़ खील से मिला उसी रोज़ मिसेज़ खील ने अपना कुल असबाब मैं तुम्हारे आराघर की फरोख्त कर डाला और दूसरे रोज़ तुम्हारे पास आकर निकाह कर लिया, अगर सब तारीखों को मिलाओगे तो यकीनन तुमको इन इलज़ामात की सेहत का एतबार होगा—

अमीरहसन— तुमने यह सब काग़ज़ात देखे हैं ?

नज़ीरहसन— मैं अभी २ देखे हुआ चला आता हूं। जान्स के पास इसक़दर काफी शहादतें मौजूद हैं, कि किसी का इनकार पेश नहीं जासकता। चुनार के पादरी से ज़्यादा और क्या मोअजिज़ शहादत हो सकती है। वहां से एक दर्जन मोअजिज़ अंगरेज़ आकर शहादत देंगे कि वह तुम्हारी बीबी को जब से जान्ते हैं जब वह मिस गर्नर थी और उनके रूबरू जान्स से व्याह हुआ पादरी साहब खुद पहचान्ते हैं और बहलफ शहादत देंगे। गर्नर जान्स के मोआफिक शहादत देगा मैं नहीं समझता कि और क्या सबूत दरकार है तुम खुद मजिस्ट्रेट हो और कानून जान्ते हो, तुम समझ सकते हो कि तनहा मिस्टर अमीरहसन का बयान किस वकात से देखा जायगा, मुझको बड़ा अन्देशा तुम्हारा है—

अमीरहसन— अफ़सोस २ नज़ीरहसन तुम मुझसे क्या कह रहे हो और किस को झूठा बतला रहे हो —

नज़ीरहसन— भाई मैं किसी को झूठा नहीं बतलाता और न मुझे ज़रा भी इस मुकद्दमे में मिसेज़खील से मु-

ख़ालफत है मुझे बड़ा डर तुम्हारा है ख़ुदा तुमको बचाये—

अमीरहसन— लेकिन मैं महज़ नावाक़िफ़ था मेरे पास अभी २ हवालात से चिट्ठी आई है, जिसमें इसवक्त तक वह इसरार से मुझको बावर करा रही है, कि यह बनाया हुआ मुकद्दमा है इसके अलावा शादी के दो रोज़ पेशतर जो मुझे आगरे से चिट्ठी लिखी थी, वह मेरे पास मौजूद है। जिस्में साफ़ अलफाज़ में एलिस ने मुझे यक़ीन दिलाया था कि वह एक अमीर कबीर की बेटी है।

नज़ीरहसन— मुझे वह ख़त दिखलाओ तब मैं तुमको उसके मुताबिक जवाबदेही की सलाह दूं।

अमीरहसन ने अपने बक्स में से दो ख़त निकालकर अपने भाई को दिये जो हस्ब ज़ैल थे —

ख़त अज़ आगरा नविश्ता कबल अज़ दो रोज़ शादी बहुत प्यारे अमीर हसन, * * * * * * * (यह इलामत बोसे की है और तहरीरी बोसा जो अंगरेज़ी सुसाईटी में रायज है उसकी यही शकल है) मैं तुमको थोड़ी देर हुई एक तार भेज चुकी हूँ मगर अबतक जवाब न पाने से सख्त इज़तराब व इन्तशार में हूं बार बार सोचती हूं कि तुम्हारे सकूत का क्या सबब है, क्या तुम्हारा इश्क सिर्फ ज़ाहरी और चन्द रोज़ा था ? तुम्हारी मोहब्बत भी उन्हीं लोगों की सो थी जो सिर्फ चन्द मिन्ट दिल बहलाने को नौजवान लेडियों से इज़हार ताश्शुक कर दिया करते हैं ? मुझे तुम्हारी रेयासत और शरीफ़ मिज़ाजी पर बड़ा भरोसा है, और मुझको कामिल यक़ीन है कि तुम ने अबतक जो कुछ कहा और मुझे बावर कराया वह सच बिलकुल सच और अज़सर तापा सच है। प्यारे मुझे इजहार मोहब्बत में ज़रा हिजाब या शर्म नहीं है मैं तुमपर दिल व जान से आशिक हूं और अपनी ज़िन्दगी में सिवाय तुम्हारे किसी पर आशिक नहीं हुई। मेरा व्याह महज़ एक लड़कपन का खेल था न वह बेचारा जानता था कि असली इश्क किसका नाम है और न मैं जानती थी कि उलफत की ज़िम्मांदारियां क्या २ हैं। प्यारे ख़ुदा को दरमियान देती हूं कि तुम्हारे इश्क में मेरी हालत बहुत अबतर हो रही है —

हमपर तुम्हारे इश्क में क्या क्या

न हो गया। जो कुछ हुआ कि शहर में अफ़साना हो गया॥ दिलको दर्दा व ज़ुल्फ़ निगहने बना लिया। खबतो हुआ सिडी हुआ दीवाना हो गया॥ पहले हमारा यह दिल हैरान था आइना। जिस दिन से चाक चाक हुआ शाना हो गया॥

प्यारे तुम वाकिफ़ हो कि मेरा मोअज़्ज़िज़ बाप इसवक़्त इङ्गलैन्ड में इस दर्जे और मर्तबे पर है कि उसकी मुलाकात और उसकी जान पहचान को बड़े २ उमरा और मेम्बरान् पारलियामेन्ट ज़रिये नाज़ समझते हैं मैं तुम्हारे खान्दानी एज़ाज़ से वाकिफ़ हूं। इसलिये मेरी तुम्हारी शादी किसी तरह सोशल एतबार से भी तुम्हारे लिये बदनामी या हँसी का बाइस नहीं हो सकती, कोई जलसा और कोई पार्टी अफ़िशल या नानअफ़िशल हिन्दुस्तान में ऐसी नहीं है जिसमें अपने बाप के सबब से मैं शिर्कत की मुस्तहक न हूं। अगर तुम मेरे साथ शादी करोगे तो इससे वह खराबी हरगिज़ नहीं हो सकती जो अकसर हिन्दुस्तानी शुर्फ़ा को छोटे दर्जे के घरों में ब्याह करने से पड़ती है। ऐ प्यारे खुदाकरे तुम्हारी मञ्जूरी का प्यारा २ पैग़ाम जल्द आता हो और मेरे दिल में जो तरह २ के वस्वसा पैदा हो रहे हैं वह ग़लत साबित हों। मैं तुम्हारी आशिक हूं और तुम्हारीही आशिक रहूंगी तुम चाहे उसके बदले में मुझ से मोहब्बत करो और ख्वाह उसकी एवज़ मुझे रँज दो और मुझ से नफ़रत करो।

जफ़ा की इन बुतों ने या वफ़ा की। दिया दिल अब तो जो मर्ज़ी खुदा की॥ शबे अन्दोह गम का पूछना क्या। बना की जो मेरे दम पर बना की॥ तुम इतने हो कि दोगे मुझको ताज़ीर। नहीं की तो भी हां मैंने खता की॥ इलाही वस्ल की भी रात दे टाल। मुझे कोई घड़ी रोज़े जज़ा की॥ फिर उस बुत पर फ़िदा हैं हज़रते दाग़। कसम खाई थी काबे में खुदा की॥

ऐ प्यारे खुदा के लिये ना उमेद न करना और क्या लिखूं वक़्त तंग काम बहुत ज्यादा है, बहुत २ बोसों के साथ मैं हूं तुम्हारी दिल से चाहनेवाली।

एलिस

दूसरा खत हवालात से।

मेरे प्यारे शौहर, दफ़तन जो बला

मुझपर नाज़िल हुई है वह ऐसी नहीं है जिसको मैं बआसानी बर्दाश्त कर सकूं और जो आफत बेशान् व गुमान मुझपर आई है उसने यक़ीनन तुम्हारा दिलभी पारा २ कर दिया होगा हाय।

फलक तूने इतना हँसाया न था।
कि जिसकी एवज़ यों रुलाने लगा॥

मैं तुम्हारे सुसर की आमदही से डर गई थी, यह नहीं जानती थी कि उससे बदरजहा बड़ी २ मुसीबतें मेरे लिये रक्खी हुई हैं। हाय! मैं तुम्हारे बूढ़े सुसर को हैबत और अपने मसनूई शौहर के ख़ौफ़ से पनपने न पाई थी कि सरकाय ज़ेवरात का मज़मून मेरे दिल दुखाने को पैदा होगया।

सांस देखें तने बिस्मिल् में जो आते जाते। और चरका दिया जल्लाद ने जाते जाते॥

बहरहाल तुम मुसल्मान हो और मैं सच्ची क्रिश्चियन। हमारे और तुम्हारे पैग़म्बरों ने अपनी पाक किताबों में हमेशा सिखलाया है कि सच्चे और ईमानदार इन्सानोंको मुसीबतको ख़ुशी और इस्तकलाल से बर्दाश्त करना चाहिये और मैं उसपर अमल करने को तैयार हूं तुम्हारा हाल नहीं जानती और न तुम्हारे हालात से मुझको वाक़फ़ियत है।

तुम क़ुदरती तौर पर मुतहैयर होगी कि यह सब क्या तमाशा है और दफ्तन कैसी यह मुसीबत आगई। प्यारे! तुम जानते हो कि दुनियां में तुमसे ज़्यादा मुझे कोई प्यारा नहीं, मेरी उमेदों के आस्मान के तुम्हीं आफ़ताब हो, मेरी कुल मसर्रतें तुम्हारेही दम से वाबिस्ता हैं इसलिये मैं तुमसे झूठ न बोलूंगी और न तुमसे कोई बात छिपाऊंगी, गो मैं कैसेही कमीनेइल्ज़ामात में मुब्तिला हो जाऊं मगर मुझको यक़ीन है कि तुम्हारे दिल में अब तक मेरा एतबार बहैसियत एक लेडी के बाक़ी होगा इसी भरोसे पर मैं तुमसे इल्तिजा करती हूं कि मेरी तरफ से बदगुमां न हो जाना।

मैं जहां तक ग़ौर कर सकती हूं इस वक्त मुझपर चार इल्ज़ाम लगाये गये हैं।

(१) मैं गर्नर नामी ईसाई की जिसका घर चुनार में है बेटी हूं सर जान गार्स्टन सर्जेंट की लड़की नहीं।

(२) मेरी शादी जान्स से बमुकाम चुनार में हुई और वह ज़िन्दः मौजूद है

और उसने मुझको तिलाक नहीं दिया मैंने उसकी ज़िन्दगी में बग़ैर उसकी इजाज़त के तुमसे शादी की।

(३) मैं स्नील की बेवा नहीं हूं बल्कि जान्स की जोरू हूं और मैंने ग़लत अपने को मशहूर किया।

(४) किसी कलकत्ते के जौहरी का मसरूका ज़ेवर मैंने जान कर अपने कब्ज़े में रक्खा।

इल्ज़ाम नम्बर (१) सरासर ग़लत है, मेरा पिदर नामदार अब तक लन्दन में मौजूद है। मैं हर्गिज़ भीख मांगनेवाले गर्नर की बेटी नहीं हूं, मैंने मिस्टर बर्सफर्ड को तुम्हारे यहां नौकर रक्खा था लेकिन मैं उस वक्त तक यह भी नहीं जानती थी कि उसका नाम गर्नर है, बल्कि तुमको याद होगा कि मैंने उन्हीं दिनों उसका नाम बर्सफर्ड तुमको बतलाया और खुद उसने भी अपना नाम यही बतलाया, अब इसका बयान दुश्मनों के वर्ग़लाने से है और क़ाबिल एतबार नहीं, उसके छपे हुए कार्ड बेर्सफ़र्ड के नाम के अब तक मेरे पास मौजूद हैं!

इल्ज़ाम नम्बर (२) जिस क़दर सख्त है उसी क़दर बे बुनियाद है, मैंने जान्स की सूरत कल से पेश्तर कभी नहीं देखी और न उससे वाकिफ़ हूं कि कौन है। मेरी शादी इस कम्बख्त आदमी के साथ कभी नहीं हुई, मेरा प्यारा शौहर स्नील कब्र में आराम से सो रहा है और मेरे पास इसकी शहादत मौजूद है, जब वह मरा और जिस तारीख़ को पायोनियर में उसके इन्तक़ाल की ख़बर आया हुई मैं मिसेज़ स्नील थी और बेवा थी किसी तरह मिसेज़ जान्स नहीं थी। जब तुमसे मिली और तुमसे शादी की इसमें न तुम्हारा कुछ कसूर है और न मेरा। जान्स का बयान बिल्कुल झूठा है और जो गवाह वह चुनार से बुलाना चाहता है वह भी सब झूठे हैं और गर्नर के सबब से गवाही देने आते हैं।

नम्बर (३) का काफ़ी जवाब मैं इल्ज़ाम नम्बर (२) में दे चुकी।

नम्बर (४) इसका हाल यह है कि यह ज़ेवरात मेरे प्यारे बाप ने सालगिरह के तोहफ़े के तौर पर मुझे भेजे थे और तुमको याद होगा कि कलकत्ते से वापस आकर मैंने यह क़िस्सा तुमसे बयान कर दिया था। हिदायतरसूल का बयान अब बवजह अदावत के है

क्योंकि मैंने उसको तुम्हारी सोहबत से अलहदा कर दिया और यह अम्र उसको अज़हद शाक हुआ। किसी मुंसिफ़ मिज़ाज आदमी को ऐसे बयान पर एतबार नहीं हो सकता, आप अपने दिल में कहती होंगी कि यह सब आफ़तें क्यों उठ खड़ी हुईं। प्यारे तुम्हारी शादी जो मेरे साथ हुई इसका सब आदमियों को रञ्ज हुआ, सबसे ज़्यादा तुम्हारे भाई नज़ीरहसन और तुम्हारे ख़ुसर को। उन लोगों के अग़वा से तहसीलदार इटावा भी अदावत पर आमादा होगया, उधर ऐटकिन्स जिसको मैंने नौकरी से बर्ख़ास्त किया उसको भी मुझसे रञ्ज था, उसने जान्स को खड़ा किया और प्यालके पांव बताये। इधर मैंने मिस्टर बर्सफ़र्ड को जो अब गर्नर के नाम से मशहूर हुआ है निकाला उसको भी अदावत पैदा हुई, इन लोगों से मेरे बर्ख़ास्तकर्दह मुलाज़िम और हिदायतरसूल से मुलाकात हुई सबने मिलकर यह फ़साद उठाये। मेरे प्यारे ! यह सब मुसीबतें मेरी ताकत से ज़्यादा हैं और जहां तक मैं समझती हूं तुम्हारी कूवत से भी भारी हैं, न तुम्हारे पास इतने रुपये हैं कि तुम मेरी पैरवी के लिये कोई मोअज़्ज़िज़ बैरिस्टर बुला सको और न तुम्हारा ऐसा दबाव है कि गवाह लोग ज़रर रिसानी से बाज़ रहें, इसलिये मैं अपनी रिहाई से मायूस हूं। हाय ! तुम्हारा हँसता हुआ चेहरा, तुम्हारा प्यारा २ क़द, तुम्हारी कटीली आंखें, तुम्हारे चमकते हुए दांत अब मुझे देखने को न मिलेंगे, और अगर मैं कैद हो जाऊंगी तो रिहाई के बाद शायद तुम मुझे अपने यहां न घुसने दोगे। क्यों प्यारे ! तुम इस दर्जा बेमुरौवत हो जाओगे, मैं इसको सोच कर आर २ रोती हूं और तुम्हारे दीदार को तरसती हूं, देखूं ख़ुदा अब फिर मुझे तुमसे मिलाता है या नहीं, मेरे कपड़ों का बकस अपने पास रहने दो लेकिन लोहे का संदूक जिसमें अपने ज़ेवर रखती थी मेरे पास इसी आदमी के हाथ भेज दो ताकि मैं जो ज़ेवर मेरे जिस्म पर हैं वह भी निकाल कर बकस में रख दूं।

प्यारे ! जहां तक तुम्हारा बस चले मुझे बचाओ और मेरी रिहाई की कोशिश करो मैं एक मर्तबा तुम्हें फिर यक़ीन दिलाती हूं कि मैं बेकसूर और बेगुनाह हूं उसका गवाह ख़ुदा और

उसका प्यारा बेटा ईसामसीह है और क्या लिखूं।

तुम्हारी मुबतलायमुसीबत बीबी

एलिस अमीरहसन।

अमीरहसन— तुमने ये दोनों खत पढ़े वह अब तक मुझे यक़ीन दिला रही है कि सब मुकद्दमें झूठे और सब इलज़ामात बे बुनियाद हैं।

नज़ीरहसन— मैं इतनी मज़बूत शहादत के सामने महज़ एक मिसेज़ ह्वील का बयान सच्चा नहीं समझ सकता लेकिन खुदा का शुक्र है कि यह खतूत तुम्हारे बचाने को बहुत काफ़ी हैं। अमीरहसन इस मुकद्दमे में सिर्फ़ तुम्हारी आबरू खतरे में नहीं है बलकि तुम्हारे तमाम खान्दान की आबरू पर बनी हुई है। तुम खुदा के लिये इस दग़ाबाज़ औरत के पीछे अपने को आफ़त में न फंसाओ तुम ग़ौर करो इस औरत ने तुम्हारे साथ क्या २ सलूक किये तुम्हारा कुल रुपया एक फ़र्ज़ी आराघर क़ायम करके बर्बाद किया और चलते २ तुम्हारे साथ शादी के बारे में सख्त दग़ाबाज़ी की।

अमीरहसन — आराघर में उसकी कोई खता न थी इत्तफ़ाक़ और तकदीर की बात थी। बहरहाल मैं अपने नुकसान के लेहाज़ से नाराज़ नहीं हो सकता जिसने अपनी ज़िन्दगी भर की खुशी और रंज मुझसे वाबस्ता कर दिया।

नज़ीरहसन— अभी नहीं ठहरो २ तुमको इन लेडी साहबा के हालात ज़ाहिर होंगे, तुम तमाम दुनियां को झूठा नहीं समझ सकते इस रोबकार में तुमको वह किस्से ज़ाहिर होंगे जो शायद तुमको उमर भर न सुनने को मिलते। यह मुसीबत गो तुम पर बहुत नागहां और बे शान व गुमान आई है मगर इस मौक़े पर मुझे किसी क़द्र मसर्रत है कि शायद इसके नतीजे अच्छे हों और तुमको तुम्हारी ग़लतियों से आगाह कर दें।

अमीरहसन— मुझे वाक़ई ज़माने का बहुत बड़ा तजरुबा हो गया देखो इस मुसीबत में मेरा कोई शरीक नहीं। मिस्टर माबेल जिनसे मुझे बड़ी २ उम्मेदें थीं वह भी निगाह फेर बैठे जैसे--

इन तिलों तेलही न था गोया।

हमसे कुछ मेलही न था गोया॥

बहरहाल मैं अभी इसका फ़ैसला नहीं कर सकता कि आइन्दा मेरी ज़िन्दगी

क्या होगी। मुझपर इस दर्जा गैरत मालूम होती है कि बाहर निकलने को या किसी को मुंह दिखाने को जी नही चाहता खुदा से मौत मांगता हूं वह भी नहीं आती। मैं हर्चन्द चाहता हूं कि अपने दिली रंज को ज़ाहिर न करूं और सब्र व इस्तकलाल से बर्दाश्त करूं मगर ज़ब्त की भी कुछ हद है, अफसोस२ नज़ीरहसन, मुझे इस वक्त तक एतबार नही कि एलिस ने मुझे धोखा दिया और शुरू से आखिर तक झूठ बोली लेकिन खुदबखुद मुझे अब उसकी रास्तबयानी में सकूक पड़ गये हैं खुदा तूही मदद कर और मुझे इस सदमें के बर्दाश्त करने की ताकत दे।

नज़ीरहसन— अमीरहसन अब इस वक्त इन सब बातों से कोई नतीजा नहीं, तुम मेरे नाम वकालतनामा लिख दो और मैं आज शबको इलाहाबाद जाऊंगा और वहां से कोई बेरिस्टर तुम्हारी रोबकारी के लिये लाउंगा। तुम्हारा जवाब यही होना चाहिये कि तुमने लाइल्मी में शादी की और बस, मैं तुम्हारी लेडी साहबा के लिये भी बेरिस्टर लाउंगा। गो मुझे कोई उमेद उनकी बरैयत की नहीं है मगर मैं यह नहीं चाहता की खराब से खराब मुजरिम को बगैर काफी मौका सफाई का मिले सज़ा हो जाय।

अमीरहसन— तुम बड़े शरीफ़ हो, बड़े रहीम, हो तुम्हारी इनायत को मैं कभी न फरामोश करूंगा। देखो मैं लाचार हूं और वह भी लाचार है ऐसी हालत में उसकी मदद करना किसी कदर मेरी तकवियत का बाइस होगा।

अलगर्ज़ सैयद नज़ीरहसन अपने भाई से सलाह व मश्विरा करके तहसीलदार साहब के यहां वापस आये और सैयद महम्मद अकरम से कुल हालात की इत्तला दी। इस खबर ने कि अमीरहसन की बातों से किसी क़दर इसला की उमेदे हैं सैयद साहब और तहसीलदार बेहद खुश हुये।

अमीरहसन ने दोनों चिट्ठीयों का तर्जुमा सैयद साहब को सुनाया।

तहसीलदार— इन खुतूत के सुनने से मुझे तस्कीन हुई बेशक अमीरहसन ने लाइल्मी में यह हरकत की। यह मैं पहले से जानता था कि इस मुकद्दमे में उन पर कोई खतरा नहीं है—

नज़ीरहसन— कुछही हो, लेकिन एक बेरिस्टर का आना लाज़िम है, मैं

ने सुना जान्स मिस्टर फ्रीमैन को मुकर्रर कर चुका इलाहाबाद में फौजदारी काम उससे अच्छा कोई नहीं जानता—

सैयद साहब— मगर मिस्टर जैकसन बहुत नामी शख्स हैं उनसे अच्छा फ्रीमैन भी नहीं है। कालविन के बाद इलाहाबाद में जैकसन ही का रुतबा है—

नज़ीरहसन— अमीरहसन की यह ख्वाहिश मालूम होती है कि मिस्टर कालविन बुलाये जायें, लेकिन वह आज कल बनारस बलवा के मुकद्दमात में मसरूफ हैं और किसी तरह नहीं आ सक्ते। मैं ख़ुद इलाहाबाद जाऊँगा और जैकसन को अमीरहसन के लिये और एक बैरिस्टर उस मेम के लिये मुकर्रर कर लाऊँगा।

सैयद साहब— मेम के लिये! लाहौलबिला, तुम भी क्या आदमी हो मुझसे मज़ाक करते हो—

नज़ीरहसन— नहीं मैं हर्गिज़ खिलाफ अर्ज़ नहीं करता यह मेरा फर्ज़ है कि इस मुसीबत में अपने भाई का हर तरह शरीक हूं और वह काम करूं जो उनकी मसर्रत का बाइस हो मैं खूब जानता हूं कि वह औरत सज़ा से नहीं बच सकती लेकिन यह कहने की बात रह जायगी कि उसकी तरफ से कोई अलग बैरिस्टर नहीं था, और यह बात हमेशा अमीरहसन को रंज देगी बैरिस्टर के आजाने से उनकी हसरत मिट जायगी, होना तो वही है जो किस्मत में है—

तहसीलदार— अज़ीज़ अज़जान तुम्हारी सादत का मैं दिल व जान से कायल हो गया ख़ुदा तुम्हें सलामत बाकरामत रक्खे वाक़ई बहुत दूर की बात तुम ने सोची, बेशक तुम्हारी राय बहुत दुरुस्त है।

चुनाचे सैयद नज़ीरहसन दूसरे रोज़ इलाहाबाद जाने को थे कि आनेरेबुल मिस्टर जैकसन को अमीरहसन के लिये और मिस्टर कूक को मेम साहबा के लिये बैरिस्टर मुकर्रर कर लायें—

बाब तैंतालीसवां।

मियां बीबी में सुलह।

मिसेज़ हील अलमारूफ़ मिसेज़ अमीरहसन डांक बँगले में ज़ेर हिरासत पुलिस हैं वह अपनी हालत मौजूदा पर गो रंजीदा न रही हो मगर मायूस ज़रूर थी। जान्स के मामले को

वह बिल्कुल बे हक़ीक़त जानती थी क्योंकि दुनियां में एक सूरत और एक वज़अ के हज़ारों आदमी हो सकते हैं महज़ तशबीह सूरत पर कोई पकड़ा नहीं जा सकता और अलावा इसके अगर यह साबित भी हो जाय कि वह वही औरत है जो जान्स को ब्याही गई थी तब भी क्या जान्स तीन बरस ग़ायब रहा न उसे ख़त भेजा न ख़बर ली। ब्रह्मा में लड़ाई दरपेशही थी डाकू अपनी ग़ारतगरी में मसरूफ़ही थे। मिसेज़ हील ने अगर बावर कर लिया कि जान्स ने उलनार वालसफर हो गया तो क्या गुनाह किया? और फिर जान्स ऐसे मुफ़लिस का वजूदही क्या बक़ौल शख़्से—'जैसे कंता घर रहे वैसे रहे बिदेस' मगर ज़ेवर के मुकद्दमे से वह सख्त हिरासा थी। हिदायतरसूल के इकबाल जुर्म और ज़ेवरात का उस के कब्ज़े से बरआमद होना उसकी राय में भी सज़ा के लिये काफ़ी था, मगर वह बार २ अपने दिल से सवाल करती थी कि इस जुर्म में उसको क्या सज़ा होगी। दायमुलहब्स हो नहीं सकता, फांसी हो नहीं सकती, यही न दो चार बरस की सज़ा हो जायगी दो चार बरस में वह बुड्ढी नहीं हो सकती, मर नहीं सकती, फिर क्यों अपनी दौलत और अपनी जायदाद को जो अमीरहसन की लाइल्मी में उसके कब्ज़े में है ख़राब करे। वकील बैरिष्टरों के चक्कर में वह किस लिये अपना रुपया बर्बाद करे, एक उससे ग़लती और हुई, उसने यूरोपियन ब्रटिश सबजेक्ट होने का नाहक़ दावा किया, हाईकोर्ट में रूबकारी होने से अलावा तसनीय औक़ात की ज़्यादा सज़ा का भी अन्देशा है इसलिये अब वह इटावे में अपनी क़िस्मत का फ़ैसला मिस्टर माविल के हाथ में दे देगी वह यक़ीनी रियायत करेंगे और न रियायत करें तो वह अपने अख़्तियार से ज़्यादा सज़ा भी नहीं दे सकते और दो बरस की कैद उसके ख़्याल में कोई बहुत ज्याद: न थी, मगर उसको अपने ज़ेवर और जायदाद की फ़िक्र अज़हद थी, अमीरहसन उसकी राय में अच्छे मोहाफ़िज़ नहीं हो सकते उसकी राय में वह फ़ुज़ूलख़र्च और बेपरवाह थे जिस शख़्स को अपने रुपये की पर्वाह न हुई वह दूसरे की दौलत की क्या मुहाफ़िज़त करेगा। अमीरहसनसे उसकी

यह भी ख़दशा था कि इन सब हालात के अफ़शा के बाद वह उसको ज़रूर छोड़ देंगी और बात तक न करेंगी, अमीरहसन का डांक बँगला में उससे मिलने न जाने और किसी ख़त के जवाब न लिखने से मिसेज़ स्कील को अपने जदीद शौहर की वफ़ादारी में शकूक पैदा हो चले थे, उन्हीं ख़्यालात से उसने अपना आहनी संदूक जिसमें ज़ेवरात और नोट थे मँगवा भेजा और अपनी ख़ास हिफ़ाज़त में लिया। डांक बँगले में वह और सब तरह आराम से थी, अमीरहसन ने ख़ान्सामां को भी हिदायत कर दी थी कि खाने पीने की कोई तकलीफ़ मेम साहबा को न हो और साहब मैजिस्ट्रेट ज़िला ने भी इस दर्ख़ास्त को क़बूल कर लिया था उसे जो कुछ तकलीफ़ थी वह तनहाई और इन्तज़ार की थी इसका कोई दफ़ीय उसके या उसके जदीद शौहर के हाथ में न था। जो गार्ड इसकी हिफ़ाज़त के लिये पुलिस की तरफ़ से डांकबँगले में था उसमें एक हेड कांस्टिबिल और चार कांस्टिबिल थे, ख़ुसरान सिंह हेड कांस्टिबिल एक बुड्ढा पंजाबी था और रामनरायण, ईश्वरीदत्त, अलीमउल्ला और तीजू चार कांस्टिबिल थे। सिवाय अलीमउल्ला के और सब कांस्टिबिल सिनरसीदा और तजरुबेकार थे। अलीमउल्ला अलबत्ता अट्ठारह उन्नीस बरस की उमर का नौजवान था और माशाअल्ला निहायत आशिक़, मिज़ाज और ख़ूबसूरत था।

मिसेज़ स्कील ने हिरासत में आतेही अपने मोहाफ़िज़ों का जायज़ा लिया और हेड कांस्टिबिल को बुला कर दस रुपये दिये।

हेड कांस्टिबिल ने मेम से रुपये लेने में पसोपेश किया।

मेम—वेल जमादार! तुम इसको क़बूल करो जब तुम लोग हमारी हिफ़ाज़त को तैनात हो तो कोई वजह नहीं कि तुम अपने पास से खाओ और तकलीफ़ उठाओ। हम अगर छूट जायगा तो तुम सबको बहुत ख़ुश करेगा जबतक हवालात में है, दस रुपया रोज़ हम तुमको देगा दो दो रुपया फ़ी शख़्स तुम बांट लिया करना। मेमसाहब की इस फ़ैयाज़ी ने अहलकारान पुलिस को अज़हद मसरूर किया और वह लोग हर तरह मेम साहबा की रिहाई के दस्तबदुआ और उसकी मर्ज़ी के ताबे

होगये। जिस रोज़ मेमसाहब दाखिल हवालात हुईं उसके दूसरे रोज़ जान्स मय गर्नर के डाकबँगले गय और मेम साहबा से मिलना चाहा। पुलिसवालों ने इजाज़त देने से इन्कार किया; बुड्ढे ख़ान्सामा ने दर्मियान में पड़कर जान्स से दस रुपये गार्ड को दिलाये और मुलाकात हुई।

गर्नर—एलिस तुम्हारी इस हालत पर मुझको सख्त अफ़सोस है।

मेम—मुझको ज़रा भी अफ़सोस नहीं; जब आप सब लोग मेरी बर्बादी पर आमादा हो जायँ तो फिर मुझे क्या अफ़सोस हो सकता है।

गर्नर—मगर इब्तदा तुम्हारी तरफ से हुई। तुमने एक मुसल्मान से शादी करके कुल बात और कौम को बदनाम किया। तुमने जान्स की किस क़दर दिलशिकनी की मुझको ज़ईफी में छोड़ दिया, फिर क्या किया जाता।

मेम—मैंने आपको हर्गिज़ नहीं छोड़ा था आपके दो चार महीने खर्च के लिये रुपया दे दिया था, कम से कम दो महीने आपको इन्तज़ार करना था। बहरहाल जो होना था हो गया, देखिये किस्मत में क्या बदा है।

गर्नर—जान्स को भी इस मुक़द्दमे का निहायत रंज है।

मेम—अगर उन्हें रंज होता तो मुझे इस मुसीबत में न डालते, उनकी मुहब्बत मेरे हक़ में ज़हर होगई।

जान्स—मैं अब भी तुम्हारी कुल ख़तायें माफ़ करने को तैयार हूं अगर तुम एक नज़र मेरी तरफ देख लो।

अदा से देख लो जाता रहे गिला दिल का। बस एक निगाह प ठहरा है फैसला दिल का॥

मेम—हां अगर तुम राज़ीनामा लगा दो और मुझे इस मुक़द्दमे से बरीयत हो जाय तो मैं ख़ुशी से अफ़्व तकसीर कराने को मुस्तैद हूं।

गर्नर—मगर जान्स के हाथ अब कुछ नहीं है।

मेम—क्यों क्या राज़ीनामा करने का अख्तियार मुद्दई को नहीं होता?।

गर्नर—उस मुक़द्दमे में जो जान्स ने दायर किया है राज़ीनामा हो जायगा, मगर उस बदनसीब ज़ेवरात के मुक़द्दमे में कैसे राज़ीनामा होगा? उसमें सर्कार मुद्दई है और वही बहुत सख्त इल्ज़ाम है।

मेम—फिर मेरे पास अब तुम लोग

क्यों आये हो अब किसी से बात करना नहीं चाहती, खुदा के लिये आप जाइये और मुझे रंज न दीजिये। पापा दुनियां चाहे कुछ कहे मगर तुम कलमा खैर से दरगुज़र न करना।

गर्नर—मैं मिस्टर माबेल से कह चुका कि तुम मेरी बेटी हो।

मेम—तुम कह सकते हो कि हमारी बेटी का नाम भी एलिस था और वह मेरे हमशकल थी लेकिन तुम अज़रूये कसम यह नहीं कह सकते कि वाक़ई मैं तुम्हारी बेटी हूं या नहीं।

जान्स—अगर तुम इस मुक़द्दमे के बाद मुझसे मिलने पर रज़ामन्द हो तो मैं अपने मुक़द्दमे में बाज़दावा कर दूं। इन सब बखेड़ों की नौबतही न आये रहा ज़ेवरवाला मुक़द्दमा उसको खुदा के हाथों में छोड़ दो वह बड़ाही रहीम है। ऐ प्यारी! मैंने जो कुछ गुस्सा और रंज और जनू में किया मैं तेरा वही आशिकज़ार शौहर हूं जो था और चाहे तू कैसीही संगदिल होजाय मैं वही हूं और वही रहूंगा और मरते दम तक रहूंगा! ऐ ज़ालिम रहम कर और अपनी जफ़ाओं से बाज़ आ।

मेम—अच्छा अगर तुम बाज़दावा दे दो और मेरी खताओं को माफ़ कर दो तो मैं तुम्हारे साथ रहने को तैयार हूं।

जान्स—हां शुकर खुदा, शुकर खुदा, (बोसा लेकर) प्यारी! अब तुमको मुझसे कोई जुदा नहीं कर सकता।

मेम—और जहां तक तुम्हारा बस चले कोशिश करो कि उस ज़ेवर के फ़साद से भी मैं रिहाई पाऊं, देखो मैं अब तुमसे इकरार करती हूं कि मैं तुम्हारी हूं और तुम्हारी ही हो कर रहूंगी। अमीरहसन से न अब मुझे मिलने की तमन्ना है और न यह उमेद है कि इन सब फ़सादात के बाद वह फिर मुझसे मिलने को राज़ी हों। वह एक मग़रूर खरदिमाग़ और मुफ़लिस शख्स है। ऐ जान्स! मुझको उस से अब सख्त नफ़रत होगई है और तुम्हारी पुरानी मुहब्बत ज़िन्दा होगई, मालूम नहीं तुम्हारे बोसे में क्या जादू और क्या असर था। हाय! मेरा पिछला इश्क जो तुम्हारे साथ था फिर जी उठा। तुमने उसी रोज़ बोसा क्यों नहीं लिया जो इन सब फ़सादात की नौबतही न आती, बेशक अब मैं तुम्हें

बखूबी पहिचानती हूं तुम मेरे प्यारे शौहर हो। बोसे से बेहतर कोई तरीक़ा सिनाख्त का हो नहीं सकता। प्यारे! तुमने पहलेही बोसा क्यों नहीं लिया?

जान्स—मगर पहले तुमने बात तक तो करने नहीं दी, बोसा कैसे लेता।

मेम—खैर गुज़श्तारा सलवात।

जान्स और गर्नर दोनों निहायत खुश २ लौटे और हमारे दोस्त मिस्टर जान्स अब सख्त मुतास्सफ थे कि ज़ेवर वाला मुक़द्दमा क्यों उठाया गया, बहर हाल जो तलाफ़ी उसके हाथ में थी वह करने को तैयार था।

गर्नर—मेरी एक राय और भी है इस मामले में अगर चाहो तो कुछ दस्तयाब भी हो सकता है।

जान्स—कैसे?।

गर्नर—हमने अपने मुक़द्दमे में अमीरहसन को भी मुद्दालह किया है उनके ससुर और भाई सब आये हुए हैं और सख्त परेशान हैं अगर उनसे चल कर राज़ीनामे का पैग़ाम दें तो यक़ीनी हज़ार पांच सौ रुपये दस्तयाब हो जायँगे।

जान्स—मगर उनके ससुर और भाई दोनों अच्छे आदमी हैं मुझसे मुलाक़ात हो चुकी है अब उनसे वाहियात मामले में रुपया लेना बड़ी शरम की बात है।

गर्नर—और मुद्दालेह बनाना बड़े फ़ख्र की बात थी। जान्स लड़कपन न करो, इन मूज़ियों से जिस तरह हो सके रुपया लेना चाहिये मेरे साथ चलो अभी इसका तसफ़िया होता है।

जान्स इस वक्त बहुत देर होगई है सुबह चलेंगे।

गर्नर—कुछ देर नहीं हुई यह मामलात रातही को तय होते हैं।

जान्स और गर्नर दोनों तहसीलदार के मकान पर पहुँचे यह वही दिन था कि नज़ीरहसन अपने भाई से मिलकर वापस आये थे।

सैयद मुहम्मद अकरम—इस वक्त शब को आप साहबों ने कहां तकलीफ़ की है।

गर्नर—जनाब जिस तरह आप ज़ईफ वैसाही मैं भी बुड्ढा हूं। आपके दामाद के साथ मुझको निहायत हमदर्दी है क्योंकि मैंने चन्दे उनका निमक खाया है, मैं जान्स को आमादा कर रहा हूं कि वह उनका नाम मुद्दालेहों से खारिज करा दे, फ़र्माइये आप क्या कहते हैं?।

एक हज़ार रुपया भी चलते२ हाथ लग गया।

गर्नर—जान्स! मैं दिल से तुमको मुबारकबाद देता हूं ख़ुदा चाहेगा अब एलिस हमेशा वफ़ादार और ख़िदमतगार रहेगी।

जान्स—मुझे भी यक़ीन है कि इन मुसायब के बाद एलिस के ख़्यालात बहुत कुछ तबदील हो जायँगी और वह बख़ूबी समझ जायगी कि सच्चे चाहने वाले और ईमान्दार शौहर कैसे होते हैं और ज़ाहिरदार बदमाश आशिक कैसे होते हैं।

गर्नर—लेकिन ज़ेवरवाला मुक़द्दमा बहुत संगीन है उससे रिहाई मुमकिन नहीं।

जान्स—इसमें एलिस का क्या कसूर है? हिदायतरसूल ने चोरी की उसी ने एलिस के हाथ ज़ेवर फ़रोख्त किये, हिदायतरसूल ऐसे इज़्ज़तदार आदमी को कोई चोर नहीं कह सकता, मेरे नज़दीक एलिस का यही जवाब होना चाहिये, आप और मिस्टर ऐटकिन्स गवाही दें कि हिदायतरसूल ने उनको अमीरहसन की बीबी के ज़ेवर बतलाये थे, एक मर्तबा हिदायतरसूल अमीरहसन की बीबी के और ज़ेवर भी यहां फ़रोख्त कर चुका है। इस अमर के गवाह आसानी से मिल सकेंगे पाया एलिस ज़रूर बरी हो जायगी, कल राज़ीनामा दाख़िल करके हम लोगों को सीधे इलाहाबाद जाना चाहिये।

गर्नर—इस मुक़द्दमे की रूबकारी भी हाईकोर्ट में होनी चाहिये ताकि जूरी के ज़रिये से फ़ैसला हो मैं यूरोपियन ब्रटिश सबजेक्ट हूं।

जान्स—जूरी यक़ीनन् हम लोगों पर रहम करेगी, अब मैं किसी तरह मायूस नहीं हूं, एलिस ज़रूर बरी हो जायगी और एक मर्तबा मेरा उजड़ा हुआ घर आबाद करेगी।

या रब ईं आरज़ूये मन् चखुश अस्त।
तू बदीं आरज़ू मरा बरसां॥

गर्नर—ऐटकिन्स से मुझे उम्मेद नहीं कि झूठी गवाही दे, आदमी शरीफ़ मालूम होता है।

जान्स—अौव्वल तो मुझे यक़ीन है कि ऐटकिन्स इनकार न करेगा, दूसरे अगर वह इनकार कर जायगा तो मैं कोई और अँगरेज़ कलकत्ते से बुला लूंगा जो तुम्हारे बयान की ताईद करेगा।

गर्नर और जान्स ने ऐटकिन्स से कुल हालात बयान किये उसने न सुलह पर मसर्रत और न अदाय शहादत पर मुस्तैदी ज़ाहिर की।

जान्स—ऐटकिन्स इस मुसीबत के वक्त में तुमको मेरी शिर्कत करनी चाहिये।

ऐटकिन्स—मैं हर तरह तुम्हारी शिर्कत को मौजूद हूं मगर मुझसे दरोग़बयानी नहीं हो सकती।

जान्स—किसी की आबरू बचाने को झूठ बोलना मेरे नज़दीक कोई ऐब नहीं, सादी का क़ौल है।

दरोग़ मसलहत आमेज़ ब अज़ रास्ती फ़ितना अंगेज।

ऐटकिन्स—तुम लड़कों की सी बातें न करो, जान्स! मुझे इस मसलहत पर ज़रा एतबार नहीं।

गर्नर—आपको कुछ हक मेरे दामाद के बहकाने का नहीं है।

जान्स—ऐटकिन्स तुम ग़लती पर हो, एलिस अपनी ग़लती से अच्छी तरह आगाह होगई है और अब वह अपनी गुज़श्ता बेवफ़ाई पर मुतास्सुफ़ और हजल है, मुझे उसकी बातों पर पूरा एतकाद है ख़ुदा के लिये मेरे काम आओ।

ऐटकिन्स ने किसी तरह हामी न भरी मगर गर्नर ने उस वक्त ख़ानसामां और ख़िदमतगार से सरगोशी की। वह लोग भी मिसेज़ हीव से बहुत ख़ुश न थे मगर रुपये के लालच में ईमांफ़रोशी पर रज़ामन्द होगये।

गर्नर—ख़ानसमां और ख़िदमतगार मेरे बयान की ताईद कर सकते हैं यह लोग कलकत्ते को मिसतासहबा के साथ गये थे उनका बयान ज़्यादा क़ाबिल एतबार होगा।

जान्स—बहुत मुनासिब, लेकिन इन लोगों ने भी कलकत्ता देखा नहीं है, कहीं सवालात जिरह में टूट न जायँ।

गर्नर—कई मर्तबा यह लोग कलकत्ते जा चुके हैं और गली २ कूचे २ से वाकिफ़ हैं।

बाब चौवालीसवां।

क़ाबिलबिल से दग़ाबाज़ी।

मिसेज़ अमीरहसन अपने शौहर की सुलह से नाराज़ न थीं, अमीरहसन की बेहतनाई और ग़फ़लत से वह बहुत मायूस थीं, उन्हों ने तीन चार ख़त लिखे अमीरहसन ने एक का भी जवाब न दिया। अमीरहसन की

आमद भी मेमसाहबा को मालूम हो चुकी थी, खुसर साहब की सूरत मुबारक भी मेमसाहबा देखही चुकी थीं, हो न हो अमीरहसन फिर गये और खुदा जाने उलटी पट्टी पढ़ानेवालों ने उनको क्या २ सिखा पढ़ा दिया। मिसेज़ अमीरहसन को इन्हीं ख्यालात ने परेशान कर रक्खा था, जान्स से सुलह होगई अच्छा हुआ मगर क्या मेमसाहब इस मुसीबत से रिहाई के बाद जान्स से वफ़ादारी पर सच्चे दिल से आमादा थीं? कोई नहीं कह सकता, बल्कि मेरा ख्याल यह है कि खुद मेमसाहबा भी नहीं कह सकतीं, बहरहाल इस बला के दफ़ा करने की कोई तदबीर निकलनी चाहिये। मेमसाहबा को शादी वाले मुक़द्दमे से इतमीनान हुआ, अब सिर्फ़ ज़ेवर की चोरी का मुक़द्दमा बाक़ी है और वह सबसे ज़्यादा सख्त और संगीन है, अज़्दोआज मुकर्रर का जुर्म तो फ़ैशनएबुल था विलायत में सदहा मुक़द्दमात इस क़िस्म के रोज़ दायर हुआ करते हैं लेकिन चोरी के इलज़ाम में माख़ूज़ होना उसके नज़दीक भी सख्त ज़लील और क़ाबिल शर्म बात थी, साढ़े ग्यारह बजे चाँदनी बखूबी निकल आई और अब तक मेम साहबा को नींद नहीं आई, कभी कुर्सी पर कभी पलँग पर एक जगह चैन नहीं पड़ता घबरा २ कर घड़ी देखती हैं मगर रात काटे नहीं कटती इतने में बारह बजे और पहरा बदल गया और वकील उन्हीं के वह ख़ूबसूरत कान्स्टिबिल पहरेपर आया। मेमसाहबा जबसे ज़ेरहिरासत हुईं उन्हों ने अपने मुहाफ़िज़ों को निहायत ग़ौर से देखा था; सिवा अलीमुल्ला के और कोई उन्हें ऐसा नज़र नहीं पड़ा जो होशियार और क़ाबिल भरोसा हो और सब बुड्ढे तजरुबाकार और ज़माना देखे हुए थे उनसे किसी क़िस्म की उमेद इमदाद लेनी क्या मानी। अलीमुल्ला तो उमर ख़ुशरू और नातजरुबाकार था उसका चकमे में आ जाना मिसेज़ अमीरहसन के नज़दीक भी कुछ दुश्वार न था। डांक बँगले के सब किवाड़े मुक़फ़्फ़िल थे सिर्फ़ एक तरफ का दर्वाज़ा खुला हुआ था उसीतरफ़ कान्स्टिबिल का पहरा था। मिसेज़ अमीरहसन ने वक़्त दर्याफ़्त कर के सिलसिला सख़ुन शुरू किया।

मेम—क्या इस वक़्त पहरा बदल गया? के बज गये?

कान्स्टिबिल—बारह बजे हुज़ूर।

मेम पहरे पर कौन कान्स्टिबिल ?।

कान्स्टिबिल—अलीमुल्ला।

मेम मिस्टर अलीमुल्ला! आप सूरत से शरीफ़ मालूम होते हैं, आपका मकान कहां है ?।

कान्स्टिबिल—मैं गोरखपुर का रहनेवाला हूं, मेरा बाप भी यहां पुलिस कान्स्टिबिल था अब पेन्शिन पा गया।

मेम—आप कुछ पढ़े लिखे हैं ?।

कान्स्टिबिल—मैंने लड़कपन में थोड़ी सी अँगरेज़ी और फ़ारसी पढ़ी थी अब पुलिस में नौकरी करके सब भूल गया, लेन इन्स्पेक्टर ऐसा ख़राब आदमी है कि सिवा चौकी पहरे के मुझसे दूसरा कामही नहीं लेता, मेरे बाप से और हवल्दार से लड़ाई थी, हवल्दार का आजकल ज़माना है, इन्स्पेक्टर की नाक का बाल होरहा है, बाप की कसर मुझसे निकाल रहा है, मैं तो पुलिस की नौकरी करके पछताता हूं।

मेम—अगर आपको किसी दूसरी जगह अच्छी नौकरी मिल जाय तो आप पुलिस की नौकरी छोड़ दें ?।

कान्स्टिबिल—उसी वक्त, मगर मैं मिडल पास नहीं दूसरी नौकरी कहां मिल सकती है, दूसरे मेरा कोई ज़रिया भी नहीं ग़रीब आदमी को कोई नहीं पूछता।

मेम—आप सौदागरी क्यों नहीं करते ?।

कान्स्टिबिल—सौदागरी के लिये रुपये दर्कार हैं, बे ज़र दूकानदारी नहीं हो सकती।

मेम—भला कम से कम कितना रुपया तुम्हारे पास हो तो तुम नौकरी छोड़ दो।

कान्स्टिबिल—मेम साहब! मैं नौकरी से इतना परेशान हो रहा हूं कि कि अगर पांच सौ रुपये भी मेरे पास हों तो मैं नौकरी पर लानत भेज दूं।

मेम—आपकी शादी हो चुकी है ?।

कान्स्टिबिल—हुज़ूर मुफ़लिसी में शादी ब्याह कुछ नहीं सूझता, छः रुपये मिलते हैं उसमें तीन रुपये घर भेज देता हूं तीन रुपये में खाना पीना कपड़ा लत्ता सब।

मेम—(आहिस्ते से) आप मेरे पास अन्दर कमरे के आ सकते हैं ? मुझको आपसे कुछ बातें करनी हैं।

कान्स्टिबिल—थोड़ी देर में जमा-

दार और लैन इंस्पेक्टर दोनों रौंद फिरने आते होंगे वह लौट जायँ तब मैं अन्दर आकर जो आप हुक्म देंगे बजा लाऊंगा; हम लोग हुजूर से बहुत खुश हैं और सब लोग दुआ करते हैं कि खुदा आपको इस बला से निजात दे। मेम साहब! इसकी क्या असलियत है? क्या हुजूर की सचमुच उस अँगरेज़ से शादी हो चुकी थी जिसने दावा किया है।

मेम—महज़ झूठ, मेरी शादी उस अँगरेज़ से कभी नहीं हुई और न मेरी शादी अब तक डिप्टी साहब से हुई, सब लोग नाहक बदनाम करते हैं।

कान्स्टेबिल—क्या डिप्टी साहब के साथ भी हुजूर की शादी नहीं हुई?।

मेम—हर्गिज़ नहीं मिस्टर अली-मुल्ला! बात यह है कि हम लोग बग़ैर मुहब्बत के शादी नहीं करते, मुझको न उस साहब से मुहब्बत थी और न डिप्टी साहब से, मेरे पास रुपये बहुत हैं दोनों उसी के लालच में लड़ रहे हैं और चाहते हैं कि मैं उनकी बीबी होऊं, मगर मैं ऐसी नादान नहीं जो अपनी दौलत इन बेफिकरों को उड़ाने को दे दूं। जी नहीं, मैं ऐसे तमाशे देख चुकी यह बेल मंढे चढ़नेवाली नहीं।

कान्स्टेबिल—फिर हुजूर हवालात में क्योंकर दी गईं?।

मेम—डिप्टी साहब के सबब से मैजिस्ट्रेट साहब को हमसे अदावत हो गई है उन्हीं की सलाह और मश्विरे से झूठा मुक़द्दमा हम पर क़ायम किया गया और हमसे ज़मानत तक न ली गई मगर हवालात में आने से मुझको रंज नहीं बल्कि दिली खुशी हुई, मुझको तुमसे एक ऐसी मुहब्बत है जो दूसरी जगह शायद नसीब नहीं हो सकती।

कान्स्टेबिल—हवालात में हुजूर को कौन नियामत मिली?।

मेम—ऐसी नियामत कि तमाम दुनियां की दौलत मैं उसके मुकाबिल हेच समझती हूं।

कान्स्टेबिल—मेरी समझ में नहीं आता कि इस कमरे में हुजूर को क्या ऐसी चीज़ मिल गई जिससे आप इतना खुश हैं और आपको दूसरी जगह न मिल सकती?।

मेम—मैं सच कहती हूं कि अगर हजारहा रुपये मैं खर्च करती तो वह

दौलत मुझे दूसरी जगह नसीब न होती लेकिन मैं तुमसे इस तरह नहीं बतला सकती।

कान्स्टिबिल—फिर किस तरह हुजूर बतलायेंगी ?।

मेम—जब तुम कमरे में आओगे।

इतने में दूर से लालटैन की रोशनी दिखाई दी। कान्स्टिबिल ने मेम साहब से कहा कि लैन इंस्पेक्टर साहब आते हैं आप अलहदा हो जायँ। मेम साहबा दर्वाजे के पास से अलग होगई और अपने पलँग पर लेट रहीं।

मिष्टर ओब्राइन लैन इन्स्पेक्टर भी अजब शौकीन आदमी थे। थे तो यूरेशियन लेकिन अपने को खास विलायत जाद समझते थे, ब्याह के पहले अमीरहसन से खूब दोस्ती थी मगर शादी के बाद अमीरहसन की सर्कार से जब सब लोग निकाले उन्हीं में मिष्टर ओब्रायन भी शरीक कर दीए गये। मिसेज अमीरहसन से बदीं वजूद यह भी सख्त नाराज थे और उस मुकद्दमे के कायम होने से बहुत मसरूर थे। इन्स्पेक्टर ने कान्स्टिबिल को होशियार पाया।

इन्स्पेक्टर—कौन कान्स्टिबिल पहरे पर है ?।

कान्स्टिबिल—अलीमुल्ला।

इन्स्पेक्टर—देखो बहुत होशियारी रखना बड़ा हरामजादा मेमसाहब है उसका जरूर इरादा होगा कि भाग जायँ, खबरदार खूब चौकसी रखना।

कान्स्टिबिल—बहुत बेहतर खुदावन्द।

इन्स्पेक्टर साहब हिदायत करके उधर चल दिये और यहां हेड कान्स्टिबिल और कान्स्टिबिल भी सो रहे।

अलीमुल्ला को मेमसाहब की प्यारी प्यारी बातों का चसका पड़ गया था और वह हैरत में था कि यह औरत उससे तनहाई में क्या बात कहनेवाली है। इन्स्पेक्टर की बातों से उसे शक हुआ कि शायद यह औरत भागा चाहती है और उसी की निसबत कुछ कहेगी लेकिन फिर उसे इसका ख्याल जाता रहा। इन्स्पेक्टर के जाने को पांच मिनिट भी न हुए थे कि मेम साहब फिर दर्वाजे पर खड़ी हुई हैं।

मेम—इन्स्पेक्टर चला गया, क्या बोला कि मेमसाहब भागनेवाला है ?।

कान्स्टिबिल—हां हुजूर चले गये।

मेम—भागनेवाली बात क्या थी ?

कान्स्टिबिल—यह हुजूर कायदा है कि हवालात के गार्ड के जवानों को सब अफ़सर लोग ख़बरदार कर दिया करते हैं इसमें उन्हों ने खास हुजूर की निसबत कोई बात नहीं कही।

मेम—तुमने मुझसे वादा किया था कि जब तुम्हारे लैन इन्स्पेक्टर गश्त कर जायँगे तुम कमरे में आओगे और मुझसे बातें करोगे, अब अपना वादा क्यों नहीं पूरा करते, सच है—

वादा आसान है वादे की वफ़ा मुश्किल है।

कान्स्टिबिल—हां सब लोग अब सो गये मुझे अन्दर आने में कुछ उज़्र नहीं सिर्फ़ इस बात का डर है कि अगर किसी अफ़सर ने देख लिया तो मेरी सख्त सज़ा होगी और हुजूर की भी बदनामी है कि मुझ ऐसे अदने आदमी से क्यों बातें करती थीं।

मेम—मगर इस वक़्त कौन देख सकता है, जैसेही किसी के पैर की आहट मालूम होगी मैं तुम्हें बाहर कर दूंगी।

कान्स्टिबिल बेचारा गो आदमी औकीन था मगर इस वक़्त वह घनचक्कर होरहा था, उसकी समझ में खाक न आता था कि मेमसाहबा को क्यों इस क़दर नज़रे-इनायत है, कमरे के अन्दर आधी रात को क्यों बुलाती हैं, बार २ इरादा करता था कि अन्दर आने से इन्कार कर जावे लेकिन मिसेज़ अमीरहसन की जादू भरी बातें ऐसी न थीं कि मियां अलीमुल्ला को पिघलाने को काफी न होतीं।

कान्स्टिबिल—अच्छा हुजूर मैं हाज़िर होता हूं।

अलीमुल्ला ने आहिस्ते से किवाड़े खोले और कमरे के अन्दर घुसा, मेम साहब ने निहायत तपाक से हाथ मिलाया, वह बेचारा हाथ मिलाने से वाकिफ़ भी न था और भी घबरा गया उसका दिल उस वक़्त बांसों उछल रहा था।

मेम—आप घबराइये नहीं और चलकर मेरे पलँग पर बैठिये मुझे चन्द ज़रूरी बातें करनी हैं।

कान्स्टिबिल—मेरी यह मजाल नहीं कि हुजूर के बराबर बैठ सकूं जो कुछ हुक्म हो मैं खड़े २ सुन लूंगा।

मेम—खुदा के वास्ते मेरा कहना कीजिये और ज्यादा तकलीफ न कीजिये वक़्त जा रहा है और मुझे बहुत

की बातें करनी हैं।

मिसेज़ अमीरहसन ने कान्हिबिल के गले में बाहें डाल दीं और पलँग पर बैठा लिया। मेमसाहबा की इस बेतकल्लुफ़ी ने मियां कान्हिबिल साहब की जुरत भी बढ़ा दी और जिस क़दर ख़ौफ़ व ख़तरा उनपर तारी था सब रफ़ू चक्कर होगया।

कान्हिबिल—मेमसाहबा! आप मुझ ग़रीब की मेरी हैसियत से ज़्यादा ख़ातिर कर रही हैं, मेरी औक़ात आपके सामने खड़े रहने की है, इलावह इस वक़्त आप मुसीबतही में क्यों मुब्तिला न हों।

मेम—ऐ शख़्स तू नहीं जानता कि तेरी असली वक़त क्या है और तू किस मर्तबे का नौजवान है। मैं ईमांनन कहती हूं कि दुनियां के किसी शहज़ादे या अमीरज़ादे की मेरे दिल में ज़्यादा इज़्ज़त नहीं; गो मैं मुसीबत में हूं मगर फिर कहती हूं कि जो दौलत मुझे यहां नसीब हुई उसके हासिल करने में दुनियां की तमाम मुसीबतें बर्दाश्त करनी मैं आराम व चैन समझती हूं। तुम एक बहादुर नौजवान शख़्स हो और हमदर्दी इन्सानी को चाहते हो। कोई दूसरा शख़्स मुझ मुसीबतज़दो से मिलने हवालात में न आता और इस तरह अपने को ख़तरे में न डालता। ऐ बहादुर नौजवान! मैं तुम्हारी बहुत क़दर करती हूं।

कान्हिबिल—हां मेमसाहबा, यह तो बतलाइये मैं पूछना भूलही गयाथा कि कौनसी दौलत आपको इस मुसीबत में नसीब हुई।

मेम—बतला दूं?।

कान्हिबिल—हां।

मेम तुम।

इस अल्फ़ाज़ का सुनना था कि अलीमुल्ला के रोंगटे खड़े होगये और तमाम बदन में एक सुन्सनी सी होगई। मिसेज़ अमीरहसन ऐसी परीज़ाद मालदार औरत के मुंह से ये अल्फ़ाज़ अलीमुल्ला के लिये मेराज से कम न थे।

कान्हिबिल—मैं, मेमसाहबा! ख़ुदा के लिये मुझसे दिल्लगी न कीजिये मैं एक नालायक आदमी हूं, इस लायक भी नहीं जो आपके सामने बात कर सकूं।

मेम—मैंने जिस वक़्त से तुमको देखा है तमाम दुनियां मेरी आंखों में तीरह व तार मालूम होती है, मुझे

इस जिन्दान में वह यूसुफ़ मिल गया जिसकी तमाम उम्र मुझे तलाश रहती, अपनी ग़रीबी और इफ़लास का बार २ तज़किरा न करो। (अपना बक्स खोल कर ज़ेवर और नोट दिखला कर) मेरे पास इस क़दर दौलत है कि मेरी और तुम्हारी दस पुश्तों को अमीराना बसर को काफ़ी है, मगर अफ़सोस मैं इस हाल में नहीं हूं जो तुम को बुत बना कर तमाम उम्र परस्तिश कर सकूं।

कान्हिविल—मेमसाहब आप यह क्या कह रही हैं, ऐसे अल्फ़ाज़ से मुझको माफ़ रखिये मैं आपका ताबेदार हूं और हर तरह ख़िदमत को तैयार हूं।

मेम—(रो कर) क्यों साहब तुम्हारे पास सिवा इन लफ़्ज़ों के मेरे लिये और कोई तस्कीन या तशफ्फ़ी के अल्फ़ाज़ नहीं हैं?।

कान्हिविल बेचारा उस वक़्त जिस हालत में था नाज़रीन ख़ुद अन्दाज़ा कर सकते हैं। अदब रोकता था कि ऐयार क़दर ख़ुद बशिनास शौक़ मुतक़ाज़ी था कि हां . देर क्या है, मगर भलेमुख़्ता ने अपनी हालत से तिजावर नहीं किया और चुप बैठा रहा।

मेम—क्यों अब क्या कहते हो मेरी ज़िन्दगी चाहते हो या नहीं, अगर तुम्हें मुझे बचाना है और कोई राह निकालनी है तो ख़ैर वर्ना ख़ुदा के लिये मुझे मर जाने दो।

कान्हिविल—मेमसाहब मेरे अख़्तियार में जो कुछ हो सके मैं उससे बाहर नहीं, चाहे मेरी नौकरी जाय या मैं सज़ा पाऊं लेकिन आपकी ख़िदमत से मुंह न मोडूंगा, मैं भी शरीफ़ का लड़का हूं आपको ज़बान दे चुका हूं. लेकिन यह मेरी समझ में नहीं आता कि मेरे ज़रिये आपका कौन काम निकल सकता है, साफ़ २ कहिये मुझसे पर्दे की ज़रूरत नहीं है. मैं रुपये पैसे का लालची नहीं जो मेरी क़िस्मत में है मैं बहरहाल ख़ुश हूं, आपके हाल पर मुझको अलबत्ता अफ़सोस है, आप हर तरह मुझको अपना ताबेदार समझिये।

मेम—मैं इतना चाहती हूं कि इस हवालात से मुझे भगा ले चलो, मैं ज़ेवर और नोट और अशर्फ़ियां अपने साथ ले लूंगी और जिस वक़्त कहोगे तुम्हारे साथ चल दूंगी, अगर तुम इस

एहसान के एवज़ में रुपये के ख्वाहिशमन्द हो तो वह भी देने को तैयार हूं और अगर मुझे तमाम उम्र के लिये अपनी लौंडी बनाना चाहो तो इससे भी इन्कार नहीं।

कान्हिविल— आप इतना दिल बर्दाश्ता क्यों हैं, खुदा चाहेगा अदालत से आप बरी हो जायँगी, मफ़रूरी में हज़ारों तरह के खतरे हैं, तार और रेल दो ऐसे मज़बूत जादू पुलिस के हाथ में हैं जिनके ज़रिये से कैसाही चालाक मफ़रूर हो गिरफ्तार होना दुश्वार नहीं होता।

मेम—मुझे आपकी बातों पर हँसी आती है, तांतिया भील इतने दिनों से भागा हुआ है किसने गिरफ्तार कर लिया? मज़बूत दिल और मुस्तहकिम हिम्मत शर्त है। इन्सान सब कुछ कर सकता है, झंडा डाकू मेरट के जेलखाने से भागा, हज़ारों पहरेवालों की आंखों में धूल झोंक दी और आज तक पुलिस की सारी कोशिशें रायगां हो रही हैं, आपकी रेल और आपका तार खाक भी काम नहीं आता। आपको अगर मेरी रिहाई और मेरी ज़िन्दगी मंज़ूर हो तो बिसमिल्ला कमर हिम्मत चुस्त बांधिये वर्ना मुझे जवाब साफ दीजिये, 'सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब'।

कान्हिविल— मुझे इस वक्त सख्त इन्तसार है, अगर खुदानख्वास्ता आप और हम दोनों गिरफ्तार हो जायँ तो फिर रिहाई मुमकिन न होगी मुझे अपनी पर्वाह नहीं ज्यादा अफ़सोस आपही का है।

मेम—अगर आपको मेरी हालत पर कुछ भी अफ़सोस है या होता तो ऐसी बातें आपके मुंह से न निकलतीं।

कान्हिविल— अच्छा अगर आपकी यही मर्ज़ी है तो मुझे भी कोई उज्र नहीं, कल रात को जब मेरा पहरा हो आप मर्दाना लिबास हिन्दुस्तानी किस्म का पहन कर मेरे साथ चल दीजिये, सुबह होने से पेश्तर रेल पर सवार हो लेंगे और कहीं दूरदराज़ मुकाम पर कुछ दिन रह कर आगे चल देंगे, पांच चार रोज़ में बम्बई से जहाज़ पर मक्के को रवाना हो जायँगे वहां सुलतान रूम की अमलदारी है गिरफ्तारी का अन्देशा नहीं।

मेम—मक्के पहुँचना बहुत दुश्वार है, जहाज़ में गिरफ्तारी के बहुत ख़दशे हैं

बहरहाल मैं तुम्हारी राय की पाबन्द हूं, यह लो दो सौ रुपये तुम्हारे मिठाई खाने को हैं।

कान्हिविल अच्छा मैं कल दिन भर इस बात को सोचूंगा और खुदा चाहेगा तो कल शब को तुम्हारी आजादी हो जायगी, यह रुपये मुझे नाहक देती हो मैं क्या करूंगा।

मेम—यह रुपये कुछ बहुत नहीं मेरा जान माल सब तुम्हारे ऊपर तसद्दुक है अगर तुम मुझे अपनी फर्मावर्दारी में लो।

कान्हिविल ने रुपया अपनी जेब में रक्खा और बाहर निकल आया, वह एक अजीब हालत में था, मेमसाहबा की इख़लाक इज़्हार-इश्क और रुपये ने उसको इमातन मफ़्तूंत बना दिया था, मगर नौउमरी और नातजरुबाकारी इतनी बड़ी जुर्रत करने में हायल थी। बहरहाल वह इस बात पर अमादा था कि जहां तक मुम्किन हो मिसेज़ हील की अयानत करे—

दरीं दर्याय बे पायाँ दरीं तूफ़ान मौज अफज़ा। दिल अफ़ गन्दे म बिस्मिल्लाह मुजरीहा व मुरसाहा॥

थोड़ी देर में दूसरे कान्हिविल ने अलीमुल्ला को उस वक्त के बारे गरों से सबकदोश किया।

बाब पैंतालीसवां।

गुज़श्ता रा सलवात।

दूसरे रोज़ सैयद नज़ीरहुसन फिर अपने भाई के पास गये और इत्तिला दी कि जान्स उनके नाम को इस्तग़ासे से खारिज करने पर रज़ामन्द होगया है।

अमीरहसन—खैर बहुत बेहतर हुआ झगड़ा मिटा, मगर एलिस की निस्बत उसका क्या इरादा है?।

नज़ीरहसन—मुझे ठीक मालूम नहीं मगर उसकी निस्बत राज़ीनामे का होना न होना दोनों एक असर रखता है क्योंकि ज़ेवरवाला मुक़द्दमा बहुत सख़्त है और उससे बरीयत मुम्किन नहीं।

अमीरहसन—मगर तुम उसके लिये वकील या बैरिष्टर लानेवाले हो न?।

नज़ीरहसन—मगर अब मैं इलाहाबाद न जाऊंगा यहीं कोई लायक वकील तजवीज़ कर लूंगा।

अमीरहसन—खैर जैसी तुम्हारी मर्ज़ी हो लेकिन अंगरेज़ बैरिष्टर के

आजाने से उसके दिल की हवस मिट जाती।

नज़ीरहसन—मैं आजही इलाहाबाद अपने एक दोस्त को तार दूंगा और मिस्टर डि॰ क्रूज़ को उनकी तरफ से बुलवाऊंगा तुम इत्मीनान रक्खो।

इतने में एक किराये की गाड़ी दिखलाई दी और नज़ीरहसन ने दूरही से पहिचान लिया कि उसमें जान्स और गर्नर सवार हैं; गाड़ी बरान्दे तक चली आई क्योंकि जबसे यह मुक़द्दमा दायर हुआ, तमाम शहर में मिस्टर अमीरहसन की हुकूमत ख़ैर बाद कह चुकी थी और उनका पिछला रोआब रुख़सत हो चुका था, हर शख़्स जानता था कि अमीरहसन मुब्तिलाय मुसीबत हैं, और इनका इस बला से बचना मुश्किल है, गाड़ीवाले भी उसी तरह गुस्ताख़ हो चले थे, जैसे और बाज़ारी ख़लक़त। अमीरहसन भी इन दिनों ऐसी बातों पर ख्याल नहीं करते थे।

नज़ीरहसन—मिस्टर जान्स और मिस्टर गर्नर दोनों तुमसे मिलने आये हैं; बुला लूं ?।

अमीरहसन—कुछ हर्ज नहीं बुला लो,। दोनों साहब अन्दर आये और मामूली साहब सलामत के बाद बैठे।

नज़ीरहसन—कहिये जनाब अब क्या इरादे हैं ?।

जान्स—आज मैं अपने मुक़द्दमे में बाज़दावी दे दूंगा, मुझमे और एलिस से सुलह होगई और वह अपनी पिछली हर्कत पर नादिम है और मैंने भी उसकी ख़ता माफ़ कर दी।

अमीरहसन—क्या अब वह इक़बाल करती है कि वाक़ई आप उसके शौहर हैं ?।

जान्स—यह देखिये उसका आज सुबह का ख़त है, मैंने राज़ीनामा दाख़िल करने से पेशतर ज़रूरी समझा कि कोई तहरीर इक़रार हासिल कर लूं, चुनांचे मैंने उसको ख़त लिखा और उसका यह जवाब है।

ख़त।

बहुत प्यारी एलिस !

मैं रात तुमसे रुख़सत होकर सैयद नज़ीरहसन से मिला और उनसे भी सब बातें तय होगईं, मैं ख़ुशी से तुम्हारी ख़तायें माफ करने को और मुक़द्दमे से बाज़दावी देने को तैयार हूं अगर तुम साफ २ इसी ख़त की पुश्त पर इक़रार करो कि तुम मेरी ब्याहता

बीबी की तरह मेरे साथ रहने को तैयार हो और अपनी पिछली ज़िन्दगी पर नादिम होकर मुझसे माफ़ी मांगती हो तो मैं बाद दाखि़ल करने राज़ीनामे के इलाहाबाद जाऊंगा और ज़ेवरवाले मुक़द्दमे की पैरवी के लिये बैरिस्टर लाऊंगा।

तुम्हारा बदनसीब शौहर

जान्स।

जवाब।

मेरे प्यारे शौहर !

मैं निहायत ख़ुशी से इकरार करती हूं कि मेरे जायज़ और क़ानूनी शौहर तुम्हीं हो और मैं इन आफ़ात से निजात पाने के बाद तुम्हारे साथ उसी तरह रहूंगी जैसे एक फ़र्मांबर्दार ज़ौजा को रहना चाहिये। अफ़सोस मैंने सैयद अमीरहसन को धोखा दिया लेकिन वह एक शरीफ़ख़्याल आदमी है यक़ीनन् मेरी ख़ता माफ़ कर देगा। सैयद अमीरहसन को मेरी जुदाई का कुछ सदमा भी न होना चाहिये, उन की बेगम मुझसे हज़ार दर्जा लायक और ख़ूबसूरत घर में मौजूद है। मैं समझती हूँ कि उसी का सब्र मुझपर पड़ा और यह सब मुसीबतें एकबारगी आगई। सैयद अमीरहसन को अपनी बीबी से मिलना चाहिये और मुझ ऐसी झूठी दग़ाबाज़ औरत का ख़्याल छोड़ देना चाहिये। प्यारे शौहर ! तुमको अख़्तियार है कि इस ख़त को जिस तरह चाहिये इस्तेमाल करो। ज़ेवर के मुक़द्दमे में मैं बेक़सूर हूं, हिदायतरसूल ने मुझे वह ज़ेवर दिये मैंने उस को मोअज्ज़िज़ समझ कर ले लिये, मैं हर्गिज़ नहीं वाक़िफ़ थी कि वह मसरूका हैं, जिस तरह मुमकिन हो मुझे बचाने की कोशिश करो।

तुम्हारी शर्मिन्दा बीबी

एलिस जान्स।

अमीरहसन—नज़ीरहसन तुम्हारा ख़्याल सच निकला, मैं सख्त धोखे में था हाय ! इस औरत ने मुझे कैसा ज़लील किया और मुझे किस क़दर फ़रेब दिये !। मिस्टर जान्स ! ख़ुदा शायद उसको माफ़ कर दे मगर मैं माफ़ न करूंगा।

नज़ीरहसन—क्या तुमको उस औरत की मुफ़ार्क़त का रंज है? ख़ुदा का शुक्र करो कि कैसी अज़ीम बला से तुम बच गये।

अमीरहसन—मुझे रंज ज़रूर है

और यह खुशी की बात है मगर यह आर्ज़ा बिलकुल चन्दरोज़ा है और खुदा चाहेगा तो मैं जल्द सँम्हल जाऊंगा।

राह पर आये न थे तुम कि वह रस्ता छूटा। तुमको सौदा न हुआ था चलो सस्ता छूटा॥

जान्स— कहिये अब आपको मेरे बयान का यक़ीन हुआ? ।

अमीरहसन— मिस्टर जान्स! मैं वाकई इस लायक नहीं कि आप मुझे माफ करें लेकिन मैं नादानिस्ता और नावाकिफ था चुनांचे इस आखीर खत से भी आपको इसका सबूत मिल-गया। मैं आप का शुक्रगुज़ार हूं कि आप मुझे माफ़ी देते हैं बेशक आप सच्चे थे और यह दग़ाबाज़ औरत झूठी थी, गो मुझे कुछ हक नहीं है कि मैं आपके सामने आपकी बीबी को बुरे कलमात से याद करूं—

जान्स— मुझे इस औरत से बला-की मोहब्बत है गो सख्त गुस्सा था और वाकई यह इरादा था कि अब त-माम उम्र उससे न मिलूंगा लेकिन फिर न रहा गया और चार ना चार मिल-नाही पड़ा।

दिले रंजीदा कहता है न बोलूं यार से हर्गिज़। जब आंखें चार होती हैं मुरौवत आही जाती है॥

अमीरहसन— मिसिज़ जान्स के कपड़े और बहुत सी चीजें यहां हैं वह मेहरबानी करके आप उठा ले जाइये मेरे घर उनका रहना नामुनासिब है।

नज़ीरहसन— तुम्हारा किस कदर रुपया मिसेज़ जान्स के ज़िम्मे है? ।

अमीरहसन— नज़ीरहसन तुम वाकिफ़ होगे कि जिस क़दर जायेदाद वालिद के तर्के की तुमने मुझे दी सब इसी औरत ने तबाह कर डाली। रहा सहा मेरा असबाब जो मेरी कोठी में था उसको भी नीलाम कर डाला, गाड़ी घोड़े सब बेच डाले लेकिन मैं इस नु-कसान को उस खता का जुर्माना सम-झता हूं जो मुझ से सर्ज़द हुई मुझे मिसेज़ जान्स से किसी चीज़ का दावा नहीं और न मैं कुछ उससे वापस लेना चाहता हूं उसका सब असबाब मेरे घर से अभी उठ जाना चाहिये।

जान्स—इस मुकद्दमे का अंजाम देख लीजिये इसके बाद मैं सब असबाब उठवा ले जाऊंगा।

अमीरहसन— जी नहीं, यह चीज़ें मेरे बँगले में अब एक मिन्ट नहीं रह

सकतीं।

जान्स— बेहतर है आप उसके पास डांक बंगले यह सब चीजें भेज दीजिये।

अमीरहसन—मैं अभी भेजे देता हूं।

अमीरहसन ने कुल वक्त और असबाब जो मेमसाहबा का था उसे ठेके गाड़ी पर लाद कर जिस पर मिष्टर जान्स आये थे एक चिट्ठी के साथ डांक बँगले भेज दिया—

चिट्ठी।

म्याडम—आपका कुल असबाब भेजा जाता है आप की दरोग़बयानियों और दग़ाबाज़ियों ने मुझे ज़िन्दा दरगोर कर दिया और मैं दुनिया में मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहा। बहर हाल अब आपको न अपनी खतायें माफ़ कराने की मुझसे ज़रूरत है और न मुझे आप से मिलने की एह-तियाज। अमीरहसन

मिसेज़ जान्स ने अपना सब असबाब डांकबँगले के दूसरे कमरे में रखने का हुक्म दिया और हस्व ज़ैल रसीद लिख दी।

रसीद।

जनाबमन,

असबाब पहुँच गया आप मुझे भूल जायँ और समझिये कि कभी मुलाकात ही नहीं हुई थी, मैं भी आपको भूल गई।

एलिस जान्स।

नज़ीरहसन—मिष्टर जान्स! आप के हम सब लोग शुक्रगुज़ार हैं कि ऐसी अज़ीम ग़लती आपकी बदौलत निहा-यत आसानी से रफ़ा होगई।

अमीरहसन—मैं भी मिष्टर जान्स का बहुत शुक्रगुज़ार हूं, बेशक इसवक्त मेरी अजीब हालत है कुछ ग़ुस्सा कुछ पास कुछ रंज लेकिन यह ज़ख्म ऐसा नहीं है कि जल्द पुर हो।

तबीयत को होगा कलक चन्द रोज़ा।
सम्हलते सम्हलते सम्हल जायगी॥

जान्स—मिष्टर नज़ीरहसन! आप को चाहिये कि मेहर्बानी करके ज़ेवर वाले मुक़द्दमे में मेरी मदद कीजिये।

नज़ीरहसन—मैं निहायत मसर्रत से जो कुछ मुमकिन है मदद देने को मौजूद हूं मगर यह मुक़द्दमा बहुत संगीन है इससे इसकी जान बरी ग़ैर मु-म्किन है।

जान्स—मेरी बीबी ने महज़ ना-वाक़फ़ियत से यह ज़ेवर खरीदे, उस की नीयत मुजर्माना न थी, ऐसी हा-

लत में उसपर कौन जुर्म आयद हो सकता है? ।

नज़ीरहसन—हां अगर आप यह साबित कर सकें तो शायद वह बरी हो जाय ।

जान्स ने मुक़द्दमे के कुल हालात नज़ीरहसन को समझाये और उन्होंने भी जवाबदेही के तरीके को पसन्द किया । जान्स रुखसत हुआ और भाई भाइयों में फिर बातें शुरू हुईं ।

नज़ीरहसन—अमीरहसन ! अब तुम्हारी आंखें खुलीं ? ।

अमीरहसन—कुछ न पूछो जो इस वक्त मेरी हालत है दुनियां में ऐसी भी औरतें हैं ! ज़ाहिर में इस दर्जा खूबसूरत! ऐसी शीरींकलाम! ऐसी नेकमिज़ाज और बातिन में ऐसी सफ़ाक दग़ाबाज़ और कमीना ! ।

नज़ीरहसन—फिर अब क्या राय है, बैरिस्टर बुलवाया जाय ? ।

अमीरहसन—हर्गिज़ नहीं, अगर मुझसे उसने फ़रेब न किया होता तो मैं और सब कसूरों पर ख्याल न करता ।

नज़ीरहसन—मगर जान्स भी सख्त बेहया शख्स है कि ऐसी औरत पर जान दे रहा है ।

अमीरहसन—जान्स बेचारा निहायत सीधा और नेक आदमी है, मुझको उससे पूरी हमदर्दी है ।

नज़ीरहसन — मुझे उमीद है कि यह औरत बहुत दिन जान्स के साथ न रहेगी, अौव्वल तो इस मुक़द्दमे से बच नहीं सकती और अगर बच भी जाय तो चन्द रोज़ रह कर फिर जान्स को धोखा देगी ।

अमीरहसन—कुछ ही हो ।

मारा चे अज़ां क़िस्सा कि गाव आमद व ख़र रफ्त ।

नज़ीरहसन—अच्छा मैं अब जाता हूं बाज़दावो दाखिल हो जाय तब शाम को मिलूंगा ।

अमीरहसन—खाना खाकर जाना ।

अल्ला आज किधर से चांद निकला जो तीन बरस बाद हमारे दोस्त सैयद अमीरहसन को इतनी तौफ़ीक हुई है कि भाई को खाने की दावत दी ।

नज़ीरहसन—मैं अकेला नहीं खा सकता, जब सैयद महम्मद अकरम साहब बहादुर और तहसीलदार साहब को खाने पर बुलाओगे तब मैं भी खाऊंगा, देखो मैं उनका मेहमान हूं ।

अमीरहसन—अच्छा हम सब ब-खेड़ों को तय हो जाने दो।

नज़ीरहसन—तुमको सैयद साहब से भी मिलना चाहिये, तुम एक रोज़ भी वहां नहीं गये।

अमीरहसन—ज़रा मेरी तबीयत सँभलने दो।

नज़ीरहसन ने वहां से वापस आकर सैयद मुहम्मद अकरम और तहसीलदार साहब को मिस्टर जान्स और मेम साहबा की मसालहत पर मुबारकबाद दी।

तहसीलदार—मुबारकबाद उस वक्त देना चाहिये जब अमीरहसन की आइन्दा हालत क़ाबिल इतमीनान हो।

नज़ीरहसन—अमीरहसन अब अपने पिछले ख्यालात पर बहुत नादिम हैं और मुझे यक़ीन कामिल है कि उनकी तरफ से कोई तरद्दुद बाक़ी न रहेगा।

सैयद मुहम्मद अकरम—खुदा हम चुनीं कुनद्।

नज़ीरहसन—अब मैं कचहरी जाऊंगा ता कि मेरे सामने राज़दावी दाखिल हो जाय।

इधर मिस्टर जान्स भी जल्दी से हाज़री खाकर कचहरी में पहुंचे और थोड़ी देर में सैयद नज़ीरहसन साहब भी मौजूद थे।

नज़ीरहसन—कहिये जनाब आप ने राज़दावा लिख डाला।

जान्स—जी हां देखिये इसमें मज़मून दुरुस्त है (राज़दावी की दर्खास्त नज़ीरहसन को देकर) नज़ीरहसन ने दर्खास्त पढ़नी शुरू की जिसका मज़मून हस्ब ज़ैल है।

दर्खास्त मिस्टर जांस बनाम मिस्टर अमीरहसन व मिसेज़ जांस अल्मारूफ़ व मिसेज़ अमीरहसन इल्ज़ाम दफ़ात ४९४ व $\frac{१०९}{४९४}$ पिनलकोड

जनाबआली! मेरी ज़ौजा मिसेज़ जान्स ने मुझसे माफी मांगी और मेरी ज़ौजियत में वापस आना मंजूर कर लिया और मुझको यह भी साबित हो गया कि मिस्टर अमीरहसन ने नावाक़िफ़यत में मेरी ज़ौजा से शादी की थी इसलिये वह भी बेकसूर हैं, मैं अपने इल्ज़ामात दोनों मुद्दालेहों से जानिब से वापस लेता हूं मुक़द्दमा ख़ारिज कर दिया जाय।

दस्तखत जान्स।

इसमें अगर घटाना बढ़ाना हो तो

बतला दीजिये अभी इसलाह मुमकिन है।

नज़ीरहसन— मेरे नज़दीक अब इसमें कोई तर्मीम दर्कार नहीं आप दाख़िल करके शौक से चैन कीजिये।

जान्स— अभी चैन कहां! ख़ुदा जे-वरवाले मुक़द्दमे से फ़राग़त दे तब अलबत्ता चैन है। हाय मुझे क्या मालूम था कि एलिस ऐसी आसानी से मुझे मिल जायगी वर्ना मैं कभी यह बखेड़े न उठाता; अफसोस गुस्से में मुझ से यह हर्कत हो गई, मेरे ख़ुदा तूही इसमें रहनुमाई और इमदाद कर।

साहब मजिस्ट्रेट ज़िला के तशरीफ़ लाते ही मिस्टर जान्स ने कचेहरी में जाकर दर्ख़ास्त पेश की।

मजिस्ट्रेट—आप अमीरहसन और मिसेज़ जान्स दोनों का मुक़द्दमा ख़ारिज कराना चाहते हैं?।

जान्स—हां जनाब।

मजिस्ट्रेट— बहुत अच्छा यह दोनों मुक़द्दमे काबिल राज़ीनामा हैं, हम दर्ख़ास्त मंज़ूर करता है। इस मुक़द्दमे के गवाहों के नाम तार दे दिये जांय कि अब उनके आने की ज़रूरत नहीं मगर मिसेज़ जान्स पर जो चोरी का मुक़द्दमा है वह बदस्तूर क़ायम रहेगा और वह इस दर्ख़ास्त से ख़ारिज नहीं हो सकता। मिस्टर जान्स मैं बहुत ख़ुश हूं कि आपसे और आपकी बीबी से सुलह होगई।

जान्स— थैन्क यू सर।

नज़ीरहसन— अब इस मुक़द्दमे में सैयद अमीरहसन से कोई ताल्लुक नहीं तारीख़ मुकर्रा पर उनकी हाज़री की तो ज़रूरत नहीं?।

मजिस्ट्रेट— बराह मेहरबानी सैयद अमीरहसन को बुलवा दीजिये ताकि मैं उनको ख़ुद हुक्म सुना दूं।

मजिस्ट्रेट साहब का यह हुक्म देना था कि तमाम कचेहरी में एक हुल्लड़ मच गया। सब मुतरद्दुद थे कि अमीरहसन ख़ुद क्यों बुलाये गये, कोई कुछ कहता था, दोस्त तो दोस्त इन चन्द दिनों की परेशानी ने अमीरहसन के दुश्मनों के भी दिल नर्म कर दिये थे और कोई ऐसा न था जिसको इस नाकर्दा गुनाह लेकिन मग़रूर मुलज़िम से हमदर्दी न हो। जब से यह मुक़द्दमा दायर हुआ था साहब मजिस्ट्रेट की कचेहरी तमाशाइयों से भरी रहती थी जहां ख़बर मिली कि अमीरहसनका

मुक़द्दमा पेश होनेवाला है जौक़ २ तमाशाई भर आते थे। सैयद नज़ीरहसन मिष्टर माबेल का पैग़ाम लेकर अमीरहसन के पास गये, वह उसवक्त ख़ज़ाने में अपना काम कर रहे थे।

नज़ीरहसन— तुमको मिष्टर माबेल बुलाते हैं।

अमीरहसन—क्यों ख़ैरियत तो है।

नज़ीरहसन— हां सब ख़ैरियत है जान्स ने राज़ीनामा पेश किया था उसी पर पहले जान्स को मसालहत की मुबारकबाद दी उसके बाद मुझसे हुकुम दिया कि अमीरहसन को बुलवा भेजिये।

अमीरहसन – क्या उनका इरादा मेरी निस्बत मुक़द्दमा बदस्तूर क़ायम रखने का है।

नज़ीरहसन— यह क्योंकर मुमकिन है मुक़द्दमा काबिल राज़ीनामा है जब शौहर दस्तबर्दार होगया तो मजिष्ट्रेट क्या कर सकता है।

नज़ीरहसन मय सैयद अमीरहसन के इजलास पर आये। मिष्टर माबेल ने अपने नज़दीक की कुर्सी पर अमीरहसन को बैठने का हुक्म दिया, हज़ारहा आदमी इजलास के कमरे में भरे हुये थे और मुन्तज़िर थे कि देखिये साहब मजिस्ट्रेट के मूंह से क्या इलफ़ाज़ निकलते हैं।

साहब मजिस्ट्रेट— मिष्टर अमीरहसन, मैं आपको सच्चे दिल से मुबारकबाद देता हूँ कि यह मुक़द्दमा अदालत के बाहर तै होगया, और उन ज़िल्लत भरी हुई ग़लीज़ बातों से जो दौरान रोबकारी में ज़ाहिर होनेवाली थीं यह इजलास उसका हाकिम और नीज़ आम ख़लक़त के कान महफ़ूज़ रहे, इसलिये दरअस्ल यह मुबारकबाद सिर्फ़ आपही को नहीं है बल्कि हम सब लोगों को और ख़ासकर आपके मोअज़्ज़िज़ ख़ान्दान के मेम्बरों को है जिनको आपकी नादानिस्तगी या नातजरबाकारी और लड़कपन से बहुत बड़ा सदमा पहुँचनेवाला था।

मिष्टर अमीरहसन मैंने आजतक आपकी निज की बातों में गुफ़्तगू करने से हत्तोलइमकान अपनी ज़बान रोकी थी मगर इस मौक़े पर मैं चन्द इलफ़ाज़ बग़ैर कहे नहीं रह सकता आपने वालिद मर्हूम के इन्तकाल के बाद से अँगरेज़ी ख़्यालात और अँगरेज़ी तर्ज़ माशरत अख़्तयार की है बाज़

हुक्काम और बाज़ यूरोपियन अफ़सरों के ख्यालात इस वज़ाई, निस्बत पर कैसे ही हों मगर मैं ज़ाती तौर पर उसको पसन्द करता हूं और चाहता हूं कि हिन्दुस्तानी नौजवान जिस क़दर से मुमकिन हो और जहां तक उनकी आमदनी किफ़ायत करे अँगरेज़ी लिबास और तर्ज़ मआशरत इख्तियार करें। मैंने आमदनी के किफ़ायत करने को ख़ास कर इस वजह से मशरूत कर दिया कि अँगरेज़ी लिबास और तर्ज़ मआशरत में ज़्यादा रुपया खर्च होता है औसत दर्जे के हिन्दुस्तानी जेण्टिलमैन अमूमन् ऐसे खुशहाल नहीं हैं जो उस सर्फ़-कसीर को गवारा कर सकें। इब्तदाय में अकसर नौजवानों के इश्तियाक़ भरे दिल अँगरेज़ी सुसाइटी की खूबियों को चुन लेते हैं और इसी ख्याल में वह ऐसे खुद रफ्ते हो जाते हैं कि सदहा ऐब और हज़ारहा बुराइयां जो यूरोपियन तर्ज़ मआशरत में हैं उनको बिलकुल नज़र अन्दाज़ कर देते हैं और उसके सबब से ऐसे २ नुकसान उठाते हैं जो तमाम उम्र उनकी ज़िन्दगी को फ़ज़ूल और शर्मसार रखते हैं। मिस्टर अमीरहसन! मुझे माफ़ कीजिये आपने भी दो सख्त ग़लतियां कीं, एक यह कि अपनी आमदनी से बहुत ज़्यादा खर्च बढ़ा दिया और जिसके सबब से आप सिर्फ़ बदनामही नहीं हुये बल्कि आप अपनी दिली मसर्रत और अपनी दिली फ़ारिग़-उलबाली को खो बैठे। कोई शख्स कैसा ही मज़बूत दिल का क्यों न हो या कैसा ही बेफ़िक्र क्यों न हो मगर क़र्ज़दार होने के बाद एक मिनिट के लिये भी इतमीनान या खुशी उसको हासिल नहीं हो सकती; क़र्ज़ एक खुशगवार ज़हर है जो इब्तदा में बड़े मज़े का मालूम होता है लेकिन चन्दही रोज़ में ऐसे मोहलिक असर दिखलाता है कि फिर उसका इलाज नामुमकिन हो जाता है, मेरी असली मंशाय इस वक्त क़र्ज़ पर लेकचर देने का नहीं है और इसलिये मैं इस मज़मून को तर्क करके आपको मिस्टर अमीरहसन बतलाना चाहता हूं कि दूसरी ग़लती आपने क्या की। दूसरी ग़लती इस औरत से शादी थी। इस लेडी पर दूसरा मुक़द्दमा मेरे इजलास में दायर है इसलिये उसकी चालचलन की निसबत ज़्यादा कहना नहीं चाहता, मगर जब भी इतना कह सकता हूं कि अँगरेज़ी क़ौम और अँग-

रेज़ी सुसाइटी के बदतरीन् नमूना को जिसने देखा न हो डांकबँगले में जा कर देख आवें। वह औरत जिसने चन्द साल के अर्से में आधे दर्जन नाम तब्दील किये जिसने ऐसे शरीफ़ और नेक गौहर को तर्क करके मिसेज़ चील एक फ़र्ज़ी नाम अख्तियार किया, जिसने अपने अज़ीज़ बाप को ज़िन्दा दरगोर समझ कर एक बैरोनेट् को अपना बाप बतलाया उस औरत से जो न हो सो थोड़ा है। मिस्टर अमीरहसन! तुम्हारी यह ग़लती कि इस कमीनी औरत के पीछे अपना नाम अपना लक़ब अपनी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी, अगर तमाम उम्र भी पछताओ और रंज करो तब भी माफ़ नहीं हो सकते। तुम एक ब्याहे हुए आदमी थे और तुम्हारे घर में वह आलीख्यान्दान तालीमयाफ्ता लेडी मौजूद थी जिसपर क़ौम और ख़ान्दान को फ़ख़्र हो सकता है, तुमने एक शरीफ़ बाअसमत आली मुरतबित लेडी पर जिसने तमाम उम्र सिवा तुम्हारे दूसरे ग़ैर मर्द की सूरत नहीं देखी, मिसेज़ चील (मैं हैरत में हूं कि किस नाम से उसको याद करूं क्योंकि उस के सदहा नाम हैं) ऐसी चालाक दग़ाबाज़ और कमीनामिज़ाज औरत को तर्जीह दी। यह ऐसी हर्कत आपने की कि जिसके लिये कुल मुअज़्ज़िज़ीन् ख़्वाह वह हिन्दू हों या मुसल्मान, ईसाई हों या पार्सी सब नफ़रत कर रहे हैं और चाहते हैं कि आप ख़जिल हों और अफ़सोस करें।

मिस्टर अमीरहसन! मैं बहैसियत मैजिस्ट्रेट के बल्कि बहैसियत उस दोस्त के जिसको आपके वालिद नामदार की दोस्ती और मुहब्बत और आपकी ख़ान्दान का दर्जा और इज़्ज़त दिल से अज़ीज़ है आपको इस नागहानी बला से निजात पाने पर मुबारकबाद देता हूं और दुआ करता हूं कि यह चन्दरोज़ा ज़िल्लत और मुसीबत सिर्फ़ आपके लिये नहीं बल्कि नातजरुबा दिलदादा मुनिग्र नौजवानोंको मुफीद साबित हो और आइन्दा के लिये चश्म इबरत अता करे, मैं अब हुक्म देता हूं कि यह मुक़द्दमा ख़ारिज होकर दाख़िल दफ्तर हो।

नज़ीरहसन—मैं बहुत २ शुक्रिया अदा करता हूं। अमीरहसन आपही के बनाये हुए हैं, दरअसल यह मुबारकबाद आपको है।

अमीरहसन— मिस्टर मावेल ! मैं आपकी नसीहत आमेज़ तक़रीर का एहसानमन्द हूं, खुदा मुझको उसपर अमल करने की तौफ़ीक़ दे।

जान्स वहां से सीधा डांक बँगले गया।

बाब छियालीसवां।

असबाब का नीलाम।

मिसेज़ जान्स अपने जदीद इरादों की कामयाबी के उमेद पर बहुत मसरूर थीं। उन्होंने अलीमु ा और उसकी मोहब्बत के नुकसानात और फ़वायद को निहायत होशियारीसे मीजाने अक़्ल में तौला। उनकी राय में फ़वायद का पल्ला भारी रहा, ज़ाहिरी नुकसानात यह थे (१) सुसाईटी से बिलकुल अलहदगी हो जायगी (२) गुमनामी की हालत में सारी उम्र बसर करनी पड़ेगी और शान व शौकत जिसकी वह लड़कपने से आदी थी ख्वाब व ख्याल मे भी न दिखलाई देंगे (३) बाप और शौहर से कोई ताल्लुक़ न रहेगा। इन नुकसानात को उसने पेन्सिल से काग़ज़ पर एक तरफ़ लिखा।

नफ़े उसकी दानिस्त में हस्ब ज़ैल थे (१) अलीमुल्ला सा नौजवान और सीधा आदमी तमाम उम्र के लिये मिलता है जो उसकी पसन्द में अमीरहसन और जान्स दोनों से बदरजहा मतीय और नेक था (२) चोरी के मुक़द्दमे में कैद होना लाज़मी है उससे रिहाई होती है (३) जान्स की ग़ैर मतबूय सोहबत से निजात मिलती है। (४) गर्नर ऐसे लालची और बेमुरौव्वत बाप से सबकदोशी होती है, यह बातें भी उसने आधे काग़ज़पर नुकसानातके मुक़ाबिल लिखी और आखिरकार यही फ़ैसला किया कि बमुकाबला नुकसान के इस कार्रवाई में नफ़ा ज़्यादा है। उसे कभी२ यह शुबहा ज़रूर पैदा होता था कि क्या इस इरादा मफ़रूरी में पूरी कामयाबी होगी या नहीं लेकिन वह इस शुभे से ज़रा भी मायूस न होती थी। वह कहती थी कि अगर मैं गिरफ़्तार भी होऊँगी तो क्या, जहां सेर वहां सवा सेर, अबजो 'अक़्सर गुज़श्त चे यक नेज़ा चे यक दस्त', चोरी के मुक़द्दमे में कैद होनाही है मफ़रूरी में दो चार महीनें और सही। इसके सिवा और तो कुछ हो नहीं सकता, फांसी मुमकिन नहीं दायमुलहब्स मुमकिन नहीं, बहर

हाल वह अपने इरादे में मज़बूत थी। ग्यारह बजे दिन को मिस्टर जान्स ने आकर बाज़दावी मंजूर हो जाने की ख़ुशख़बरी दी।

मेम—थैंक यू, वेरी मच (बहुत बहुत शुक्रिया) मैंने अमीरहसन को जवाब भी लिख दिया तुमने देखा होगा।

जान्स— हां मैं उसवक़्त वहीं बैठा था अच्छा हुआ उनसे भी मामला तय हो गया।

मेम—तुमने देखा अमीरहसन किस क़दर शरीफ़ख़्याल शख़्स है मेरा कुल असबाब दे दिया।

जान्स—हां सब असबाब भेज दिया और उनका जो रुपया तुम्हारे ज़िम्मे है उसका भी उन्हें कोई दावी नहीं।

मेम— यह उनकी रियासत और शराफ़त की दलील है, क़रीब बीस पचीस हज़ार रुपया उनका मैंने बर्बाद किया।

जान्स—वह सब रुपया कहां है ?।

मेम— घबराओ नहीं सब मेरे पास है, खुदा इस मुक़द्दमे से मुझे निजात तो दे, तुम्हाराही है किसी और का नहीं।

जान्स— मुझे रुपये की पर्वाह नहीं खुदा के फ़ज़ल से मेरे पास भी बहुत रुपया है, मुझे सिर्फ़ तुम्हारी ज़रूरत है और बस।

मेम— ज़ेवर के मुक़द्दमे में क्या राय है कोई सूरत बचने की है ?।

जान्स— तुम्हारा यह जवाब होना चाहिये कि हिदायतरसूल से तुमने बीस हज़ार की ज़ेवर ख़रीदा और हिदायतरसूल ने वह ज़ेवर अमीरहसन का बतला कर फ़रोख़्त किया जिस तरह उसने और ज़ेवर भी इटावे में बेचे हैं तुमने नेकनीयती से ख़रीद किये।

मिस्टर गर्नर— और हमारे क़दीम मुलाज़िम ख़ान्सामा और ख़िदमतगार इसके गवाह हैं।

मेम— मगर मैंने जब यह ज़ेवर लिये वहां कोई मौजूद नहीं था।

जान्स—कुछ पर्वाह नहीं सब लोग गवाही दे देंगे, मगर यह तुम दरख़्वास्त करना कि तुम्हारा मुक़द्दमा यहां न हो बल्कि हाईकोर्ट में हो।

मेम—हाइकोर्ट में ! वहां जजों को ज़्यादा सज़ा का अख़्तियार है मेरे नज़दीक यहीं मुनासिब था, क्योंकि मेजिस्ट्रेटों के अख़्तियारात कम होते हैं।

जान्स – हाईकोर्ट में जूरी से ज-

रिये से मुक़द्दमात होते हैं और जूरी अमूमन् अँगरेज़् होते हैं इस मुक़द्दमे में तुम्हारे खिलाफ़ जितने गवाह हैं सब हिन्दुस्तानी। उनके नज़दीक हिन्दुस्तानियों का बयान बेवक़अत साबित होना कुछ दुश्वार न होगा, मैं आज अब को इलाहाबाद जाता हूं और जिस तरह बनेगा मिस्टर कालविन को तुम्हारी तरफ से बेरिस्टर कर लाऊंगा।

मेम—प्यारे औहर ! ख़ुदा तुमको कामयाब करे, मिस्टर कालविनकी फ़ौजदारी मुक़द्दमात में धूम है उन्हें ज़रूर बुलाओ और कलकत्ते से मिस्टर मनमोहन घोस को बुलाना चाहिये, वह भी फ़ौजदारी में बहुत मशहूर हैं। प्यारे ! मेरी आबरू और मेरी जान के मुकाबले में रुपये का लालच न करो और मुझे छुड़ाओ।

जान्स—मेरी प्यारी ! मेरी डार्लिंग ! तुम ज़रा रंजीदा न हो ख़ुदा ज़रूर मदद करेगा।

मेम—तुम आज ज़रूर इलाहाबाद जाओ और किसी दोस्त के ज़रिये से मनमोहन घोस को भी बुलवाओ। देखो अब सिवा तुम्हारे मुझे किसी का भरोसा नहीं, अमीरहसन का भी ताल्लुक़ मैंने छोड़ दिया।

जान्स—प्यारी ! तुम इस क़दर मत घबराओ जहां तक इन्सानी कोशिश है मैं तुम्हारे बचाने के लिये उठा न रक्खूंगा।

मेम—अगर हिदायतरसूल कुछ रुपया देने से मोआफ़िक़ हो सके तो उसकी भी कोशिश करनी चाहिये।

जान्स—मगर वह हवालात में है वहां कोई नहीं पहुँच सकता।

मेम—क्या ऐटकिन्स तुम्हारे साथ अब तक है ? ।

जान्स—हां।

मेम—वह बड़ा ख़राब आदमी है और सख़्त निमकहराम। उसको फ़ौरन् निकाल दो उसके साथ रहने से मुझ को तरह २ के खदशे हैं।

जान्स—मैं ख़ुद वाक़िफ़ हूं कि वह आदमी निहायत खुदमतलबी है, इस मुक़द्दमे के बाद मैं उसको जवाब दे दूंगा, अभी निकालना ख़िलाफ़मसलहत है, कहीं दुश्मनों से न मिल जाय।

मेम—अब दुश्मन कौन है ? ।

जान्स—हां यह सच कहती हो सिवाय सर्कार के अब कोई दुश्मन नहीं रहा, अमीरहसन के भाई और ससुर

की कोई अदावत बाक़ी नहीं रही, मुझे कोई रंज बाक़ी न रहा, गवर्मेंट चोरी के मुक़द्दमे में मुद्दई है और वह कलकत्तेवाला सौदागर आता होगा वह कोशिश करेगा।

मेम— खैर कुछ ही हो मुझे इस बला से बचाओ तमाम उम्र तुम्हारी फर्माबर्दार रहूंगी।

जान्स— यह साबित करना कुछ मुश्किल न होगा कि हिदायतरसूल ने तुम्हारे हाथ यह ज़ेवर फ़रोख्त किये।

मेम— ज़ेवर बहुत कीमती हैं यह कैसे साबित कर सकूंगी कि मैंने वाजबी कीमत उनकी हिदायतरसूल को दी। कम कीमत पर ख़रीदारी भी मैंने सुना जुर्म है।

जान्स—हिदायतरसूल हमेशा कम कीमत पर ज़ेवर फ़रोख्त किया करता है। थोड़े दिन हुये हज़ारों रुपये के ज़ेवर जो मिस्टर अमीरहसन अपनी बीबी से मांग लाये थे दस हज़ार को फ़रोख्त किये। तुम भी यह साबित कर सकती हो कि हिदायतरसूल ने वह ज़ेवर अमीरहसन के बतलाये थे।

मेम— इसका क्या जवाब मुमकिन होगा कि आगरा छोड़ कर हिदायतरसूल कलकत्ते क्यों गया?।

जान्स— तुम नाहक इस क़दर घबरा रही हो मैं सब साबित करादूंगा। मिस्टर कालविन के आते ही मुक़द्दमे की सूरत बदल जायगी।

मेम— मेरी रिहाई की सिर्फ़ दो सूरतें हैं, एक यह कि हिदायतरसूल अपना बयान बदल दे और यह कहे कि उसने बीस हज़ार को मेरे हाथ ज़ेवर फ़रोख्त किये और कीमत पाई। प्यारे! मैं सच कहती हूं कि हिदायतरसूल ने यह ज़ेवर मेरे हाथ फ़रोख्त किये और मुझसे दाम लिये मुफ्त नहीं दिये थे लेकिन हां यह सच है कि उस ने मुझसे बतला दिया था कि मसरूक़ा हैं, और कीमत भी कम ली थी।

जान्स—और दूसरी तर्कीब क्या है?।

मेम - वह बहुत मुश्किल है और शायद तुम्हारे किये न हो सके।

जान्स—मैं सुनूं तो सही! जहांतक मेरा इमकान है मैं तुम्हारे लिये कुछ उठा न रक्खूंगा, हाय मुझे अफ़सोस होता है कि हम लोगों ने यह फ़िसाद क्यों उठाया!!!।

मेम— अब तुम्हारे पछताने से क्या होता है जो होना था हो चुका।

जान्स— अच्छा वह दूसरी तदबीर बतलाओ, मुझे इलाहाबाद जानेको अ-रुदो है और अभी बहुत से इन्तजाम करने हैं बशर्त इमकान हिदायतरसूल से भी मुलाकात करनी है।

मेम— दूसरी तरकीब यह है कि कलकत्ते से जो गवाह आते हैं साफ़ इ-न्कार कर जायँ और कह दें कि हम ज़ेवर नहीं सिनाख्त कर सकते और यह वह ज़ेवर नहीं है जो चोरी गया था। इसमें उस सौदागर का कुछ नुक-सान नहीं उसके इज़हार भी अबतक कहीं नहीं हुये हैं, बहुत करे पांच सा-त हज़ार रुपैया और ले ले।

जान्स—वाक़ई यह निहायत उम्दा तदबीर है पार्सी होते भी लालची हैं अजब नहीं जो बुडढा जौहरी मान जाय, बहरहाल मैं अब जाता हूं तुम हर तरह इतमीनान् रक्खो। इतने में तो-प की आवाज ने बारह बजने की खबर दी और पहरे के कान्स्टेबिलों की भी नोकरी तबदील हुई और मिसेसजान्स कीमुन्तज़िर आंखों ने दूरहीसे देख लि-या कि उनका नौजवान दोस्त ख़ाकी वर्दी पहने लाल पगड़ी बांधे रप रप करता चला आ रहा है; मिस्टर जान्स के जातेही मेमसाहबा दर्वाजे के पास आ खड़ी हुईं कान्स्टिबिल ने भी नीची नज़रों से अपनी माशूका को ग़ौर से देखा।

मेम— 'तिरछी नज़रों से न देखो आशिके दिलगीर को'।

कान्स्टिबिल— इसवक्त सब लोग देख रहे हैं, मौक़ा नहीं है आप मुझसे बातें न कीजिये वर्ना सब राज़ फ़ाश हो जायेगा।

मेम— बुतों को जो देखा गुनह क्या हमारा। खुदा की खुदाई तमा-शा हमारा।

कान्स्टिबिल— मुझको आप से ब-हुत बातें कहनी थीं मगर इस वक्त सब लोग इधरही देख रहे हैं जब सब आ-दमी हट जायँगे तब आप दर्वाजे के पास आ जाइयेगा।

मेम— मुझसे बातें करने में कोई नाराज़ न होगा, तुम जानते हो दस रुपया रोज़ गार्ड को देती हूं यह क्यों? इसी लिये कि मेरी बातों में कोई मु-ज़ाहम न हो, तुम कुछ न डरो।

कान्स्टिबिल— रात जो मुझ से क-हा था अबतक आप उस पर तयार हैं न?।

मेम—मैं किस तरह जिगर चीर कर तुमको दिखला दूं और किस तरह अपनी मोहब्बत का तुम्हें यक़ीन दिलाऊं तुम चाहे मुझे झूठी और जालसाज़ समझो, लेकिन खुदा को दर्मियान देती हूं कि मैंने तुमसे एक बात भी गलत नहीं कही।

कान्हिविल—क़सम न खाओ मुझे तुम्हारा एतबार है, खुदा चाहेगा तो सब सामान हो जायगा।

मेम—बतलाओ क्या इरादे हैं?।

कान्हिविल—मैं रात भर इस बात को सोचता रहा, मैं हर तरह तैयार हूं कि आज आप को इस मुसीबत से रिहाई मिले।

मेम—मैं बहुत खुश हूं कि मेरी मेहनत रांयगां नहीं हुई और तुम्हारे भोले भाले दिल में भी किस क़दर असर पैदा हुआ, अब यह बताओ कि भागने की क्या फ़िक्र है और तुमको कामिल यक़ीन है कि हम लोग अपने इरादे में कामयाब हो जायँगे?।

कान्हिविल—दो तदबीरें हैं, एक यह कि बारह बजे रात को जब सब सो जायँ मर्दाने भेस में हम तुम दोनों निकल चलें सुबह होने से पेश्तर किसी गांव में पहुँच जायँगे और दिन भर वहां रह के फिर रात को चल देंगे, इसी तरह दस पांच रोज़ में किसी मुकाम महफ़ूज़ में पहुँच जायँगे। दूसरी तदबीर यह है कि गारद के हेड कान्हिविल और सिपाहियों को चार पांच सौ रुपये रिश्वत दे दिये जायँ और उनके इलम से हम लोग भाग जायँ।

मेम इन सब को राज़ी करने में बहुत खतरे हैं इसका जाननेवाला सिवा मेरे और तुम्हारे दूसरा नहीं होना चाहिये मुझे तुम्हारे साथ इत्तफ़ाक़ है, एक हिन्दुस्तानी मर्दाना जोड़ा कपड़ा मेरे लिये लेते आना मैं उसको पहन लूंगी। पगड़ी बांध लूंगी और माथे में टीका लगा लूंगी, हर शख्स मुझे खत्री समझेगा और किसी तरह पहचान न सकेगा।

कान्हिविल—एक राय और मेरे ज़ेहन में आती है, एक तेज़ इक्का खरीद कर शहर के किनारे खड़ा कराऊं रात को हम तुम चल कर उसी पर सवार हों और जिस क़दर तेज़ मुमकिन हो भगा कर रात में कम से कम चालीस मील निकल जायँगे।

मेम—हां यह राय भी अच्छी है

मोल लेने की ज़रूरत नहीं, किराये पर ठहरा लो।

कान्हिबिल— मगर किराये में इक्केवाला साथ न छोड़ेगा और उससे राज़ अफ़शां हो जायगा।

मेम—हां यह बारीकी मेरे ज़ेहन में भी आई थी, यह लो चार सौ रुपये के नोट हैं जिस तरह चाहे इन्तज़ाम करो मैं अपना जान माल सब तुम्हारे सपुर्द करती हूं।

कन्हिबिल— मैं जब तक ज़िन्दा हूं तुम्हारा फर्माबरदार हूं अपने ऊपर मुसीबतें झेलूंगा पर तुमपर रंज न आने दूंगा। मैं उन लिफ़ाफ़ेबाज़ों की तरह नहीं हूं कि मुसीबत के वक़्त में सब साथ छोड़ गये।

मेम— मेरे प्यारे दोस्त मुझको तुम पर पूरा भरोसा है, अगर भरोसा न होता तो मैं अपना जान व माल एक दिन की मुलाकात में सपुर्द न कर देती।

कान्हिबिल— मैं जानता हूं कि तुमने एकबारगी क्यों मुझसे राज़दिल कह दिया।

मेम—तुम अभी लड़के हो-नादान। 'आंख छिपतीही नहीं यारी की'।

कान्हिबिल— मगर आप क्यों अपनी तमाम उम्र की ऐश खो रही हैं मैंने सुना कि आपका एक मुक़द्दमा खारिज़ हो गया खुदा चाहेगा तो दूसरा मुकद्दमा भी तय हो जायगा।

मेम— अब तुम मुझसे इस बात में ज़्यादा बातें न करो।

इश्क़ में तेरे कोहे गम सर प लिया जो हो सो हो। ऐश व निशात ज़िन्दगी छोड़ दिया जो हो हो सो॥

कानिह्बिल— अच्छा मैं थोड़ी देर में पहरा बदलाकर जाता हूं और सब इन्तज़ाम ठीक करके बारह बजे आऊंगा और इस तरह आपको भगा ले जाऊंगा कि किसी को कानों कान ख़बर न होगी, तुमको जो चीज़ें साथ ले चलना मंज़ूर हो अलग कर रखना मगर बहुत बोझ न हो।

मेम— मैं क़ीमती चीज़ें मसलन् सोने की घड़ी अंगूठियां, ज़ेवर और नोट दो चमड़े के बेगों में रखलूंगी बाक़ी सब यहीं छोड़ जाऊंगी। पलँग पर एक कपड़ेकी लांबी गठड़ी इसतरह बनाकर सुला जाऊंगी कि देखनेवालों को सुबह तक शुबहा रहे कि मिमसाहब

सो रही हैं। जबतक मुंह से कोई चादर न उठायेगा खुदा चाहेगा ख़बरही न होगी कि मेमसाहबा बँगले में हैं या चल दीं।

कानिष्टबिल—मैं भी जमादार से छुट्टी ले लूंगा कि मेरे एक दोस्त की शादी है बारह बजे रात को पहरा बदलवा कर बारह बजे दिन तक ग़ैर हाज़िर रहूंगा जिसमें मेरी भी तलाश न हो।

मेम—और मैं ख़ानसामां को बुला कर रातही को हुक्म दूंगी कि कल जब तक मैं किवाड़ा न हिलाऊं कोई अन्दर कमरे के न आये, मगर अभी तुम नातजर्बाकार और कम उम्र हो ख़बरदार इस राज़ को अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार से ज़िक्र न करना।

कानिष्टबिल—क्या मजाल; ज़बान काट डालिये जो यह बात मुंह से निकल जाय। क्या आप नहीं समझतीं कि इसमें मेरा कितना बड़ा नुकसान है, ख़ुद मुझपर मुक़द्दमा क़ायम होगा, वारन्ट जारी होगा, इश्तिहार होगा, यह होगा, वह होगा मगर मैं सब कुछ तुम्हारे वास्ते गवारा कर रहा हूं। आज शायद बुध का दिन है बुध निहायत मनहूस होता है ख़ासकर ऐसे कामों के लिये बेहतर नहीं, कल के लिये यह काम मुलतवी रक्खा जाय।

मेम—अच्छा क्या मुज़ायका, मैं भी मैजिस्ट्रेट साहब को चिट्ठी लिखकर इजाज़त हासिल करती हूं और जो असबाब इस किस्म का है कि मैं साथ नहीं ले जा सकती उसको नीलाम करादूंगी, जो हाथ लग जाय वही ग़नीमत है।

नौजवान अलीमुन्ना पर मिसिज़ जान्स का मन्तर ऐसा असर कर गया था कि उसको सिवा मेमसाहब के किसी का ख़्यालही न था। उसके मंसूबे में भाग जाना कोई दुश्वार बात न थी और वह इस उमीद पर निहायत मसरूर था कि दो रोज़ बाद ऐसी साहबे दौलत औरत उसके क़ाबू में आनेवाली है। सोचते२ एक नई बात उसके ज़ेहन में आई कि यह औरत तो ईसाई है और मैं मुसल्मान, अगर वह शादी पर आमादा हो तो मेरा निकाह कैसे हो सकेगा दूसरे उसके दो ब्याह पहले हो चुके हैं ऐसी औरत से शादी जायज़ है या नहीं। पहरे से फ़राग़त पातेही उसने पहला काम यह किया कि राहे

निशात और मालाबदमन: वग़ैरह जितनी मसैले मसायल की किताबें उसके पास थीं सब ढूंढ डालीं जब कहीं पता न चला कि ऐसे मामले में क्या करना चाहिये तो उसने मौलवी कर्म-रसूल साहब से यह मसला दर्याफ्त किया।

मौलवी साहब बड़े मुकद्दस और सिनरसीदा आलिम थे और अलीमुल्ला के पड़ोस में रहा करते थे।

कर्म रसूल— औरत ग़ैर मुसलिम और मर्द मुसलिम का निकाह ना जा-याज़ है।

अलीमुल्ला— और अगर वह औ-रत मुसल्मान होजाय?।

कर्मरसूल— उस हालत में निकाह जायज़ में कोई शक नहीं।

अलीमुल्ला— मगर उस औरत के पहले दो शौहर ज़िन्दा हैं।

कर्म रसूल—शौहरान ग़ैर मुसलम?

अलीमुल्ला— जी हां।

कर्म रसूल— अगर वह शौहरान ग़ैर मुसलिम उस औरत के साथ मुस-ल्मान होने से मुनकिर हैं तो ऐसी हा-लत में औरत को अख्तियार है कि किसी मर्द मुसलिम के साथ अपना अ-क़्द कर ले।

अलीमुल्ला— मगर उन शौहरान में से एक मुसल्मान है।

कर्म रसूल— और औरत इसवक़्त तक ग़ैर मुसलिम है?।

अलीमुल्ला— जी हां।

कर्म रसूल— वह अक़्द ना जायज़ था और इसी लिये ऐसा समझना चा-हिये कि गोया वक़ूय पज़ीर नहीं हुआ वह अक़्द —

अलीमुल्ला— तो आप की राय में वह औरत अगर मुसल्मान हो जाय तो उसके साथ शादी जायज़ है।

कर्म रसूल— बेशक वल्ला आलम बिस्सवाब।

अलीम उल्ला को मौलवी साहब के फतवे से बेहद खुशी हुई वह खुशी से आपही आप बेचैन हुआ जाता था ज्यों ज्यों वक़्त गुज़रता था उसके दिल बेकरार पर बिजलियां गिरी पड़ती थीं उसकी हालत बजिन्स इस शेर की म-सदाक थी।

सब्र रुख़सत हो तो जाने दीजिये।
बेकरारी आये तो ठहराइये॥

उसके दोस्त आशना सब मुतहैय्यर थे कि दफ़तन उसकी मिज़ाज और उसकी

हालत में कैसा तग़ैय्युर आगया वह क्यों आपही आप हँस देता है? कौन ऐसी ख़ुशी है जो उसको रह २ कर गुदगुदा देती है? और वह हँसने लगता है, बाज़ आदमियों ने दर्याफ्त भी किया मगर अलीमुल्ला ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने एक तेज़रफ्तार इक्का भी ठहरा लिया मगर इस ख्याल से कि राज़ अफशां न होजाय, इक्केवाले से ख़रीदारी का कोई तज़किरा नहीं किया, सिर्फ़ यह कह दिया कि उसके एक दोस्त को इक्के की कल ज़रूरत होगी अगर कोई किरायावाला मांगे तो न देना।

इधर मेमसाहबा ने एक शब का मौक़ा बहुत ग़नीमत समझा और अमीरहसन के यहां से जो असबाव आया था उसकी एक फ़िहरिस्त बनाई सिर्फ़ मामूली कपड़ों को रहने दिया और बाक़ी सब दर्ज फ़िहरिस्त कर दिये। फ़िहरिस्त बनाकर साहब मैजिस्ट्रेट को हस्ब ज़ैल चिट्ठी लिखी।

जनाबमन्!

आप ग़ालबन् वाक़िफ़ होगये होंगे कि सैयद अमीरहसन से और मुझसे अब कोई वास्ता नहीं रहा और मेरा शौहर ग़रीब आदमी है मुझ पर जो मुक़द्दमा दायर है उसकी पैरवी के लिये मुझको रुपये की ज़रूरत है। सैयद अमीरहसन से मुझे कोई उमेद नहीं और न मेरा कोई इस्तहक़ाक़ है अपने शौहर को भी मैं ज़ेरबार नहीं करना चाहती। मेरे पास ज़रूरत से ज्यादा असबाब और कपड़े हैं मैं चाहती हूं कि उनके नीलाम से जो रुपया वसूल हो सके वह मेरी पैरवी में काम आवे और मैं उससे बैरिस्टर मुक़र्रर करूं आप बहैसियत एक सच्चे ईसाई के मेरे ऊपर रहम कीजिये और नाज़िर को हुक्म दीजिये कि डांक बँगले में आकर नक़्द कीमत पर मेरा असबाब फ़रोख्त कर दें।

आपकी वफादार

एलिस जान्स

मिस्टर मावेल ने इस चिट्ठी का कोई जवाब मेमसाहबा के पास नहीं भेजा मगर नाज़िर को तैनात कर दिया और उसने तमाम शहर में मुश्तहिर कर दिया कि मिसेज़ जान्स का बहुत क़ीमती असबाब नीलाम होनेवाला है; चार बजे शाम को सदहा आदमी जमा हो गये असबाब नीलाम होना शुरू हुआ। तीन हज़ार तीन सौ रुपये को सब असबाब

फरोख्त हुआ और मिसेज़ जान्स की फ़र्माइश से नाज़िर ने करन्सी नोट मँगवाकर उनके हवाले करदिया, मिसेज़ जान्स बहुत खुश थीं कि यह रुपया खूब हाथ लगा वर्ना सब असबाब मुफ्त जाया होता।

बाब सैंतालीसवां।

जान्स की मजनूनाना कोशिशें।

जान्स बेचारा हर तरह अपनी प्यारी एलिस के छुड़ाने पर आमादा था, वह ऐसा सीधा और नेकमिज़ाज शख्स था कि एलिस की हर बात यक़ीन कर उसपर अमल करने की पूरी कोशिश करता। हिदायतरसूल के रूबराह लाने की ख्वाहिश अपनी बीबी से सुन कर डांकबँगले से सीधे जेलखाने पहुँचा वहां अहलकारान जेल से मिलकर और पचास रुपया खर्च करके मियां हिदायतरसूल की मुलाक़ात हासिल की। हिदायतरसूल हवालात में जाने से निहायत मुतरद्दुद थे अंगरेजों की सादिक उलएकरारी का उन्हें हमेशा से एतक़ाद न था अपना हवालात भेजा जाना भी वह उन्हीं चन्द अज़ीम बद अहदियों में दाखिल करते थे जो इब्तदाय क़याम सलतनत से आजतक उन के ख्याल में ब्रटिश अफ़सरों से सर्ज़द हुई, हवालात में भी हिदायतरसूल का कोई पुर्सां हाल न था बल्कि आम तौर पर लोगों को उनसे एक क़िस्म की नफ़रत थी और अहलकारान जेलखाना भी उसको निहायत शरीर और मुफ़सिद तसौव्वर करतेथे, मिस्टर जान्स की ख्वाहिश मुलाक़ात सुनकर सबको ताज्जुब हुआ।

दारोगा— अजी जनाब आप उस मुफ़सिद से क्यों मिलते हैं कहीं आप को भी न फँसा दे।

जान्स— नहीं मुझे इसका इतमीनान है आप कुछ तरद्दुद न करें।

दारोगा— मगर मुझे ज़रा भी इतमीनान नहीं, कहीं साहब मैजिस्ट्रेट ज़िला से न कह दे कि दारोगा ने साहब से मुलाकात करा दी थी तो उलटी बातें गले पड़ें।

जान्स— मैं इसका भी जिम्मादर हूं हिदायतरसूल किसी से ज़रा भी तज़किरा आज की मुलाकात का न करेंगे।

दारोगा ने जान्स को उस कमरे में जाने की इजाज़त दी जहां मियां हिदायतरसूल मुकीम थे। साहब मैजिस्ट्रेट

ज़िला ने साफ़ अलफ़ाज़ में हुक्म जारी कर दिया था कि हवालात में हिदायतरसूल को खाने पीने की तकलीफ़ न होने पावे और न उनसे बर्ताव इस क़िस्म का किया जाये जैसे ज़ेर तजवीज़ हवालात क़ैदियों से होता है इसलिए एक कमरा दफ़्तर के क़रीब मियां हिदायतरसूल के क़याम के लिये दियागया था और हिदायतरसूल को आम इजाज़त थी कि अपने खाने पीने का जो चाहें इन्तज़ाम करें और जो चाहें खायें पीयें।

हिदायतरसूल— आ हा, जान्स साहब! मिज़ाज तो अच्छा है, वल्लाह आप के देखने को आंखें तरस्ती थीं।

जान्स— आप तो ख़ूब ख़ुश हैं ?।

हिदायतरसूल—भई सच पूछो तो किस मर्दूद को ज़रा भी ख़ुशी हो। एक तो वह बेचारी आफ़त में फँस गई दूसरे हमको अपनी भी ख़ैर नज़र नहीं आती फ़िरंगियों का मामला है ख़ुदाही आबरू बचावे।

जान्स—आप सुना हमसे और मेम साहब से सुलह हो गया। हम अपना वाला मुक़द्दमा ख़ारिज करादिया और मेमसाहब भी सैयद अमीरहसन को साफ़ जवाब लिख दिया।

हिदायतरसूल—आहा! यह कब? ख़ुदा हवालात का मुंह काला करे ऐसे २ मुज़दे भी यहां सुनाई नहीं देते। जान्स साहब बहादुर! मुबारकबाद अर्ज़ करता हूं।

लिल्लाह अलहम्द मियां ने मनओज़ सुलह फ़िसाद।

जान्स—मगर मेरे नजदीक अभीलड़ाई और सुलह दोनों एक है।

हिदायतरसूल— क्यों क्या कोई और ख़दशा है ?।

जान्स— नहीं और कोई ख़दशा नहीं, मगर ज़ेवरवाले मुक़द्दमे की जो अभी पख़ लगी हुई है, यार उससे रिहाई करा दो तो तमाम उम्र तुम्हारे एहसान से बाहर न हूंगा।

हिदायतरसूल—भाई वह तीर तो हाथ से निकल गया, वल्लाह! अब मैं ख़ुद पछताता हूं लेकिन मेरे किये कुछ नहीं हो सकता मैं अगर ज़रा बयान बदलता हूं तो वह टेढ़ी आहनी मेख़ मेरे लिये तयार है कि इलाही तेरी पनाह जनाब मेरे पीछे बड़ा अड़ङ्गा लग गया मैं चूं व चरा नहीं कर सकता।

जान्स — आप यह कह सकती हैं कि मेम साहबा के हाथ आपने ज़ेवर फरोख्त किए थे मुफ्त नहीं दिये थे।

हिदायतरसूल — सुनिये जनाब आदमी पहले अपने घर चिराग़ जलाता है तब ख़ाना ख़ुदा में, मैं अपनी आबरू बिगाड़ कर किसी दूसरे की आबरू नहीं बना सकता चाहे इस्में साहब बहादुर हों या मेमसाहब।

जान्स — आप यह भी कह सकते हैं कि अमीरहसन की बीबी के ज़ेवर जिसतरह आप की मार्फत फरोख्त हुए वैसेही यह ज़ेवर भी आपने मेम साहबा के हाथ बेचे।

हिदायतरसूल — बजा इर्शाद हुआ इससे बेहतर सलाह कोई काहे को देगा! किबलये आलम! मैंने भी ज़माना देखा है और मैं भी नौ महीने मां के पेट में रहा हूं मुझे लौंडा न बनाइये मैंने जो बयान साहब बहादुर से उस रोज़ किये हैं उनके सिवा एक लफ्ज़ दूसरा न कहूंगा हां अगर मेम साहबा को आप बचाया चाहती हैं तो उसकी और तदबीरें हैं। पिन्हन जो सौदागर से मिलिये कुन्दन तवायफ से मिलिये वह लोग कह दें कि हम ज़ेवर नहीं पहचानते, झगड़ा गया।

जान्स — क्या मालूम वह लोग कब आयेंगे और कहां ठैरेंगे मुझे आज इलाहाबाद जाना है।

हिदायतरसूल — यह मुझसे पूछिये; आज दो बजे की गाड़ीमें सबलोग आवेंगे और नई सराय में ठहरेंगे। साहब मजिस्ट्रेट बहादुर के पास तार आया है वह आज सुबह को यहां तशरीफ लाये थे मुझसे सब हाल बतला गये आप फौरन् तशरीफ ले जाइये और उनलोगों से मिलिये; सौदागर को अगर ज़ेवर की कीमत का इतमीनान हो जायेगा तो वह शिनाख्त से इनकार कर देगा किसी की आबरू बिगाड़ने से उसका कुछ फायदा नहीं।

जान्स — मगर आप क्यों आबरू बिगाड़ने पर आमादा हैं?।

हिदायतरसूल – जनाब पहिले आपही ने मुझे आमादा किया; साहब तक ले गये सब बातें लिखवाईं अब आपही उलटी शिकायत करती हैं।

आपही ज़ुल्म करो आपही शिकवा उलटा। सच है साहब रविश उलटी है ज़माना उलटा॥

जान्स — मौलवी साहब आप की

मुलाकात को हम इतनी दूर से आये और ऐसी दिक्कत उठा कर आप से मिले कुछ तो आप भी रियायत का वादा कीजिये। मेम साहब को आप से बड़ी २ उम्मीदें हैं।

हिदायतरसूल— साहब बहादुर मैंने आपसे साफ़ अर्ज़ कर दिया कि अपने पैर में कुल्हाड़ी मार कर कोई ज़ी-अक्ल दूसरे की मदद नहीं कर सकता।

जान्स—और अगर आप को काफ़ी मोआविज़ा मिले तब भी आप मदद न करेंगे?।

हिदायतरसूल— काफी मोआविज़े की आपने ख़ूब कही। कोई लाख दो लाख तो आप देने से रहे और हज़ार दो हज़ार पर मैं जान जोखिम करने से रहा।

ग़रीब जान्स हिदायतरसूल की मुलाकात से किसी क़दर मायूस हो गया क्योंकि हिदायतरसूल ही इस मुकद्दमें की जड़ था, बहर हाल पिस्न जी और कुन्दन के भरोसे पर उसने अपने दिले नाशकेब को तक़वीयत दी और आगे बढ़ा, ठीक दो बजे सरायमें पहुँचा क्या देखा कि तीन चार मुसाफ़िर एक कोठरी में मुक़ीम हैं और उन्हीं के क़रीब दूसरी कोठरी में एक हसीन औरत ठहरी है। जान्स समझ गया कि पार्सी सौदागर तनहा नहीं आया बलकि बहुत से गवाह साथ लाया है, जान्स ने आगे बढ़कर दर्याफ़्त् किया।

जान्स— मिस्टर पिस्न जी किस का नाम है?।

पिस्न जी— मेरा नाम है--आप कौन साहब हैं और मेरे क्यों मुतजस्सिस हैं?।

जान्स— मिज़ाजशरीफ, मैं भी कलकत्ते का रहनेवाला हूं आप की आमद सुनी इस वजह से यहां मिलने चला आया।

पिस्न जी— आप की इनायत व निवाज़िश।

जान्स— आप को सरां में बहुत तकलीफ होगी मैंने एक ख़ास कोठी ले रक्खी है और उसमें चार कमरे बिलकुल खाली हैं आप उसी मे चल कर कयाम कीजिये।

पिस्न जी— हम लोग एक मुकद्दमें मे आये हैं और बहुत से आदमी हमारे साथ हैं इस वजह से माफ़ कीजिये।

जान्स—जिस मुक़दमें में आप आये हैं उसी मुक़दमेंमें मैंभी आया। हां, बल्कि अगर ईमान से पूछिये तो यह मुकद्दमा मेरीही ज़ात से निकला और इतनी मुद्दत के बाद जो आप का ज़ेवर मिल गया यह भी मेरी बदौलत है इसकी तसदीक साहब मजिस्ट्रेट ज़िला कर सकते हैं। आपने अगर इनाम का इश्तहार दिया हो तो दर असल उसका मुस्तहक मैं हूं मगर मैं आपसे रुपये नहीं चाहता।

पिल्हनजी—पहले आप अपनी तारीफ बयान कीजिये और मुफस्सिल हालात बतलाइये तब मैं दिल खोल कर आपका शुक्रिया अदा करूं।

जान्स—मेरा किस्सा तूल है, मुख़तसर यह है कि हिदायतरसूल जिसने चोरी की थी और जिसने जेवर मिसेज़ जान्स के हाथ फरोख्त किये थे सब से पहले वह मुझसे मिला और उसने सब हालात बतलाये मैं उसको साहब मजिस्ट्रेट के पास ले गया, तलाशी में आपके जेवर मिल गये, मिसेज़ जान्स मेरी ज़ौजा थी लेकिन मुझसे चन्द रोज़ से कुछ रंज था उसने धोखे में हिदायतरसूल से जेवर ख़रीदे अब वह भी गिरफ्तार है।

पिल्हनजी— अगर आप मजिस्ट्रेट के पास न ले जाते तो हिदायतरसूल इसको इत्तिला किसी को न देता।

जान्स – हर्गिज़ नहीं

पिल्हनजी—हिदायतरसूल कहां है?

जान्स—वह हवालात में है मगर परसों छूट जायगा उसने अपने को कैसरहिन्द का गवाह करार देकर बरीयत का वादा हासिल कर लिया था और मुकदमा सिर्फ लेडी पर है जिसने उसे ख़रीदा।

पिल्हनजी— यह निहायत ज़ुल्म और सख्ती की बात है।

जान्स—आपसे मुझे पहले मिलने का इत्तफाक नहीं हुआ मगर सूरत से शरीफ मालूम होते हैं (अगूंठी देख कर) और शायद फ्रीमेसन् भी हैं।

पिल्हनजी— आप भी फ्रीमेसन हैं?

जान्स – जी हां—

नाज़रीन शायद फ्रीमेसन के मुताल्लिक ज्यादा हालत सुने के मुशताक होंगी—यह एक मोअज्जिज़ जलसे का नाम है जिसके मेम्बर मेसन (जिसके लफ्ज़ी मानी मेमार के हैं) कहलाते हैं यह लोग दावीदार हैं कि हज़रत

सुलेमान के वक्त से इस जलसे का वजूद है और उसके मिम्बरों में पहले आपुस में बहुत मुहब्बत हुआ करती थी और जो अच्छे शरीफख़ेयाल मेसन हैं वह अब तक एक दूसरे से मोहब्बत और रस्म रखते हैं ग़रीब मिम्बरों की मदद करते हैं और सब तरह शरीकहाल रहते हैं। हिन्दुस्तानियों में इसकी निस्बत तरह २ की रवायतें मशहूर हैं। कोई कहता है कि फ्रीमिसनों पर भूत मुसल्लत हो जाते हैं कोई कहता है कि जादू कराया जाता है इसलिये वह राज़ अफ़शा नहीं कर सकते मगर यह सब वाहियात है असली बात यह है कि वहां कोई राज़ही नहीं है जो छिपाने के लायक हो सिर्फ अलामात शिनाख्त और इलफाज़ शिनाख्त छिपे रखने के काबिल हैं और सिवा उसके जो फ्रीमिसन हो चुका हो गैर आदमियों को कोई मेसन नहीं बतला सकता फ्रीमिसनी से मज़हब में कोई नुक्स नहीं आता और हर मज़हब का आदमी अपना ईमान और मज़हब कायम रख कर फ्रीमेसन हो सकता है। यह जलसा दर असल एक शोशल जलसा है और हमदर्दी इन्सानी और असूले इखलाकी के तरक्की देने को कायम हुआ था जिसने ऐसी तरक्की की कि दुनिया में किसी जलसे या सुसाइटी को नसीब नहीं। ख़ान्दान शाही के तमाम मोअज़्ज़िज मिम्बर मेसन हैं और हमारे हजूरपुरनूर प्रिंसआफवेल्स लन्दन के जलसे आज़म के मीरमजिलिस हैं। हिन्दुस्तान में चन्दरोज़ से इसकी बहुत तरक्की है पहिले तो सिर्फ मोअज़िज लोग शरीक किये जाते थे लेकिन अब करीब २ हर शख्स जो सौ सवासौ रुपये सर्फ करे बा-आसानी फ्रीमेसन हो सकता है।

बहर हाल मिस्टर जान्स व मिस्टर पिस्तनजी दोनों फ्रीमेसन थे और इस गैरमुलक में अपना एक हमख्याल और हममिल्लत पाकर बहुतहीखुश हुये और तपाक से मिले—

जान्स—ब्रादर पिस्तनजी, तुम यहां तकलीफ न उठाओ और मेरी कोठी पर उठ चलो।

पिस्तनजी— एक औरत मेरे साथ है वह भी गवाह है उसी को शाहज़ादी बनाकर वह बदमाश ले गया था।

जान्स—बड़ा चालाक था हिदायत-

रसूल को आप देखेंगे तब कहेंगे कि किस बला का आदमी है।

पिछनजी—मगर यह बड़ा अफसोस है कि वह बदमाश जो असल खुतावार है सज़ा से बच जायगा और ग़रीब लेडी के सिर जायगी।

जान्स—यह भी उसकी चालाकी और शरारत की एक दलील है।

पिछनजी—वह लेडी आपकी ज़ौजा है?

जान्स—जी हां, गुस्सा बुरी बला होता है देखिये खुद मेरे हाथ से मेरी ज़ौजा इस बला में गिरफ्तार हो गई।

पिछनजी—फिर आप उस लेडी को क्योंकर बचा सकते हैं?

जान्स—उसका बचाना आप के हाथ में है।

पिछनजी—क्योंकर?

जान्स—आप ज़ेवर की शिनाख्त से इनकार करदें तो कोई मुकदमा नहीं चल सकता।

पिछनजी—मगर मेरा रुपया मारा पड़ेगा।

जान्स—इसका मैं इतमीनान कर दूंगा और अगर आपको यों एतबार न होगा तो मैं प्रामेसरी नोट उस तादाद के आपके सपुर्द कर दूंगा जब ज़ेवर अदालत से वापस मिल जायें हम लोग आपको हवाला कर देंगे।

पिछनजी—मगर अदालत से आपको नहीं मिलेगा ज़ब्त हो जायगा।

जान्स—ज़ब्त कैसे हो सकता है मिसेज़ जान्स उस ज़ेवर को अपना माल बतायेंगी और शहादत से हमलोग साबित करेंगे कि वाक़ई यह ज़ेवर मिसेज़ जान्स का है हिदायतरसूल का बयान झूठा है। मसरूका जेवर कोई और होगा मगर मिसेज़ जान्स के पास से जो ज़ेवर निकला वह मसरूका नहीं है।

पिछनजी—ब्रादर जान्स! मुझे तुम्हारी इज्ज़त और आबरू बचाने में ज़रा उज़र नहीं, लेकिन मैं अपने साथी गवाहों से मश्विरा कर लूं तब आप को जवाब दूं। यह नहीं चाहता कि आप का नुकसान हो लेकिन यह भी जायज़ नहीं रख सकता कि कोई दूसरा मुकद्दमा हमलोगों पर एखफ़ाय शहादत के लिये कायम हो।

जान्स—अगर आप पर कोई आंच आती होती तो मैं खुद हर्गिज़ ऐसी दर्ख़ास्त न करता।

पिह्नजी—आपने बैरिस्टरों से सलाह ली उनकी क्या राय है ?

जान्स—मैं आज इलहाबाद जाने वाला हूं और मिस्टर कालविन से मश्विरा लूंगा और उन्हें अपने साथ लाऊंगा मैंने एक दोस्त को कलकत्ते भी तार दिया है कि मिस्टर मनमोहन घोस को भेज दें।

पिह्नजी—आपने जेवर पहलेही मेरे पास क्यों न भिजवा दिये जो इस क़दर तरद्दुद की नौबतही न आती।

जान्स—जनाब पहले तो मिसेज़जान्स से रंजिश थी वह मेरी सलाह कब मान्ती। उसकी रूबराह करने को यह तदबीर सोंची गई थी मगर अफसोस अब बात का बतंगड़ हो गया।

पिह्नजी—आप की बीबी क्या इस्दर्जा बदमिज़ाज हैं।

जान्स—जी नहीं बदमिज़ाज नहीं हैं, मगर मैं अर्सा तक बर्म्हा में रहा मेरे पीछे उसको चन्द लोगों ने मुझसे मुनहरिफ कर दिया, लेकिन अब वह पूरे तौर पर मेरे बस में है और मेरी एतायत को मौजूद है अगर खुदा इसकी आजमाइश का मौक़ा दे।

पिह्नजी—और वह मुकद्दमा कौन है जिसके हालात अख़बारों में छपे हैं किसी मेम की शादी के बाबत कोई हिन्दुस्तानी डिप्टी कलेक्टर माख़ूज़ हो रहा है।

जान्स—वह मुकद्दमा भी इसी मुकद्दमे की शाख़ था मगर मैंने उसको ख़ारिज करा दिया।

पिह्नजी—अच्छा अब आप जाइये रोबकारी के पेश्तर मुझसे फिर मिलियेगा। उस वक्त मैं साफ़ साफ गुफ्तगू करूंगा अभी अपने हमराहियों के मश्विरे बिगैर मैं कोई वादा नहीं कर सकता।

जान्स—और आप इसी सरा में रहेंगे मेरी कोठी में क़याम न करेंगे ?

पिह्नजी—मेरे नज़दीक जब तक यह मुकद्दमा तै न हो ले मेरा आपसे अलाहदाही रहना मुनासिब है।

पिह्नजी के हमराह उसके दो भतीजे मानिकजी व बहरामजी थे। यह लोग लायक़ और कानूनदां और बी, ए, बी, यल, थे मगर अपने आबाई पेशए तिजारत को नौकरी या वकालत पर ज्यादातर तरजीह देते थे, जैसे ही उन्होंने अपने बूढ़े चचा से यह क़िस्सा सुना इस मअ्मले पर सख्त नफ़रत ज़ा-

हिर की।

मानिकजी— मैं ऐसी वाहियात बात की कभी इजाज़त नही दे सकता आप बुज़ुर्ग हैं और तजरबाकार हैं मगर इन क़ानूनी राज़ों से वाक़िफ़ नहीं इसमें सख़्त ख़तरात हैं।

बहरामजी— यह सलाह है कि ज़ेवर भी हाथ से जाये और मुकद्दमा भी फौजदारी में क़ायम हो।

पिस्टनजी— मिस्टर जान्स ने किसी बदनीयती से यह ख़्वाहिश ज़ाहिर नहीं की, इसका मुझे यक़ीन है।

जान्स – मेरे नजदीक इसमें कोई ख़तरा नहीं जब मैं आप को ज़ेवर के लिये दस्तावेज़ लिख देता हूं और अपने प्रामिसरी नोट सपुर्द किए देता हूं तो रुपये का ख़तरा कहां रहा, बाक़ी रहा इलज़ाम क़ायम होने का डर। उसकी निस्बत भी मैं कह सक्ता हूं कि आप का तरद्दुद फ़ुजूल है अभी तक किसी अदालत में आप के इज़हार नहीं हुये और न आप को ज़ेवरात की शिनाख़्त का मौक़ा दिया गया, अगर आप इनकार कर दें तो कोई महल इश्तबाह नहीं है।

बहरामजी— मिस्टर जान्स! गो आप की सलाह बज़ाहिर ख़तरनाक न हो लेकिन रास्ती अजब चीज़ है और बेसबब आदमी को सीधा रास्ता छोड़ कर ख़तर्नाक पगडण्डियों में बहकना नहीं चाहिए।

जान्स— अगर एक ग़रीब का फ़ायदा होता हो तो कारे ख़ैर के लिए थोड़ी तकलीफ़ गवारा करना कुछ बड़ी बात नहीं।

पिस्टनजी— आप इन नौजवानों से क्या गुफ़्तगू कर रहे हैं मैं आप से हमदर्दी करता हूं मगर ग़ौर करने के बाद यह रास्ता वाकई ख़तरनाक है मैं आप के इर्शाद की तामील से मजबूर हूं।

जान्स— अगर कोई वकील आप का इतमीनान करा दे कि इसमें कोई ख़दशा नहीं है तब आप मुतमैयन हो जायेंगे।

मानिकजी— जनाब अगर ख़ुद मजिस्ट्रेट मुतमैयन कर दें तब भी हम लोग राज़ी न होंगे आप इन बातों से शायद वाक़िफ़ नहीं ज़ेवरात का हुलिया ज़ेवरात की तसवीर सब पुलिस कोर्ट में मौजूद है अब इनकार करने से सिवा इसके कि हम लोग दरोग़

हलफ़ी और एख़फ़ाये शहादत में पकड़े जायें और क्या नतीजा होगा।

बेचारा जान्स वहां से भी मायूस होकर वापस आया गर्नर और ऐटकिन्स ने दर्याफ्त किया कि कहां थे जान्स ने ऐटकिन्स से तो असली हालात नहीं बतलाये मगर गर्नर को अलहदा ले जाकर कुल क़िस्सा सुनाया।

गर्नर— मैं शुरू से कह रहा हूं कि यह मुक़द्दमा संगीन है और इसमें कोई उम्मेद रिहाई की नहीं। सिर्फ़ इतना भरोसा है कि जूरी शायद हिन्दुस्तानियों को झूठा समझे और मुद्दालहा पर रहम करे।

जान्स— इलाहाबाद से मिस्टर कालविन को ज़रूर लाना चाहिए वह सवालात जिरह में कुल गवाहों को तोड़ लेंगे और जहां फौजदारी मुक़द्दमें में ज़रा शक पड़ा कि मुद्दालहा के हक़ में फायदा हो जाता है।

गर्नर— मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं।

जान्स— एलिस से मिलकर इस वक़्त तक जो कार्रवाई हुई है बतला दीजिये वह बेचारी मुन्तज़िर होगी।

——

बाब अड़तालीसवां।

रिश्वत का इलज़ाम।

गर्नर और जान्स फिर डांकबँगले पहुँचे देखते क्या हैं कि हज़ारहा आदमी जमा हैं नाज़िर खड़ा है हर एक चीज़ पर वन टू कर रहा है।

गर्नर— डांकबँगले में क्या आज कोई सौदागर आया है यह भीड़ कैसी है?।

गर्नर—(नज़दीक पहुँचकर) यह तो एलिस के कपड़े नीलाम हो रहे हैं।

जान्स और गर्नर ने नाज़िर से सब हालात दर्याफ्त किये और जाकर एलिस से मुलाक़ात की।

जान्स— तुम अपने कपड़े और ज़रूरी चीजें क्यों नीलाम करा रही हो?।

मेम— सब चीजें फ़ुज़ूल पड़ी थीं अगर मैं क़ैद हो जाऊंगी तो सिवा इसके कि कीड़ों की नज़र हों और इन्हें कौन इस्तमाल करता?

जान्स—प्यारी तुम ऐसी मायूस क्यों हो, ख़ुदा मदद करेगा।

मेम— मायूसी के तो हज़ारों वजूह हैं उमीदका तुम एकही सबब बताओ।

जान्स— मैं हिदायतरसूल और

पिस्टनजी दोनों से मिल आया हूं।

मेम— फिर हिदायतरसूल ने क्या कहा ?

जान्स— उसने साफ़ जवाब दिया।

मेम— और पिस्टनजी ने ?

जान्स— बुढा बेचारा तो तैयार था मगर उसके साथ दो नौजवान निहायत शरीर बदबातिन और मुफसिद मालूम होते हैं उन्हों ने ऐसी उलटी पट्टी पढ़ा दी कि बनी बनाई बात बिगड़ गई अब उनसे भी कुछ मुझको उम्मेद नहीं।

मेम— फिर तुम मुझे क्यों झूठी उम्मेदें दिला रहे हो अब मेरे बचने की कौन तदबीर है, कोई नहीं। जान्स तुमने यह सब बला मेरे सिर डालीं अगर तुम हिदायतरसूल को आमादा न करते तो मैं इस ग़ज़ब में न मुबतिला होती; तुमने मेरे साथ दुशमनी की और कमीनों की तरह मुझको नावाक़िफ रख कर तुमने मुझ पर हमला किया, ऐ जान्स तुमने यह क्या किया ?

जान्स— मेरा इसमें बहुत थोड़ा क़ुसूर है जिसके लिये मैं खुद ग़मज़दा हो रहा हूं अब मैं बेरिस्टर करने इलाहाबाद जाता हूं और ख़ुदा चाहेगा तो मिस्टर कालविन को लाऊंगा।

गर्नर— बेटी घबराव नहीं खुदा की मर्ज़ी पर शाकिर रहो, कालविन के आतेही मुक़द्दमे की सूरत फिर जायगी।

मेम—कालविन हों या जेक्सन, अब मेरी रिहाई की उम्मेद बाकी नहीं।

जान्स— तुम नाहक़ घबराई जाती हो और तुम्हारे घबराने से हमलोगों के भी हाथ पांव फूले जाते हैं, अभी देखो हाईकोर्ट में मिसेज़ निकलिस कैसी साफ़ छूट गई तमाम ज़माना उनका दुशमन हो रहा था और कैसे २ मोअज़िज़ों ने उनके खिलाफ़ गवाही दी थी, मगर हाईकोर्ट में जूरियों ने साफ़ बरीयत की राय देदी।

मेम— निकलिस अमीर आदमी था उसके लाख दो लाख भी खर्च हो जाते तो क्या पर्वाह थी, हाय मुझ ग़रीब बेकस और लावारिस के लिये दो चार हज़ार भी खर्च करनेवाला कोई दिखाई नहीं देता।

जान्स—एलिस तुम सख्त ज़ालिम और बेरहम् हो यह इलफाज़ तुम्हारे मुंह से हर्गिज़ जेबा नहीं हैं हमलोग जहां तक मुमकिन है दौड़ धूप कर

रहे हैं और उस बूढ़े मनेजर को राज़ी करने के लिये तो मैं यहां तक मुस्तैद था कि कुल जेवर के एवज़ अपने प्रामिसरी नोट दिये देता था मगर कम्बख़्त न मानना था न माना ॥

मेम—बहर हाल अब मुझे मेरे ख़ुदा पर छोड़ दो तुमलोगों की तो वही मस्ल हो रही है—

दौड़े पानी को हैं क्या आग लगानेवाले ॥

जान्स—प्यारी एलिस इस कदर सँगदिली से पिछली खताओं का तज़किरा माफ़ी के बाद नहीं करना चाहिये क्या तुम्हारे पास एक भी अच्छा लफ़्ज़ मेरे लिए नहीं है ।

गर्नर और जान्स दोनों वहां से निकल कर फिर नाज़िर के पास गये जहां असबाब नीलाम हो रहा था ।

जान्स—एलिस बेवकूफ़ी से सब असबाब नीलाम कर रही है ख़ुदाने अगर फ़ज़्ल कर दिया और रेहा हो गई तब एकबारगी सब चीजें ख़रीद करने में सख्त ज़ेरबारी होगी—

गर्नर—मेरी राय मेंभी अभी से कबल अज़मर्ग वावेला करने को ज़रूरत न थी, एलिस के कपड़े बहुत कीमती हैं नीलाम में उनको कौन ख़रीदेगा ।

जान्स—नाज़िर साहब कहिये आपने नीलाम में क्या २ चीजें फ़रोख्त कीं ।

नाज़िर—अभी सिर्फ सीने की कल और छोटी २ कलें नीलाम हो चुकी हैं और सब माल बाकी है, मेम साहब कहती हैं कि आजही सब चीजें नीलाम हो जायँ और कपड़ों का कोई ख़रीदार नज़र नहीं पड़ता, मैं सख्त परेशानी में हूं ।

जान्स—आप कुल चीजें मेरे हाथ फ़रोख्त कर डालिये, मैं तीन हज़ार रुपये इकजाई कीमत दूंगा लेकिन यह शर्त है कि मेमसाहबा को मेरे नाम से इत्तला न दीजियेगा वर्ना वह हरगिज़ इसको मंज़ूर न करेंगी ।

नाज़िर—मुझे किसी के नाम बतलाने की क्या ज़रूरत है आप से ज़्यादा कीमत कोई न देगा मैं नीलाम मुलतवी करके आप के नाम सब चीज़ें ख़तम किये देता हूं ।

जान्स—आप अपना चपरासी मेरे साथ कर दीजिये मैं रुपये उसको दे दूंगा ।

नाज़िर—और यह सब चीजेंकहां

रहेंगी।

जान्स—आप मेहर्बानी करके इन को अभी खान्सामा के सपुर्द कर दीजिये मैं परसों सुबह को मँगवा लूंगा।

नाज़िर—बहुत बेहतर।

गर्नर—तुमने यह असबाब क्यों खरीद लिया, क्या करोगी ?।

जान्स—एलिस के लिये मैंने खरीद लिया और मेरे किस काम का था!।

गर्नर—बहुत अच्छा किया, खुदा एलिस को बरी कर दे तब उसको इस मेहनत की क़द्र होगी।

जान्स—हाय खुदा वह दिन तू कब लावेगा, इस दो तीन दिन में एलिस ऐसी उदास होगई है कि देखे रोना आता है, ऐ खुदा रहम कर और मेरी प्यारी को इस आफ़त से बचा।

गर्नर—एलिसकी हालत देखते हुए मुझे हर्गिज़ यक़ीन नहीं कि जेलखाने में एक दिन भी वह ज़िन्दा रह सके, ज़रूर मर जायगी; इस बुढ़ापे में यह सदमा कैसे बर्दाश्त करूंगा।

जान्स—अभी से फाले-बद मुंह से न निकालो देखो तो क्या होता है।

गर्नर—एक दफ़ा और पार्सियों से मुलाकात करो अगर वह राज़ी हो जायँ तो अभी बहुत कुछ मौक़ा है।

जान्स और गर्नर दोनों सरा में गये और फिर मुलाक़ात की।

जान्स—मिस्टर पिस्तनजी माफ़ कीजियेगा, मैं फिर आपको तकलीफ़ देने आया हूं।

मानिकजी—उमेद है कि इस मर्तबा आप वह सलाह न देंगे जिससे हम सब कैद हों।

जान्स—मैं आप लोगों की दलील बिल्कुल नहीं समझा, शिनाख्त के गवाह इस मुक़द्दमे में सिर्फ़ मिस्टर पिस्तनजी हैं और वह जिसको चाहें अपनी तरफ से पेश करें। इस वक्त तक चोरी के बाद वह ज़ेवर आप लोगों ने कहीं देखे नहीं और न किसी अदालत में आप लोग इज़हार लिखा चुके फिर आप कैसे कहते हैं कि शिनाख्त से इनकार करने में आपको अपनी माखूज़ी का डर है? रहा ज़ेवर की क़ीमत का खदशा, उसकी क़ीमत मैं साफ कह रहा हूं कि अस्सी हज़ार के प्रामिसरी नोट बतौर ज़मानत के दाखिल किये देता हूं अगर वह ज़ेवर मैं आपको न दूं तो मेरे नोट गये और क्या चाहिये?।

मिस्टर मानिकजी ! आप अभी नौ-जवान हैं आपके दिल ने रहम और रियायत का अभी मज़ा नहीं चक्खा, खुदा किसी पर मुसीबत न डाले, मुसीबतज़दों पर हँसना नहीं चाहिये, मैं अहलग़र्ज़ हूं और अहलगर्ज़ मजनूं से बदतर होते हैं।

मानिकजी—मिस्टर जान्स ! आप नाराज़ न हों यह मामला बहुत नाज़ुक है और तनहा मेरे चचा की शहादत पर इसका फैसला भी नहीं हो सकता, असल गवाह कुन्दन रंडी है जो शाहज़ादो बन कर दूकान पर गई थी और जिसने ज़ेवर ले कर हिदायतरसूल को दिए थे।

जान्स—कुन्दन ने मिसेज़ जान्स को नहीं देखा। हां शिनाख्त के बारेमें उस की शहादत ली जायगी मैं उसको राज़ी कर सकता हूं।

पिह्न जी—आप उसके पास भी गया था।

जान्स—नहीं, अगर आप इज़ाज़त दें तो मैं उससे भी मिलूं।

पिह्न जी—अच्छा उसको भी हम यहां बुलाते हैं देखें वह क्या कहती है।

मुसम्मात कुन्दन दूसरे कमरे से अठखेलियां करती हुई आईं। कुन्दन अब तक अपने हुस्न व जमाल पर मगरूर थी उसकी बड़ी २ आंखें, गोरी गोरी रंगत ऊँची पेशानी, पतले २ होंठ, अब तक वैसेही दिलफरेब थे जैसे वह दोबरस पेश्तर थे।

पिह्न जी – कहो बीबी कुन्दन ! तुम्हारा शाहज़ादा अब कब मिलेगा ?।

कुन्दन – मनेजर साहब आप मुझ को कबतक चिढ़ाया करेंगे ! शाहज़ादा गया चूल्हे भाड़ में ! अब मिले तो मूंड़ीकाटे को ऐसा मारूं कि वह भी याद करे।

पिह्न जी—दो तीन रोज़ में मिलेगा आज कल तो हवालात में वह बादशाही कर रहा है।

कुन्दन—खुदा चाहेगा हवालात की बादशाही से जेलखाने की बादशाही करेगा। अल्ला रे दग़ाबाज़ मुझ ऐसी बेज़बान छोकरी को धोखा दिया खुदा उसको धोखा दे।

जान्स—तुम हिदायतरसूल को पहिचान लोगी जब देखोगी ?।

कुन्दन—उसकी सूरत भूल सकती है? अभीतो दोही बरस गुज़रे हैं दो सौ

बरस के बाद भी मैं देखूं तो पहिचान लूं वह प्यारा २ चेहरा आंखों में घूम रहा है !

पिल्हन जी— अहा हा रे तेरी मुहब्बत !

जान्स— और वह चूड़ियां और अँगूठियां तुमको दिखाई जायँगी वह भी पहिचान लेगी ? ।

कुन्दन— बेशक आपने मुझको समझा क्या है आपकी मेहरबानी से अच्छे अच्छों से मेरी भी सोहबत रही है ।

पिल्हन जी— भला तुमको अगर कोई कुछ रुपया दे और कहे कि अपना बयान बदल दो तो क्या करो ? ।

कुन्दन— जलती झाड़ू से उस मूंड़ीकाटे का मुंह झुलसा दूं ।

बी कुन्दन की बातों पर सब लोग हँस रहे थे और हमारे दोस्त मिस्टर जान्स की मायूसी लहज़ा बलहज़ा बढ़ रही थी कि इतने में कोतवाल साहब तशरीफ लाये ।

कोतवाल— (जान्स से) अजी साहब बहादुर आप यहां कहां ? ।

जान्स—मैं भी चला आया यह सब लोग कलकत्ते के रहनेवाले हैं और मैं भी आज कल वहीं रहता हूं ।

कोतवाल— कहीं गवाहों को बिगाड़ न दीजियेगा मुझे आपके हालात मालूम हो चुके हैं ।

जान्स— आपको इसमें बुरा न मानना चाहिए जिस पर मुसीबत पड़ती है वह अपने बचाने कि कोशिश करताही है ।

कोतवाल— मगर जनाब गुस्ताखी माफ़ आप आदमी नहीं तमाशा हैं पहिले आपही ने मुकद्दमा उभाड़ा, साहब मैजिस्ट्रेट से मुखबरी की और अब आपही रिहाई के लिये पैरवी कर रहे हैं ।

जान्स—आपही गौर फ़र्माइए मेरी हालत कैसी नाज़ुक हो रहीहै और इस वास्ते मैं जो कुछ करूं काबिल एतराज़ नहीं गुस्से की हालत में जो न होता थोड़ा था मगर अब न वह गुस्सा रहा और न वह अदावत, अपनी हर्कत पर पछता रहा हूं और कुछ करते धरते बन नहीं पड़ता । कोतवालसाहब आप ही कुछ मदद कीजिए आप भी शरीफ हैं और हम भी परदेसी मुसाफिर ।

कोतवाल-इटावा एक निहायत मुस्तैद और तजरुबाकार पुलिस अफ़सर

था, सब हुक्काम उससे रज़ामन्द थे और उसकी तरक्की के साई थे। वह बहु-मुतदैयन या रास्तबाज़ न था लेकिन निहायत मोहतात और होशियार था रिश्वत औवल तो शाज नादर लेता था और जब लेता था बड़ी रकम। इस वजह से उसकी कोई बदनामी भी हुत काम में न थी एक तदबीर उसको और भी मालूम थी। हमेशा अपने मातह-तों को रिशवतसतानी से बाज़ रखता था और इस दर्जा निगरानी करता था कि आम तौर पर सब लोग उसकी स-ख्ती के शाकी रहते थे मगर हुक्काम ब-हुत रजामन्द। जान्स ऐसे सीधे और भोले आदमी को ठगना कोई बड़ा मुश्किल काम न था। शहर में यह बात तो मशहूर भी है कि जान्स रुपये वा-ला आदमी है और अपनी जोरू के इश्क में ऐसा परेशान है कि उसकी रिहाई के लिए हर तरह की तदबीरें कर रहा है। जान्स की बेकरारी और बुखलाहट ने कोतवाल को और भी यक़ीन दिलादिया कि इस से कुछ न कुछ वसूल हो सकता है।

कोतवाल— साहब बहादुर आप हम से अलग २ रहे वर्ना अब तक कोई सूरत आपकी हसूल मतलब की ज़रूर निकल आती देखिए दर्या में रह कर मगरमच्छ से बैर मुनासिब नहीं होता।

जान्स— मैं अपनी मुसीबत में मुब-तिला था और आपसे कभी मुलाका-त का इत्तफाक भी नहीं हुआ था इस वजह से हाजरी की जुरअत नहीं की।

कोतवाल— खैर 'देर आयद दुरुस्त आयद' अब भी कुछ नहीं गया है।

जान्स— मैं हर तरह तैयार हूं।

कोतवाल— आप गवाहों के बि-गाड़ने की फ़िक्र न कीजिए सिर्फ़ मुझसे मिलना काफी है मैं सब दुरुस्त कर लूंगा।

जान्स फिर किस वक्त हाज़िर होऊं मैं आज इलाहाबाद जानेवाला हूं।

कोतवाल— इसी वक्त हमारे साथ चलिए।

गर्नर और जान्स कोतवाल के हम-राह हुये।

जान्स – जिस मुसीबत में हम लोग गिरफ्तार हैं खु़दा दुश्मन को न नसीब करे।

कोतवाल— बेशक बहुत सख्त् मा-

भला है और आपका तरद्दुद हक बजानिब है ।

जान्स— कोई तदबीर रिहाई की आप बतला सकते हैं ?।

कोतवाल— तदबीरें तो मुझे ऐसी२ मालूम हैं कि पहिली ही पेशी में रिहाई हो जाय लेकिन उसमें ज़र कसीर खर्च होगा दो चार सौ रुपये से काम नहीं चल सकता ।

जान्स— आप खर्च की फिक्र न करें मैं अपनी कुल दौलत इस मुक़द्दमे पर निसार करने को मुस्तैद हूं ।

कोतवाल— पांच हज़ार पांच सौ रुपये आप मुझे दीजिये और यह न पूछिये कि मैं किस को दूंगा और क्या करूंगा । मेमसाहब रिहा न हो जावें तो मेरा ज़िम्मा । आप पुलिस के हथखंडों से वाकिफ़ नहीं, ऐसा जोड़ तोड़ फड़काता हूं कि चारो शाना चित्त ।

जान्स—आप इसका ठीका लेते हैं?

कोतवाल— मुझको एक बात को बार २ कहने की ज़रूरत नहीं, आपको गर्ज़ हो दीजिये वर्ना रुख़सत हूजिये आपको शरीफ़ और नेकबख़्त समझ कर मुझे भी रहम आगया था वर्ना मेमसाहब के जेलखाने जाने से मेरा सिवा फायदे के नुकसान ही क्या !।

जान्स— तो मैं अब वकील मुख्तार कुछ न करूं ?।

कोतवाल— एक वकील ज़रूर कर दीजिए वर्ना सब लोग शक करेंगे, आप इन बारीकियों को नहीं समझते ।

जान्स— बहुत अच्छा, मगर इलाहाबाद जाने की ज़रूरत नहीं यहीं किसी को कर लूंगा ।

कोतवाल— इलाहाबाद ज़रूर जाइये और एक बैरिस्टर लाइये । अंगरेज़ का मुक़द्दमा अंगरेज़ही खूब समझता है ।

जान्स— आपने कौन तदबीर सोची है ? मैं भी सुन लूं ।

कोतवाल— आप इस कदर बे चैन क्यों हुये जाते हैं मैं सब गवाहों को हमवार कर लूंगा ।

जान्स—बेशक यही तदबीर मुनासिब है, मैं ख़ुद इस फिक्र में था मगर मेरे कहने से कोई आमादा नहीं हुआ ।

कोतवाल—पांच हज़ार रुपया मुझे नकद चाहिए और पांच सौ के नोट, क्योंकि रुपया सब गवाहों में तकसीम करना होगा वह लोग नोट न लेंगे सिर्फ पांच सौ रुपया इसमें मुझको मिलेगा।

जान्स— बहुत बेहतर, मैं अभी जाता हूं और इन्तज़ाम कर लाता हूं।

इसवक्त कोई जान्स की खुशी देखे चेहरा है कि बाग़ २ हो रहा है गुंचा दिल ख़ुद बख़ुद खिला जाता है।

जान्स— कोतवाल झूठा आदमी नहीं मालूम होता उसके कहने से यक़ीनन् सब गवाह शिनाख़्त से इनकार कर देंगे।

गर्नर— हां कोतवाल आदमी चालाक और ज़ी-अख़्तियार मालूम होता है शहर में इसका बहुत भारी रोआब है, जान्स के पास नोटों की कमी न थी मगर हां रुपया मौजूद न था उसी वक्त ख़ान्सामा की मार्फ़त पांच हज़ार रुपये के नोट फ़रोख़्त करके नकद रुपया मँगवाया और दस बजते २ कोतवाल साहब के पास एक नोट कीमती पांच सौ रुपया और पांच तोड़े दाख़िल कर दिये। कोतवाल ने पांचों तोड़े उसी वक्त अपने ख़िदमतगार की मार्फ़त कहीं भेजवा दिये सिर्फ़ पांच सौ रुपयेवाला नोट अपने कमरेमें रहने दिया। तीस मिनिट के बाद एक कान्स्टिबिल को पुकार कर हुक्म दिया कि शेख़ राहतअली और हबीबउलरहमान को बुला लाओ। यह लोग कोतवाली के करीब रहते थे और बिसातखाने की तिजारत करते थे, जब यह लोग भी आ गये कोतवाल साहब ने वह नोट उठाया और ग़ौर से देखा।

कोतवाल— हां साहब यह नोट आप किस वास्ते लाये हैं आप चाहते हैं कि मेमसाहबा छूट जायें।

जान्स— हां कोतवाल साहब अब मेरी और कोई ख्वाहिश नहीं सिर्फ़ मेमसाहब की रिहाई चाहता हूं।

कोतवाल— आप अहलयूरुप अंगरेज़ होकर मुझको रिशवत देना चाहते हैं, हम यह नोट साहब मैजिस्ट्रेट के पास भेज देंगे और आपके ऊपर मुक़द्दमा कायम करायेंगे, हम बेईमान या राशी नहीं हैं।

जान्स— कोतवाल साहब! आप कैसी बातें कर रहे हैं?।

कोतवाल— हम अच्छी बातें कर रहे हैं हम रिश्वत लेकर आपकी मेमसाहबा को नहीं छोड़ सकते आपको शायद मालूम नहीं कि रिश्वत देना और लेना दोनों जुर्म है।

गर्नर— हमको यह सब मालूम है लेकिन जिस तरह आपने पांच हज़ार

कबूल किये यह पांच सौ और भी ले लीजिये ।

कोतवाल— जनाब आप के इलज़ाम लगाने से अब कुछ नहीं हो सकता पांच हज़ार नहीं आप पांच लाख कहिये आप के कहने से क्या होता है । बन्दा इसीवक्त रिपोर्ट करता है । मियां राहतअली और मियां हबीबउलरहमान आप दोनों साहबों को गवाह रहना होगा कि यह अँगरेज़ मुझको रिश्वत देता था ।

जान्स और गर्नर दोनों सख्त परेशान थे कि क्या करें हरचन्द कोतवाल की खुशामद करते थे मगर वह कब मानता था उसने उसवक्त जान्स को रुखसत किया और साहब मैजिस्ट्रेट को रिपोर्ट कर दी कि जान्स मुझको पांच सौ रुपये देता था और वह नोट भी रिपोर्ट में नथी कर दिया । नोट पर जान्स का दस्तखत और तारीख़ भी कोतवाल ने लिखवा ली थी इसलिये बेचारा इन्कार नहीं कर सकता था और उसकी दो घंटे पेश्तर जो मसर्रत हुई थी सब खाक में मिलगई और उलटीं बातें गले पड़ीं ।

गर्नर— कोतवाल बड़ा हरामज़ादा निकला और कैसी चाल चली, रुपया भी मार लिया और सर्कार में नेकनाम भी रहा । वाह रे उस्ताद! जान्स मुझको इस मुक़द्दमे में तुम्हारी भी ख़ैर नज़र नहीं आती ज़रूर मुक़द्दमा क़ायम होगा ।

जान्स— आजकल क़िस्मत बहुत बर्गश्ता है जो काम करता हूं उलटा हो जाता है अब क्या करूं ? ।

गर्नर— मेरे नज़दीक फ़ौरन् इलाहाबाद जाओ और वहां से कोई बैरिस्टर बुला आओ वर्ना ख़ैर नहीं ।

बेचारा मुसीबतज़दा जान्स मय अपने बूढ़े और बेवकूफ़ ससुर के इलाहाबाद गया और जितने नामी वकील मिल सके सब से मुलाकात करके अपने और अपनी बीबी के हालात बतलाये । मिस्टर कालविन या मिस्टर स्पाङ्की और एस्टन जो फ़ौजदारी के काम में नामी और गिरामी हैं इलाहाबाद में न थे, किसी मुक़द्दमे में जौनपुर गये थे बैरिस्टरों में सिर्फ़ मिस्टर टासन इलाहाबाद में थे उनसे भी मुलाकात की और चार सौ रुपये रोज़ पर उनको इटावे लेजाने पर मुस्तैद किया दो रोज़ का मेहन्ताना भी पेशगी दे दिया, जुम्मा की रोज़ जान्स इलाहाबाद पहुँचा

और दोशख्स को रोबकारी थी सनो-चर और एतवार दो रोज़ दर्मियान में थे वह चाहता था कि उसी रोज़ इटावे लौट आवे बैरिस्टर ने कहा कि हमारे साथही चलना चुनांचे यही राय मुनासिब समझी गई।

——

बाब उनचासवां।

मेमसाहबा चल दीं।

जबतक मिष्टर जान्स इलाहाबाद से लौटें लौटें नाज़रीन जरूर मुश्ताक होंगे कि उनकी मेमसाहबा हवालात में क्या कर रही हैं। अस्वाब के नीलाम हो जाने से मिसेज़ जान्स को जो तरद्दुद हो रहाथा उसमें बहुत कमी होगई और वह इस बात से बहुत खुश थीं कि भागते भूत की लँगोटी अच्छी ख़ासी मिल गई। अपने जदीद दोस्त के धुन में वह ऐसी मगन थीं कि हवालात का कयाम जरा भी उसे नागवार न था, सुबह से बारह बजे तक वह इस इन्तजार में बसर करती थी कि उसके बांके कान्स्टिबिल का पहरा दो पहर से शुरू होगा; दोपहर से तीन बजे तक और इसी तरह बारह बजे शब से तीन बजे सुबह तक जिस मसर्रत से मेम साहबा काटती थीं उसकी हालत उन्हीं के दिल से पूछिये जिस रोज जान्स इलाहाबाद गया मेम साहबा शामही से अपने दोस्त कान्स्टिबिल की मुन्तज़िर थीं बार २ घड़ी देखती थीं और कहती थीं कि ऐ खुदा आज बारह क्यों नहीं बजतेऔर मेरायार क्यों नही आता। उतने में घड़यालोने गजर नहीं बजाया बल्कि मिसेज़जान्स के माशूक की आमद में सलामी की तोपें सर कीं या यों कहो कि उसकी आमद की मसर्रत में नौबत बजी।

अलीमउल्ला को दीदबाजी का बड़ा चसका पड़ गया था, उसकी आंख ठिकाने नहीं रहती थीं, मेमसाहबा ने फ़ौरन् किवाड़े खोल दिये और अपने नौजवान दोस्त को कमरे में बुला लिया।

मेम—कहो आज क्या कर लाये ?।

कान्स्टिबिल— सब इन्तज़ाम दुरुस्त है आपने तो मना कर दिया नहीं आजही भाग चलते।

मेम – मैं इस वक्त तैयार हूं अगर तुम मुझे ले चलो, मालूम नहीं कल क्या हो अब देर न करो।

कान्स्टिबिल— इक्के वाले से मैंने

कल के लिये कहा है आज कैसे इन्त-जाम हो सकता है कल इस वक्त खुदा चाहेगा हमलोग बहुत दूर पहुँच जायंगी।

मेम—आज का काम कल पर उठा रखना अक्ल के खिलाफ़ है, प्यारे ! देर न करो दिन को खुदा जाने कल क्या हो और मौक़ा मिले या न मिले ।

कान्हिबिल—इस वक्त इक्का कैसे मिलेगा ? ।

मेम—कुछ मुश्किल नहीं, इक्का ज़रूर मिल जायगा कहो क्या कहती हो।

कान्हिबिल—मैं तैयार हूं ।

मिसेज़ जान्स ने सिर्फ़ दो चमड़े के छोटे २ बेगों में कुल क़ीमती ज़ेवर अशर्फियां और करेंसी नोट और घड़ी रख लीं बाक़ी सब चीज़ें जो फ़रोख्त से रह गई थीं हसरत भरे दिल और आंसू भरी आंखों से डांकबँगले में छोड़ दीं, अपना लिबास ज़नाना वहीं छोड़ा और एक सफेद छींट का चूड़ीदार पायजामा सफेद कुर्ता और उसपर एक नैनसुख का मर्दाना कोट ज़ेबबदन किया और एक सफेद पगड़ी भी सिर में बांध ली और मर्दाना बूट पहना । अलीमुल्ला ने कहा कि तुम इन हिन्दुस्तानी कपड़ों में भी कैसी खूबसूरत मालूम होती हो, उसपर मिसेज़ जान्स ने खुश होकर जवाब दिया, हां इस लिबास में मुझे कोई नहीं कह सकता कि मैं हिन्दुस्तानी नहीं हूं । तैयारियां हो चुकीं, अलीमुल्ला आये, इधर उधर बाहर निकल कर देखा सब सो रहे थे मेम साहब ने अपनी बिस्तर को इस तरह पलँग पर फैला दिया जैसे मालूम हो कोई सचमुच सो रहा है, खुद अलीमुल्ला के हमराह डांकबँगले से बज़बान हाल दाग़ के यह ग़ज़ल पढ़ती हुई निकल खड़ी हुईं ।

गज़ल ।

इस अंजुमन से बहुत बेक़रार हो के चले । सहर हो के हम आये खुमार हो के चले ॥ बुतों के कूचे से हम दिलफ़िगार हो के चले । शिकारी हो के हम आये शिकार हो के चले ॥ तेरी निगाह बहुत मस्त है सम्हल के ज़रा । समन्द नाज़ो अदा पर सवार हो के चले ॥ ठहर गये वह जहां सर्वबाग़ थे गोया । अगर चले तो नसीम व बहार हो के चले ॥ इलाही जायँगे किस घर यह हमने वहशतनाक । बिहिश्त से भी अगर बेक़रार हो के चले ॥ वह त-

फ्तादिल हूं जो दरया में हाथ डालूं मैं। तो मौज बहर यक़ीं है गुबार हो के चले॥ किसी की आंखमें वह इन्तज़ार हो के रहे। किसी के दिल से शकेब व करार हो के चले॥ खबर न हो मुझे वह कुश्तए तग़ाफ़ित्र हूं। जो हश्र भी मेरे ख़्ये मज़ार हो के चले॥ निगाह यार की फिरती है बज़म् से ऐ दाग़। रकीब भी वही यारों के यार हो के चले॥

अलीमुल्ला ने भी थोड़ी दूर चल कर अपनी वर्दी फेंक दी और सफ़ेद कपड़े पहन लिये, चन्द कदम पैदल चल कर एक इक्का किराया किया और एक घंटे में भरथना स्टेशन पर पहुँचे, डेढ़ बजे रेल आई, अलीमुल्ला और मिसेज़ जान्स दोनों थर्ड क्लास के टिकट लेकर इस तरह चुपके से सवार होगये कि किसी ने उनको न देखा, टिकट भी अलीमुल्ला ने इक्केवाले से मँगवाये थे, खुद इस ख़ौफ़ से कि स्टेशनमास्टर शुबहा न करे करीब नहीं गया, टिकट इलाहाबाद तक का लिया, मिसेज़ जान्स ज़रा भी इन्तशार या घबराहट में न थीं मगर अलीमुल्ला सख्त मुज़्तर था और उसके हाथ पांव फूले जाते थे।

मेम— अब हमको और तुमको कोई नहीं पकड़ सकता।

अलीमुल्ला—अभी मुझको पूरा भरोसा नहीं।

मेम— घबराओ नहीं हम लोग करीब सौ मील निकल आये और सुबह हुआ चाहती है और कानपूर करीब है, बेहतर है यहीं उतर पड़ें; रात को फिर आगे चलेंगे, मेरे नज़दीक यही मुनासिब मालूम होता है।

अलीमुल्ला—कानपूर में दूसरा भेस बदलना होगा वर्ना शायद हम लोग पकड़ जायँ।

मेम—तुम घबराओ नहीं थिएटर में कई मर्तबा जोगन का भेस बना चुकी हूं, कानपुर में पहुँच कर नकली दाढ़ियां मोल लेंगी और हम तुम दोनों सूरत तबदील कर लेंगे कोई न पहचान सकेगा।

अलीमुल्ला - तुमने और कुछ देखा?

मेम—नहीं।

अलीमुल्ला—जान्स और गर्नर साहब भी इसी रेल में हैं, दूसरे दर्जे की गाड़ी में मैंने उन्हें देखा है।

मेम—हां ! फिर क्या किया जाय कहीं वह देख न लें ।

अलीमुल्ला — वह सो रहे होंगे अँधेरे में हम लोग उतर चलेंगे ।

थोड़ी देर में कानपूर का बड़ा स्टेशन नमूदार हुआ, लालटैनों की रोशनी आफ़ताब से पेश्तर पर्दा फाश करने की मुस्तैद थी मगर आदमियों की कसरत दोनों मफ़रूरों के आड़े आई और यह दोनों मुसाफ़िर चुपकी से बाबू को टिकट दिखा कर गाड़ी से उतरे और सीधे शहर चले गये ।

मेम - वहां कहां ठहरोगे ? ।

अलीमुल्ला —सरा में ठहरना मुनासिब नहीं क्योंकि मुसाफ़िरों का नाम व निशान पुलिसवाले लिख लेते होंगे, किसी मसजिद में चलो दिनभर कयाम करें रात को फिर चल देंगे ।

मेम —मुझे दो नकली दाढ़ियां खरीदनी हैं वह किसी सौदागर से ले आना ।

अलीमुल्ला—दिन को ख़रीदेंगे कुछ जल्दी नहीं है। दोनों मुसाफ़िर कर्नलगंज की जुमामसजिद में दिन भर रहे, अलीमुल्ला बाज़ार से खाना लाया, मेम साहबा ने चाहा कि अलीमुल्ला भी साथ खाये मगर उसने इन्कार किया ।

मेम – क्यों तुमको मेरे साथ खाने में क्या इन्कार है ? मैं जब अपना माल व जान सब तुम्हारे सुपुर्द कर चुकी तो अब तुम्हें मुझसे नफ़रत नहीं करनी चाहिये ।

मरीज़ मुहब्बत से परहेज़ है ।
यह अच्छा मर्ज़ है यह अच्छा इलाज है ॥

अलीमुल्ला—तुम इस वक्त तक मुसल्मान नहीं हो, ईसाई हो मैं कैसे तुम्हारे साथ खा सकता हूं ? ।

मेम—मैं तुमसे ज्यादा ज़िद्द न करूंगी और तुम्हारे खुश करने को सब कुछ करूंगी देखो मैंने अपना घर बार चैन आराम दोस्त व आशना अज़ीज़ व अकारिब सब तुम्हारे ऊपर निसार कर दिये सिर्फ मज़हब बाकी है वह मुझको तुम्हारे ऊपर फ़िदा करने में उज़्र नहीं ।

अलीमुल्ला—फिर देर क्या है आज ही क्यों नहीं मुसल्मान हो जातीं, देखो मज़हब इस्लाम कितना सच्चा और पाक है ।

मेम—मैं तुमसे मज़हबी बहस नहीं करना चाहती और न उसका कोई

मौक़ा है।

अलीमुल्ला—बेहतर यह है कि तुम मुसल्मान हो जाओ।

मेम—मैं तुमसे किसी बात में बाहर नहीं, मगर मुसल्मान होना छिप नहीं सकता तमाम अख़बारों में आया होगा और इससे हमारी तुम्हारी गिरफ्तारी में पुलिसवालों को मदद मिल जायगी।

अलीमुल्ला—मुसल्मान होने में कुछ शोहरत न होगी तुम कलमा सिदक दिलसे पढ़दो बस मुसल्मान होजाओ।

मेम—मैं निहायत सिदक दिल से 'लाइला अल्ला महम्मदरसूलइल्ला' कहती हूं तो अब तुम खुश हुए?।

अलीमुल्ला ने अपनी मुसल्मा जदीद को यक़ीन दिलाया कि वह अब मुसल्मान होगई, दोनों ने एक साथ खाना खाया। थोड़ी देर बाद अलीमुल्ला ने निकाह का मसला पेश किया वह फर्त शौक से बेचैन था और आतिशे इन्तज़ार से जल रहा था, बकौल शख़्से—

वादये वस्ल चूं शवद नज़दीक।
आतिशे शौक़ तेज़तर गर्दद॥

अलीमुल्ला—अब तुम निमाज़ भी सीख लो।

मेम—मैं निमाज़ पढ़ना जानती हूं और अगर तुम्हारी इसमें खुशी है तो मैं ज़रूर पढ़ा करूंगी।

अलीमुल्ला—मुझे रह २ कर यही ख्याल आता है कि मेरा निकाह तुम्हारे साथ कौन पढ़ेगा, बेशक क़ाज़ी के पास चलने में अफ़शाय राज़ का डर है, गो बग़ैर निकाह के शरह के रू से शादी जायज़ नहीं है मगर निकाह में सिवाय इजाब और क़बूल के और कुछ नहीं होता, जब हम तुम राज़ी हैं तो इससे बढ़ कर और क्या निकाह होगा तुमने सुना नहीं 'जब दो दिल राज़ी तो क्या करेंगे क़ाज़ी'।

मेम—मगर शरह के रू से बग़ैर निकाह शादी जायज़ नहीं है, इसलिये अभी जल्दी न करो मैं तुम्हारी हो चुकी जब कहीं इतमीनान हो और खुदा क़याम का मौक़ा दे तुम मेरे साथ निकाह भी पढ़वा लेना। अलीमुल्ला ने जिसका दिल अब तक इश्क़ के राज़ व नियाज़ से नावाक़िफ़ और जो मुहब्बत की जादूभरी बातों से आगाह न था अपनी माशूका को पहले पहल गले लगाया और जी भर के प्यार किया। मिसेज़ जान्स उस वक्त अपनी हालत के

इनकिलाब को सोच कर बे अख्तियार रो दी, कहां उसका पहला जान्स से पुरशौकत व्याह और कहां वह अमीर-हसन ऐसे मुअज्जिज़ और तालीमयाफ्ता शख्स से अक्द और कहां इस मुफ़लिस और मुसीबतज़दह कान्सिटेबिल से इश्कबाज़ी ! 'ब बीं तफ़ावत रह अज़ कुजा अस्त ताबकुजा' जेलखाने के खौफ और फिर रिहाई के बाद भी जान्स के मिलने के डर ने उसको इस दर्जा घबरा रक्खा था कि उन मुसायब पर तमाम दुनियां की तकलीफों को वह हज़ार आराम के बराबर समझती थी और अलीमुल्ला के साथ भी अपनी उम्र काट देने को तैयार थी। आशिक व माशूक उस रोज़ खुशी से कानपूर में रहे लेकिन मसजिद के अहाते के बाहर कदम नहीं रक्खा जब आफ्ताब ने फर्त खिज़ालत से मूंह छिपा लिया और अँधेरा हो गया, दोनों मुसाफ़िर मसजिद से निकले और पहले एक सौदागर की दूकान पर एक दर्जन मुख्तलिफ अकसाम की डाढ़ियां खरीद कीं और वहां से फिर स्टेशन पर आये। इस मर्तबा अलीमउल्ला एक लम्बी सिक्खों की सी स्याह डाढ़ी लगाये हुये था और उनकी मेम साहबा चढ़ी हुई डाढ़ी चढ़ाये थीं यह मसनवी डाढ़ियां ऐसी नफ़ीस थीं कि दूर से पहिचानना तो मोहाल था करीब से भी शिनाख्त दुश्वार थी। आठ बजे यह लोग फिर रेलमें सवार हुये और दूसरे रोज़ सुबह होने से पेश्तर जबलपूर पहुँच गये, दिन भर जबलपूर में रहे वहां भी मसजिद में जाकर क़याम किया दिनभर आराम के बाद शाम की रेल में सवार हो कर सुबह होते २ बम्बई पहुंच गये।

———

बाब पचासवां।

भागे हुओं की तलाश।

जिस शब को मिसेज़ जान्स हवालात से भागीं पांच बजे सुबह तक किसी को कानों कान खबर न हुई, तीन बजे तक मामूली तौर पर अलीमउल्ला का पहरा था और गार्ड के सिपाहियों का यह कायदा था कि जब पहरा बदलवाने का वक्त हो जाता था एक कानिस्टेबिल दूसरे को जगा कर पहरा बदलवा देता था उस रोज़ अलीमउल्ला तो था नहीं पहरा बदलवाता कौन ? कानिस्टेबिल लोग भी ऐसे घोड़े बेचकर सोये कि पांच बजे तक खबर न हुई

सब से पहिले बुड्ढा नरायनसिंह हेड-कानिसटबिल जगा।

नरायनसिंह—पहरे पर कौन जवान है ?।

एक—अभी तो दो बजे हैं अलीमउल्ला पहरे पर होगा।

नरायनसिंह—दो! क्या बकते हो? सुबह हो गई मैं समझता हूं छ बजा चाहते हैं, जाओ अलीमउल्ला का पहरा बदलवा दो बेचारा बारह बजे से बराबरी ड्यूटी पर है।

भगवानसिंह कानिसटबिल ने उठकर फौरन् वर्दी पहनी और पहरे पर गया क्या देखता है कि डांकबँगले के किवाड़े बन्द हैं और अलीमउल्ला नदारद! कानिसटबिल ने अलीमउल्ला को चारों तर्फ आवाज़ दी इधर उधर पुकारा कहीं पता न चला, आहिस्ते से बँगले के किवाड़े खोले कि शायद कमरे में सो रहा हो वहां भी न देखा घबराकर हेड कानिसटबिल से रिपोर्ट की कि हजूर अलीमुल्ला पहरे से ग़ैरहाज़िर है। हेड कांसिटबिल घबराकर खड़ा होगया सब कांसिटबिलों को साथ लेकर अलीमुल्ला की तलाश शुरू की जब कहीं पता न मिला तब एक कांसिटबिल उस के घर दौड़ाया और खुद डांकबँगले में मेमसाहबा को देखने गया।

नरायनसिंह—मेमसाहब बँगला में है कि नहीं ?।

एक—मेमसाहब सो रही हैं पलँग पर मैंने दूर से देखा था।

नरायनसिंह—मुझे कुछ शक होता है आवाज़ देकर दर्याफ्त करो।

एक—हजूर मेमसाहब! हजूर मेमसाहब!!

नरायनसिंह—भाइयो बड़ा ग़ज़ब हो गया डांक बँगला में कोई नहीं!

सब लोग—नहीं साहब ऐसा क्या अंधेर हो सकता है मेम साहब सोती होंगी!

नरायनसिंह—ख़ान्सामां को बुलाओ अन्दर जाकर देखे। ख़न्सामां ने अन्दर जाकर देखा और निहायत अफ़सोस और ताजुब से हेडकांसिटबिल को इत्तला दी कि मेमसाहब खुदा जाने कहां चली गईं। हेडकांसिटबिल ने फौरन् साहब सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस और मजिसट्रेट ज़िला को इसकी इत्तला दी और रफ्ता २ तमाम शहर में हुल्लड़ हो गया और तलाश मच गई। मजिसट्रेट साहब उस वक्त खुद तलाश में

मसरूफ़ हुये और जहां २ शुबहा था आदमी दौड़ाये गये। मिस्टर अमीरहसन से सिर्फ़ चिट्ठी के ज़रिये से दर्याफ़्त किया; उन्होंने जवाब लिख दिया कि मुझे कोई वाकफ़ियत नहीं और न मुझसे कोई वास्ता है। उनका जवाब काफ़ी तसलीम कर लिया गया और किसी ने उन पर इश्तबाह नहीं किया लेकिन तमाम अहलकारान पुलिस और साहब मजिस्टरेट ज़िला को जान्स पर इश्तबाह था कि वही भगा लेगया। इत्तफ़ाक से कोतवाल की रिपोर्ट कि जान्स उन्हें रिश्वत देना चाहता था और फिर जान्स का इटावे से उस रोज़ ग़ायब होना जब मिसेज़ जान्स गायब थीं इश्तबाहात को बहुत कुछ तकवियत दे रहे थे। मिस्टर मावेल और सुपेरेन्टेन्डेन्ट पुलिस सख़्त् बर्हम थे और हेडकान्स्टिबिल व कानिस्टबिलान मुतैयना गार्ड पर बेहद नाराज़, उस वक़्त हेडकानिष्टिबिल और तीनों कानिस्टबिल हवालात में कर दिये गये और फ़ौरन् कोतवाल शहर व लैनइन्सपेक्टर जान्स की तलाश को तैनात हुये थोड़ी देर में स्टेशन रेल पर पता चला कि रात को जान्स इलाहाबाद गया है, सब पुलिसवालों ने कहा कि हो न हो जान्स ही मेम को भी भगा ले गया। इस ख़्याल पर आम तौर पर सबका इत्तफ़ाक था सिर्फ़ ऐटकिन्स इस की तर्दीद करता था और उसने खुद साहब मजिस्टरेट और कोतवाल से जाकर तर्दीद की मगर उस बेचारे की सुन्ता कौन था। लैन इन्सपेक्टर आगरा की तर्फ़ रवाना हुआ और कोतवाल ने इलाहाबाद की राह ली। इलाहाबाद पहुँचकर उसने जान्स को तलाश करना शुरु किया इतने बड़े शहर में किसी अंगरेज़ का बग़ैर मालूम हुये बे पता व निशान के दर्याफ़्त करना आसान न था, एक दिन बराबर ढूंढ़ता रहा, कूंयें में बांस और बासों में कूंयें डलवाये मगर जान्स न मिला। कोतवाल करीब २ मायूस होकर लौटना चाहता था कि उस रोज़ रेलवे स्टेशन पर मिस्टर गर्नर व जान्स से मुलाकात हुई। कोतवाल ने लपक कर जान्स को रोका, जान्स पहले यह समझा कि उसी रिश्वतवाले मुक़द्दमे में कोई फ़साद खड़ा हुआ है, मगर जैसे ही कोतवाल ने मिसेज़ जान्स की मफ़रूरी का क़िस्सा सुनाया, जान्स के

होश हवास भी भाग खड़े हुए। कोतवाल लाख यक़ीन दिलाता था मगर जान्स को यक़ीनही न आता था।

कोतवाल—जनाबमन, तजाहुल आर्फ़ाना न कीजिये। मेमसाहब आपकी हमराह भागीं और आप न जानें ?।

जान्स—मैं आपसे ईमानन् कहता हूं कि मुझे ज़रा वाकफ़ियत नहीं और मैंने पहले पहल आपसे यह क़िस्सा सुना और मुझे इस वक्त तक यक़ीन नहीं है।

गर्नर—जनाब। आप क्या फ़र्माते हैं यह बात ग़ैरमुम्किन है। आप ऐसे बेवक़ूफ़ न थे जो इस तरह की हर्कत करती।

कोतवाल—यह देखिये उनकी गिरफ़तारी का वारंट है और यह तार है जो साहब सुपरिण्टेण्डेण्ट इलाहाबाद के नाम तार आये हैं।

जान्स—अफ़सोस इस वक्त मेरी सब आर्ज़ूओं का ख़ून होगया। हाय! उस कम्बख़्त की अक़्ल पर पत्थर पड़ गये। और किसने उसको ऐसो बेहूदा सलाह दी।

गर्नर—अफ़सोस!।

मन् दर्चे ख़्यालेम व फ़लक दर्चे ख़याल। कारे के ख़ुदा कर्द फ़लक रा चे मजाल॥

Man proposes but God disposes.

कोतवाल—हम लोगों को आपही पर शुबहा था लेकिन अब इस वक्त मेरा ख़्याल तबदील होगया और आप बेकसूर हैं।

जान्स—यह बात मेरे ज़ेहन् में नहीं आती कि तनहा एलिस क्योंकर भाग जाती।

कोतवाल—तनहा नहीं गई एक कान्स्टिबिल भी ग़ायब है जिसका पहरा था, मालूम होता है उसी के साथ भाग गई। साहब बहादुर माफ़ फ़र्माइयेगा वह औरत सख़्त बदचलन है और हर्गिज़ इस क़ाबिल नहीं कि आप ऐसे नेकमिजाज़ और शरीफ़ख़्याल आदमी की जोरू होती।

जान्स—मैं आपकी सब बातें बर्दाश्त कर सकता हूं लेकिन दिल्लगी या तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकता।

न छेड़ ऐ निघट बादबहारी राह ले अपनी। तुझे अठखेलियां सूझी हैं हम बेज़ार बैठे हैं॥

कोतवाल—जान्स साहब! मैं कोई दिल्लगी नहीं करता और ईमानन् अर्ज़

करता हूं कि अलीमुल्ला कान्स्टिबिल भी ग़ायब है और यक़ीनन आपकी मेमसाहबा के साथ वह भी भाग गया, अलीमुल्ला था भी ख़ुशरू नौजवान।

जान्स—हाय ग़ज़ब! हाय अफ़सोस!! इस क़दर बेहयाई! इस क़दर बेशर्मी!!

जान्स पर इस ख़बर वहशतेअसरका ऐसा असर पड़ा कि वह ग़श खा कर गिर पड़ा, कोतवाल ने पंखा झलवाया, पानी छिड़का और बहुत से बाज़ारी लोग जमा होगये, थोड़ी देर में बेचारे को होश आया।

कोतवाल—आप इस क़दर सदमा न कीजिये, उस बेवफ़ा को देखिये कि आपके साथ कैसी २ बदसलूकियां कीं और आप उसके लिये जान दे रहे हैं।

जान्स—ओफ़ २ अफ़सोस देखिये मैंने यहां उसके लिये बैरिस्टर ठहराये, वकील किये, सब आज रात को इटावे जाने को थे और उसने आख़ीर वक्त में यह धोखा दिया, मैंने वह २ इन्तज़ाम कर लिये थे कि हाईकोर्ट से यक़ीनन् बरी हो जाती। अफ़सोस उसने अपनी बेअकली और कमीनामिज़ाजी से अपनी सब उमेदें ख़ुद मुनक़िता कर दीं और तमाम उम्र के लिये मुजरिमों में अपना नाम लिखा दिया। अलगर्ज़ जान्स व गर्नर इस ख़बर से दिलशिकस्ता होगये और उन्होंने फ़ौरन् अपने बैरिस्टर को इत्तला दी कि अब आपको इटावे चलने की ज़रूरत नहीं है और कलकत्ते भी तार दे दिया कि मुलज़िमा मफ़रूर होगई, बैरिस्टर ने भी तास्सुफ़ किया और जान्स से हमदर्दी का इज़हार। दूसरे रोज़ कोतवाल गर्नर और जान्स इटावे वापस आये और लैन इन्स्पेक्टर भी आगरे की तरफ़ से नाकाम लौटा, कहीं मिसेज़ जान्स का पता न चलता था कि कहां चली गई, जाबजा तार भेजे गये कि एक लेडी मय एक कान्स्टिबिल के इस तरह मफ़रूर होगई। पुलिसगजट में छपने के लिये इश्तिहार भेजे गये, मार्निंगपोस्ट, पायोनियर, नजमुलअख़बार और भारतजीवन में भी इश्तिहार छपवाये गये और गवर्नमेण्ट से एक हज़ार रुपये इनाम गिरफ़्तारी के मंजूर हुए, सब कुछ हुआ मगर मेम साहबा का कहीं पता न था। तारीख़ मोआइने पर मिस्टर मावेल ने पार्सी सौदागर मुसम्मात कुन्दन और हिदायतरसूल का इज़हार क़लमबन्द करके

अपना काफ़ी इतमीनान् करलिया कि हिदायतरसूल का बयान किया हुआ क़िस्सा हर्फ व हर्फ सही है और ज़ेवर ज़रूर मसरूक़ा हैं, ज़ेवर मिस्टर पिसन जी को वापस देते वक्त साहब मैजिस्ट्रेट ने अच्छी तरह समझा दिया कि कलकत्ते से जो गवाह आये हैं इस वक्त सब वापस जायँगे, जब मिसेज़ जान्स गिरफ्तार होंगी उस वक्त फिर तलब किये जायँगे और उनको हाज़िर होना होगा। हिदायतरसूल को भी हवालात से आज़ादी मिली, मिसेज़ जान्स की गिरफ्तारी के लिये एहकाम जारी किये गये और उनपर अलावे उस मुक़द्दमे के जो ज़ेवर की बाबत दायर था हिरासत जायज़ से मफ़रूरी का दूसरा मुक़द्दमा भी क़ायम हुआ। अलीमुल्ला पर भी मुक़द्दमा क़ायम होकर उसकी गिरफ्तारी के लिये भी इश्तिहार जारी किया गया।

नरायनसिंह हेडकान्स्टिबिल और उसके मातहत कान्स्टिबिलों पर नाकर्दागुनाह आफ़त आई वह बेचारे ग़फ़लत के इल्ज़ाम में हस्बदफ़ा २९ पुलिसऐक्ट दो दो माह क़ैद सख्त की सज़ायाब हुए और नौकरीसे बर्खास्तहुए। मिस्टर जान्स पर भी अभी एक आफ़त बाक़ी थी, साहब मैजिस्ट्रेट को गो उस बदनसीब बेचारे पर निहायत तास्सुफ़ था मगर कोतवाल की रिपोर्ट को वह बग़ैर किसी हुक्मके दाखिलदफ्तर नहीं करसकते थे। मिस्टर माबिलने जान्स को बुलवाया, कोतवाल और गवाहान पेशकर्दा पुलिस का इज़्हार क़लमबन्द कर के जान्स की तरफ मुख़ातिब हुए।

मैजिस्ट्रेट—मिस्टर जान्स! मुझको तुम्हारी हालत पर सख्त अफ़सोस है, उस कमीना और बेशर्म औरत ने तुम को यह आख़ीर सदमा दिया, तुम ऐसे शरीफ़ आदमी को ऐसे ख़राब तरीक़े से पैरवी करना मुनासिब न था।

जान्स—जनाब मैं अपनी हालत क्या अर्ज़ करूं, इस सदमे से मुझे यक़ीन नहीं कि मैं ज़िन्दा रह सकूंगा।

मैजिस्ट्रेट—आपने कोतवाल को रिश्वत देनी चाही, इस पांच सौ रुपये के नोट पर आपके दस्तख़त मौजूद हैं।

जान्स—मैं क़ुसूरवार हूं और बदनसीब हूं इसकी हालत ज़्यादा मुझसे न दर्याफ्त कीजिये न मैं उन्हें अर्ज़ करना चाहता हूं और न आप उनको यक़ीन कर सकते हैं।

मैजिस्ट्रेट—अगर आप उनको साबित न कर सकें तब भी मैं सुन कर खुश हूंगा।

जान्स ने जो २ वाकिआत गुज़रे थे वे कमोकास्त बयान कर दिये, उसका तर्ज़ बयान ऐसा पुरदर्द और हसरतआमेज़ था कि मिस्टर माबेल के दिल पर उसने पूरा असर कर लिया।

मैजिस्ट्रेट— इसका साबित होना बहुत मुश्किल है इसलिये मैं कोई कार्रवाई नहीं कर सकता, आपने पांच हज़ार अपनी बेवकूफ़ी के लिये गोया जुर्माना दिया। मैं अब कोई मुक़द्दमा आपके ऊपर न क़ायम करूंगा, यह नोट पांच सौ रुपये का मैं आपही को वापस देता हूं और आपको इस मुक़द्दमे से रिहा करता हूं आप फ़ौरन् कलकत्ते चले जाइये और इस बदज़ात औरत को अपने दिल से भुला दीजिये कि गोया आपने कभी उसको देखाही न था, मुझको आपकी हालत पर सख्त अफ़सोस और आपके साथ कमाल हमदर्दी है।

जान्स—मैं मिस्टर माबेल आपका बहुत शुक्रिया अदा करता हूं और वादा करता हूं कि कलकत्ते जाकर कोशिश करूंगा कि जिस क़द्र मुमकिन हो इस औरत को कि जिसने मेरी बदनामी बर्बादी और तबाही में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रक्खा भुला दूं। मिस्टर माबेल खुदा शायद उसको माफ करे मगर मैं हर्गिज़ माफ न करूंगा।

बुड्ढा गर्नर भी इन वाकिआत से सख्त रंजीदा और शर्मसार था, उसको अपनी बेटी का अमीरहसन से शादी करनाही नागवार था, इस ज़लील कान्स्टिबिल के साथ भाग जाने से उसका दिल और भी टुकड़े २ होगया। ऐटकिन्स गो अबतक जान्स की रिफ़ाक़त में मौजूद था मगर उसका अदमो वजूद दोनों बराबर था क्योंकि इस मुसालहत को शुरूही से वह नापसन्द करता था मिस्टर गर्नर को ज्यादा रंज इस बात का था कि अब इस बुढ़ापे में उसकी पर्वरिश कौन करेगा। जान्स से उसको ज़रा भी उम्मीद न थी और कोई दूसरा सहारा भी न था।

गर्नर—जान्स! अब हम लोग यहां नाहक़ पड़े हैं, बेहतर है यहां से रवाना हों, यहां को गली २ कूचा २ उस की ज़िल्लत और तौहीन का अफ़साना मुझको सुनाता है और मेरा दिल पाश

पाश हुआ जाता है।

जान्स—जोहो अब यहां रहना फुजूल है लेकिन अब फर्माइये क्या इरादा है।

गर्नर—भैया मैं तो कहीं का न रहा सिर्फ़ तुम्हारा और एलिस का सहारा था सो खुदाने उसको इस तरह तोड़ दिया।

जान्स—आप इस मुसीबत में मुझको तनहा न छोड़िये मैं तमाम उम्र आपकी एताअत और फ़र्माबर्दारी को मौजूद हूं मेरा क़स्द इसवक़्त तक उस के फरामोश करने का नहीं है जिस तरह बनेगा मैं उसको ढूंढ़ निकालूंगा और इस जदीद बेवफाई की सज़ा दूंगा

ऐटकिन्स—मेरी राय में अब यह कोशिश बेकार है तुम अदालत से बाज़ाबता इन्फिसा ख़शादी की डिगरी हासिल करलो और उसके बाद अपनी कहीं शादी ठहराओ तमाम उम्र इन फिसादात में ज़ाया करने से कुछ हासिल नहीं।

अलग़रज़ जान्स गर्नर और ऐटकिन्स में देरतक इस बारेमें मुबाहसा रहा, आख़िरकार यह मश्विरा क़रार पाया कि मिसेज़ जान्स के पीछे वक़्त रुपया और खुशी बर्बाद करना फ़ुजूलहै खुद मिसेज़ जान्स के बाप की भी यही राय थी।

जान्स—क्या एलिस ऐसी ज़लील हो गई कि उस कानिस्टेबिल के साथ अपनी ज़िन्दगी काट देगी?।

ऐटकिन्स—मुझे हर्गिज़ यकीन नहीं कि दुनिया में किसी के साथ एलिस दो महीने से ज़्यादा रह सके उस से ज़्यादा सँगदिल बेशर्म और बेवफ़ा औरत मैंने नहीं देखी।

गर्नर—जान्स अब वह तुम्हारे काम की नहीं रही तुम उसका ख़्याल छोड़ दो सच यह है कि मां का असर कभी न कभी ज़रूर ही ज़ाहिर होता है।

जान्स—क्यों जनाब मां का असर कैसा? यह किस्सा तो आपने कभी नहीं सुनाया!।

गर्नर—यह किस्सा कहने के लायक न था मगर अब एलिस के चले जाने के बाद उसके इज़हार में कुछ हर्ज नहीं क्योंकि मुझको उसकी वापसी की न अब ख्वाहिश है और न उम्मेद। एलिस दरअस्ल मेरी लड़की न थी मैं सिर्फ़ पर्वरिश और परदाख़्त का गुनहगारहूं। ग़दर से पेशतर चुनार के करीब एक औरत रहा करती थी उससे और एक

फौजी गोरे से मुहब्बत होगई थी और इस दर्जा इश्क बढ़ा कि गोरा जिसका नाम ज़ाहिर करने की एहतियाज नहीं इस औरत से शादी करने को मुस्तैद होगया, यह औरत बिन ब्याही न थी उसका शौहर करनल फिशर साहब का साईस था। चन्दरोज़ में वह बेचारा मर गया, बाज़ लोग ख्याल करते थे (मगर मुझको यकीन नहीं) कि इस औरत ने अपने शौहर को ज़हर देकर मार डाला और इसतरह आज़ादी हासिल की। कई बर्स बराबर गोरे के साथ रही उसी से यह लड़की पैदा हुई लड़की पैदा होने के बाद गोरे ने अपने अफसर से इस औरत के साथ शादी करने की इजाज़त चाही इस दर्मियान में मैं कमबख्ती का मारा चुनार पहुंचा और उस औरत से मुझसे मोहब्बत हो गई मैं बमुकाबला उस गोरे के नौजवान और खुशरू था और मेरे पास उस ज़माने में दौलत भी थी, औरत ने मुझसे तालुक होतेही गोरे से कतए ताल्लुक किया और मेरे घर चली आई, चन्द रोज़ बाद मैंने बाकायदा उसको ईसाई किया और शादी करली मैंने उसको अंगरेजी पढ़ानी शुरू की और मैं उसकी ज़ेहानत की कहां तक तारीफ़ करूं डेढ़ दो बर्स में बखूबी अंगरेज़ी बोलने लगी। तर्ज़ आदात फैशन सब कुछ सीख लिया और चन्दही रोज़ में अच्छी खासी लेडी मालूम होने लगी और वह लोग जो पहले से नावाकिफ़ थे किसी तरह तमीज न कर सकते थे कि मिसेज़ गर्नर वही मैली कुचैली औरत है जो घास काटने जाया करती थी और सिर पर गट्ठा लाद कर बाज़ार में निकलती थी रफ्ता २ मैंने उसको सुसाईटी में भी इनट्रोडूस कर दिया और उसकी मनकसिरमिज़ाजी और एताअत ने स्टेशन की तमाम लेडियों और अंगरेजों के दिलों में जगह करली और हर जगह उसकी कदर मंज़िलत होने लगी। इसी ज़माने में एक सोदागर चुनार में आया और उसने शराब, विलायती पानी और खाने पीने की चीजों की दूकान खोली, दो चार मर्तबा मेरे साथ मिसेज़ गर्नर भी उसकी दूकान पर गई उससे भी जान पहचान हो गई पन्दरह बीस रोज़ में दोनों से खूब गहरी दोस्ती हो गई और मैं जब अपने काम से घर वापस आया मिसेज़ गर्नर को ग़ायब

पाया — मैंने एक रोज़ अपनी बीबी को डांटा कि इसतरह गैरहाज़िरी मुनासिब नहीं — भैया उसी के दूसरे रोज़ पहले वह सौदागर अपना बोरिया बंधना बांध कर रवाना होगया और शाम को मिसेज़गर्नर भी चलदी आजतक उसका पता नहीं कि उसको ज़मीन खा गई या आसमान, इस लड़की को छोड़ गई जिसकी परवरिश और परदाख्त सब मैंने की और आज तक किसी से नहीं बतलाया कि वह छोकरी दरअसल मेरी न थी।

ऐटकिन्स— मिसेज़ गर्नर को फिर आपने कहीं तलाश नहीं किया ?।

गर्नर— कोई जगह जहां बशर का पहुंचना मुमकिन था मैंने तलाश से बाकी नहीं रक्खो मगर कहीं कामयाबी न हुई मजबूरन् चुप हो कर बैठ रहा और इस प्यारी लड़की को उसकी निशानी समझा मगर अफसोस उसने अपनी मां से भी ज़्यादा हाथ पांव निकाले। जान्स ने भी यह कहानी निहायत ग़ौर से सुनो और मुंह से कुछ न बोला। दूसरे रोज़ जान्स व हमराही ऐटकिन्स गर्नर इटावे से दाग़ के यह अशआर बज़बान हाल पढ़ते रुख़सत हो गये।

अशआर।

देख सकते नहीं इस बज़्म में अग़यार मुझे। ले चली हाय कहां हसरते दीदार मुझे॥ रहम आता है दिलेज़ार तेरी हालत पर। काश हो जाय तेरी जान का आज़ार मुझे॥ अपने क़ातिल से नहीं ख़ून का दावा मुझको। बल्कि ख़ुद जुर्म मुहब्बत से है इक़रार मुझे॥ बोये हैं तेरी मुहब्बत ने हज़ारों कांटे। दिल मिला है कि मिला वादीये पुरख़ार मुझे॥

—

बाब इक्कावनवां।

मेमसाहब ग़ायब।

मिसेज़ जान्स और अलीमुन्ना ख़ैरियत से बम्बई पहुंच गये और पुलिस वालों को ज़रा भी उनकी नकल व हर्कत से ख़बर न हुई। अलीमुन्ना से मिसेज़ जान्स का बर्ताव बहुतही दिलचस्प था अलीमुन्ना को यह उम्मेद थी कि मेमसाहब अनक़रीब उनकी ज़ौजियत में दाख़िल हुआ चाहती हैं मगर मेमसाहब ऐसी कच्ची गोलियां कब खेलीं थीं जो इस तरह अपनी आज़ादी ख़ाक में

मिला देतीं और वह भी अलीमुल्ला के साथ ! इसमें शुबहा नहीं वह अलीमुल्ला की अज़हद शुक्रगुज़ार थी और हर तरह चाहती थी कि अपनी मुहसिन को नाराज़ न करे लेकिन यह एक बहुत मुश्किल काम था, अलीमुल्ला गो अपनी हालात और दर्जे को इस क़ाबिल न समझता था कि मेमसाहब को अपनी ज़ौजियत में दाखिल होने पर मजबूर करे लेकिन उसके साथही यह वह जानता था कि इतनी बड़ी खिदमत का कोई दूसरा इनाम नहीं हो सकता है, मेमसाहब को हवालात से भगा लाना वाक़ई मुश्किल काम था, अब न वह इस क़ाबिल रहा कि अपने वतन को लौट सके और न इस क़ाबिल रहा कि अपने रिश्तेदारों को अपना पता व निशान बता सके । तमाम उम्र की ग़रीबउलवतनी और बे सरोसामानी उसके पेशनज़र थी, मगर इस उमेद पर वह खुश था कि जो इनाम उसे मिलनेवाला है वह तमाम मुसायब का एक क़ीमती मावज़ा होगा । चन्दरोज़ा सोहबत और मेमसाहबा की मुहब्बतआमेज़ बर्ताव ने उसके दिल में एक हालत इज़तिराब व इश्तियाक पैदा कर दी थी लेकिन मिसेज़ जान्स की तनहाई और बेकसी उसको इज़हार मुद्दआ से हमेशा बाज़ रखती थी वह उसकी वज़हदारी से बहुत बईद समझता था कि इस हालत मजबूरी में मिसेज़ जान्स से कोई तकाज़ा करे, सिर्फ़ यही एक सबब उसके सकूत का न था, अभी तक उसको पूरा यक़ीन इस अम्र का न था कि हज़रात पुलिस की रसाई से वह महफूज़ है उसको हर वक़्त खटका लगा रहता था कि कहीं पुलिसवालों को उसके क़याम का पता न चल जाय और वह गिरफ्तार न हो जाय इसी वजह से वह एक जगह क़याम भी न करता था, दिन को अगर एकमकान में रहा तो शब यक़ीनन् दूसरी जगह बसर की, सुबह को अगर एक महल्ले में क़याम किया तो शाम को ज़रूरही दूसरी जगह चल दिया, मेमसाहबा बार २ समझाती थीं कि इस नक़ल व हर्कत में और भी इश्तबाहात पैदा होने के खतरात हैं, मगर मिस्टर अलीमुल्ला का इज़तराब किसी तरह कम न होता था।

अलीमुल्ला—पुलिसवाले हम लोगों को बेतरह भांप रहे हैं, मेरे ख्याल में

कोई न कोई इत्तला उनको ज़रूर पहुँच गई, अब यहां ज्यादा क़याम मुनासिब नहीं।

मेम—पुलिसवालों को हर्गिज़ कोई इश्तबाह हम लोगों पर नहीं है तुम नाहक घबरा रहे हो, अगर तुम्हारे इज़्तराब की यही हालत रही तो यह नाव पार नहीं लग सकती।

अलीमुल्ला—मैं इसी वजह से मुज़्तरिब हूं कि अगर खुदानखास्ता हम तुम दोनों पकड़ जायँ तो फिर रिहाई मुम्किन न होगी।

मेम—यह मैं खुद समझती हूं कि बम्बई कोई महफ़ूज़ जगह नहीं है, बृटिश अमलदारी के बाहर कहीं चलना चाहिये लेकिन कोई उम्दा मुकाम ज़ेहन में नहीं आता।

अलीमुल्ला—अगर तुम्हारी राय मज़बूत हो तो मक्का मोअज़्ज़मा के लिये जहाज़ के टिकट खरीद लें, हज़ारों हिन्दुस्तानी मुसाफिर जहाज़ पर होंगे वहां 'कसे रा बा कसे कारे न बरशद' का पूरा मज़मून होगा।

मेम—मगर मक्का तक पहुँचना बहुत दुश्वार है, हम लोग अदन भी न पहुँचने पावेंगे कि हम लोगों की गिरफ्तारी का वारण्ट पहुँच जायगा, अमेरिका अलबत्ता जाय अमन है, अगर किसी तर्कीब से वहां हम लोग पहुँच सकें तो फिर कोई खतरा नहीं।

अलीमुल्ला—अमेरिका में गो खतरात न हों लेकिन वह मुल्क मेरे हस्बहाल नहीं, सिवाय अँगरेज़ों के वहां किसी क़ौम के लोग आबाद नहीं, मक्का मोअज़्ज़मा इस वजह से जाय महफ़ूज़ है कि सुल्तान रूम मज़हबी पाबन्दी के सबब से किसी मुजरिम को गिरफ्तार नहीं कर सकते, अगर यह बात मालूम भी हो जाय कि हम लोग हिन्दुस्तान के मफरूर हैं तब भी कोई खदशा नहीं।

मेम—अच्छा मुझे तुम्हारी राय से ज़रा भी इख्तलाफ नहीं तुम आज शाम को बाज़ार जाओ और वहां दलालों से मिल कर हद्द तक के लिये दो टिकट ख़रीद लो और ठीक तारीख रवानगी जहाज़ की दर्याफ्त कर लो मैं तुम्हारे साथ हूं।

अलीमुल्ला—मालूम नहीं इटावे में क्या हो रहा है, यक़ीनन् बड़ी आफ़त मची होगी और पुलिसगार्ड के सब जवान माखूज़ होगये होंगे।

मेम—वहां के तोहशात से तुम नाहक परेशान होते हो जो कुछ शुदनी है होगा लेकिन खुदा से यह उमेद ज़रूर है कि हम लोगों तक अब कोई असर हटावे के आफ़ात का नहीं पहुँच सकता, बहरहाल तुम अपना दिल मज़बूत रक्खो जिस बहादुरी से तुम मुझे भगा लाये हो उसी बहादुरी से अब भी साबितक़दम रहो मैं जब तक ज़िन्दा हूं तुम्हारी बन्दाएहसान हूं तुम मुझे अपनी वफ़ाशार और फ़र्मांवर्दार समझो। मैं गो एक ग़ैर क़ौम की औरत हूं लेकिन उस एहसान को कभी नहीं फ़रामोश कर सकती जो तुमने मेरे साथ किया अपनी नौकरी अपनी इज्ज़त और अपनी सलामती को ख़तरा में डाला।

अलीमुल्ला—बार २ मेरे एहसानात का ज़िक्र करके मुझे शर्मिन्दा न करो मैंने जो कुछ किया है उसका इनाम तुम्हारे हाथ में है। सिर्फ़ इसी क़दर अलीमुल्ला कहने पाया था कि मेमसाहब उठ खड़ी हुईं और ज्यादा तसरीह का मौक़ा न दिया।

मेम— अच्छा अब तुम वक़्त को जाया न करो और इसी वक़्त जहाज़ की रवानगी वग़ैरह की तारीख़ दर्याफ़्त कर लो ताकि जल्द यहां से रवाना हो जायँ, जब तक मैं जहाज़ नहीं पहुँचती मुझे खुद पूरा इतमीनान नहीं, मगर दिल मज़बूत रक्खो और ख़ुदा पर शाकिर रहो।

अलीमुल्ला — तुम भी मेरे साथ चलो इस मर्दाना लिबास में बखुदा ज़रा भी तुम पर इश्तबाह नहीं हो सकता।

मेम—मुझे अपने साथ न ले चलो जिस रोज़ से हम लोग डांकबँगले से चले हैं एक मिनट को मैं तुमसे अलहदा नहीं हुई, औरतों की सदहा ज़रूरियात ऐसी होती हैं जो मर्दों के रूबरू नहीं अंजाम दी जा सकतीं। तुम जाकर जहाज़ ठहराओ और मैं समुन्दर के सफ़र के वास्ते तैयार हूं और तुम्हारे लिये खाने का भी इन्तज़ाम कर रक्खूं।

अलीमुल्ला—हर रोज़ मकान तबदील करने की वजह से और नीज़ इन्तशार के बाइस से खाने पीने को ज़रा जी नहीं चाहता। अच्छा जो तुम्हारी मर्ज़ी हो, तुम यहीं रहो मैं जहाज़ की ख़बर लाऊं।

मेम — इन्तिक़ाले मकान डांकवाला

अहाज़ न करना बल्कि किसी ग़ैर मुल्क का अगर कोई स्टीमर मिल जाय तो बहुत बेहतर होगा, उसपर सवार हो जाने के बाद कोई ख़तरा बाक़ी न रहेगा।

मिस्टर अलीमुल्ला सत्तर चूहे खाकर बिल्ली को हज कराने की फ़िक्र में चले और यहां मिसेज़ जान्स को तरह २ के ख्यालात परेशान ने परेशान कर दिया, वह अपनी हालत पर ज़रा भी मुतमैयन न थी, अपनी उमैदों भरी ज़िन्दगी अलीमुल्ला ऐसे गुमनाम शख्स के साथ गुमनामी की हालत में बसर कर देना उससे मुम्किन न था। जिस मतलब के लिये अलीमुल्ला से इज़हार-इश्क किया गया था वह हासिल हो चुका, अब उसको अपनी तीरा व तार ज़िन्दगी के मुनौअर और बाफ़रोग़ करने की फ़िक्र थी। अलीमुल्ला की आली हिम्मती तो इससे ज़ाहिर होगई कि वह मेमसाहब को हज कराने ले जानेवाला था और हमारी मेमसाहबा इस ख्याल से भी कोसों भागती थीं, वह खूब समझती थीं कि इसवक़्त तक पूरी २ तरह अलीमुल्ला का उनपर क़ाबू है और उसको ज़रा भी नाराज़ करना बना बनाया खेल बिगाड़ देने को काफ़ी है, इन्हीं वजूह से ज़ाहरी अतायत में मेमसाहबा ने कोई कमी न की, मगर दिल में वह इस फ़िक्र से ग़ाफ़िल न थीं कि जिस तरह से क़ैद फ़िरंग से निजात हासिल हुई है उसी तरह सोहबत नाजिन्स से भी जान बचे। अलीमुल्ला की नौजवानी और ख़ूबसूरती किसी क़द्र मेमसाहब को उसकी तरफ़ मुतवज्जह करती थी, मगर उसका जहल आदाबसोहबत से नावाकिफ़ होना छोटी और मुबतिदा सुसाइटी के तर्ज़ व रविश का ख़ूगर होना और काफ़ी तौर पर अँगरेज़ी न जानना उसके हक़ में बहुतही मुज़िर था और मेमसाहबा का दिल उसकी तरफ़ से फीका किये देता था। जैसेही अलीमुल्ला रुख़सत हुआ, मेमसाहब ने भी पूरा इरादा कर लिया कि हमेशा के लिये मिस्टर अलीमुल्ला को खैर बाद कहें बमुकाबला इसके कि किसी अजनबी मुल्क में अलीमुल्ला तनहा छोड़ दिया जाय और ग़रीबउलवतनी के मुसायब बर्दाश्त करे मेमसाहब के ख्याल में बहालत मौजूदा उसको रुख़सत कर देना बहुत बड़ा सलूक था, मिसेज़ जान्स खूब

जानती थीं कि हिन्दुस्तान में अब उस का क़याम मुमकिन नहीं, मगर फ्रान्स और अमेरिका की धुन उसे ऐसी समाई थी कि वहां पहुँच कर किसी मुतमौअल शख्स से शादी कर लेना और अपनी खोई हुई ऐश और आज़ादी वापस लेना उसके नज़दीक गोया कुछ दुश्वारही न था।

थोड़ी देर तक वह सोचती रही कि क्योंकर इस मारके अज़ीम में कामयाबी मुमकिन है। दफतन् खुद ब खुद आसार बशाशत उसके चेहरे पर नुमाया होने लगी और उसने हस्ब ज़ैल खत लिख कर एक लिफ़ाफ़े में बन्द किया और मकान में छोड़ कर खुद निकल खड़ी हुई।

"मैं हैरान हूं कि आपको अल्क़ाब क्या लिखूं मुझसे और आपसे जो ज़रिये मुलाकात है वह ऐसा कमीना और क़ाबिल एतराज़ है कि उसको ख्याल करने से भी मुझे शर्म आती है, मेरा आपके साथ इस तरह भाग आना खुदा जाने मेरे शौहर के दिल में क्या२ शक पैदा करता होगा, मगर किस्मत ने मुझे जिस बेबसी और मजबूरी की जंज़ीर में जकड़ दिया था वह इस हर्कत नाशाइस्ता के माज़रत को काफ़ी है इस खत में अपनी हिस्ट्री लिखने की ज़रूरत नहीं क्योंकि इन नापाक मुक़द्दमात के सबब से मेरी हालत बखूबी ज़ाहिर होगई है और मैं इस क़ाबिल नहीं रही कि किसी मोअज़्ज़िज़ सुसाइटी में शरीक हो सकूं। मैंने होश सँभालतेही अपने फ़र्ज़ी बाप गर्नर से उसके तमाम अयूब और उसकी तमाम बदचलनियां सीख लीं, सचाई और रास्तबाज़ी के एवज़ बनावट, धोकाबाज़ी और लालच मेरे रग व रेशा में भरगया मैंने मुश्किल से मुश्किलकामों को हमेशा अपनी चालाकी और तेज़ी की बदौलत आसान समझा और दुनियां की बड़ी२ मुसीबतों को अपनीहिम्मत और जुर्रतकी बदौलत लड़कों का खेल समझी। मैंने अपनी उम्र में चन्द सख्त ग़लतियां की बेशक शुरू में की मुझे ये ग़लतियां खतरनाक न मालूम होती थीं मगर तजरबा ने बतला दिया कि बुरे काम कभी न कभी ज़रूर खुल जाते हैं और चाहे कैसेही अक़्ल और होशियारी से छिपाये जायँ छिपे नहीं रह सकते। मेरी सब से पहली ग़लती यह थी कि मैंने जान्स से बिला मुहब्बत इज़हार इ क किया

और उससे शादी कर ली, इस ग़लती की तनहा मैं जिम्मेदार नहीं, मेरे लालची बाप ने मुझे शादी करने पर इस तरह मजबूर कर दिया था कि मुझको इमतयाज़ या दानाई से काम लेने का मौक़ाही बाक़ी न था। जान्स तो किसी क़द्र पढ़ा लिखा और मुतमौअल था, अगर उससे भी बुरा कोई शख्स बाज़ार अज़दोआज में दिखाई देता तो मैं नक्द दिल देकर खरीदारी को मुस्तैद हो जाती। वह लोग सख्त ग़लती पर हैं जो शादी को ज़रिये मसर्रत ख्याल करते हैं, मुझे अपने तजरबे से मालूम होगया कि असली खुशी कभी नसीब नहीं होती, अलबत्ता एक क़िस्म का आराम और चन्द रोज़ तफरीह का सामान ज़रूर मोहैया हो जाता है, मगर जान्स की शादी से मुझे वह भी हासिल न हुआ क्योंकि वह बदनसीबी से मुफ़लिस था और उसकी दौलत मेरे चन्दरोज़ा ऐश को भी काफ़ी न हुई। दूसरी ग़लती मुझसे यह हुई कि मैंने आगरे को अपने तिजारत का हेड क्वार्टर बनाया, आगरा चुनार से इतना दूर न था कि कोई मुस्तैद तलाशकुनिन्दा मेरा पता न पा सकता। तीसरी ग़लती जो दरहक़ीक़त सबसे बड़ी ग़लती थी यह हुई कि मैंने जान्स की वापसी के बाद सैयद अमीरहसन से शादी कर ली, मेरी अक्ल पर क्या पत्थर पड़ गये थे कि जो इतनी मोटी बात समझ में न आई कि अमीरहसन ऐसे नातजरुबाकार शख्स से शादी करना किसी तरह छिपा नहीं रह सकता। इटावा आगरे से इतना दूर न था कि एक मिनट के लिये भी कोई वाक़ा छिप सकता, अगर मुझे ज़रा भी अक्ल होती तो बएवज़ इटावे जाने के मैं सीधी फ्रान्स या अमेरिका जाती और बएवज़ अमीरहसन के किसी फ्रांसीसी अमीर या अमेरिकन जेन्टिलमैन से शादी करती, जहां न हिदायतरसूल का मुझपर अख्तियार रहता और न जान्स की रसाई होती। अफ़सोस मैंने ज़रा भी नतीजे पर ग़ौर न किया और इस तरह अपने को मुबतलाय मुसीबत कर दिया। बारे शुक्र है कि आख़ीर वक्त में ख़िज्र अक्ल ने रहबरी की और तुम्हारे साथ मफ़रूरी की तदबीर कामयाब हुई। तुम एक मिनट के लिये यह उमेद नहीं कर सकते कि मैं तुम्हारे ख़ुबसूरत पर फरेफ्ता और मफ

तून होकर तुम्हारे साथ भागी, तुमने यक़ीनन् सख्त ग़लती की जो एक अहलग़र्ज़ की बातों पर एतबार किया और इसी तरह अपनी आबरू इज़्ज़त और नौकरी को ख़तरे में डाला। बहर हाल में तुम्हारी शुक्रगुज़ार हूं और तुम से रुख़सत होती हूं, मेरी तलाश महज़ फ़ज़ूल है। तुम हर्गिज़ मेरे तलाश की हिमाकत न करना तुम्हारे पास मेरा दिया हुआ इतना रुपया मौजूद है कि तुम अपने इरादे के माफ़िक मक्के पहुँच सकते हो इस वास्ते और रुपया भी तुम्हारे लिये नहीं छोड़ती, मैं जहां ख़ुदा ले जाय जाती हूं और मुझे उमेद है कि आज़ादी और ऐश से बाक़ी हिस्सा ज़िन्दगी का बसर कर दूंगी। तुमको न मुझसे कोई शिकायत का मौक़ा है और न शिकवह का। अगर पांच रोज़ की मुलाकात में किसी को इस्तहकाक शिकायत हो सकता है तो तुम भी कर सकते हो लेकिन यह याद रक्खो कि अगर मैंने एक पँजरोज़ा दोस्त के साथ बेवफ़ाई की तो तुमने अपनी गवर्नमेण्ट और अपने आका की निमकहरामी की, इसलिये तुम्हारे कसूर का बोझ मेरी ख़ता से बदर्जहा भारी है।

राकिम एलिस जान्स।

मिसेज़ जान्स तो ग़ायब होगईं और उनके आइन्दा हालात के लिये नाज़रीन को दूसरी जिल्द का इन्तज़ार करना चाहिये मगर हमारे भोलेभाले दोस्त अलीमुल्ला की हालत वाक़ई सख़्त अफ़सोस के क़ाबिल है। वह बहुत-मीनान तमाम जद्दा के लिये जहाज़ पर रवानगी का इन्तज़ाम करके बहुत ही ख़ुशी२ वापस आया, देखते क्या है कि खाली मकान में सिर्फ एक ख़त रक्खा हुआ है और कोई नहीं, हर कमरे और कोठरी में बेचारे ने अपनी माशूक़ा को ढूंढ़ा और देर तक इसी हैरानी में ख़त भी उसने न पढ़ा, जब बिल्कुल मायूसी हुई ख़त ने और भी हसरत व यास की बिजलियां उसकी ख़र्मन सब्र व करार पर गिरा दीं।

इस तरह से जिसकी टूटी हो उमेद। नाउमेदी उसकी देखा चाहिये॥

अलीमुल्ला को मेमसाहबा की मुफ़ार्क़त से ज़्यादा अपनी आइन्दा हालत का तास्सुफ़ था, न वह इस हालत में था कि अपने वतन को लौट सके, न

उसे इतनी इतायत थी कि किसी गैर मुल्क को जा सके, सफर इतना दराज़ और तोशा इस क़दर कम था कि बेचारा अपनी हालत और बेबसी पर ग़ौर करके बेअख्तियार रो दिया।

की क्रेड़ इस क़द्र ग़मे फ़ुर्क़त के ख़ार ने। घबरा के रो दिया दिले बेअख्तियार ने॥

और वाक़ई उसका रोना हक़ बजानिब था न वह किसी से अपना हाले ज़ार कह सकता था और न किसी से हमदर्दी इन्सानी का वास्ता दिला कर मदद तलब कर सकता था उसकी हालत बऐनिह उस एशआई शायर के कलाम के मोआफ़िक़ थी।

मरा दरदेस्त अन्दर दिल अगर गोयम् ज़बां सोज़द। व गर्दम दर क़शम् तरसम कि मग़ज़े उस्तख़ां सोज़द॥

न कोई वहां दोस्त था न आशना जो दो चार कलमा तशफ़्फ़ीआमेज़ कह कर चारासाज़ी बीमार मुसीबत करता न कोई इस क़ाबिल था कि उसके हालात ग़म की इत्तला उसके बदनसीब वालिदैन तक पहुँचाता, बक़ौल शायर--

न क़ासिदे न सबाये न मुर्गनामा बरे। किसो ज़ बेकसी मां नमी बुर्द ख़बरे॥

उसने दो तीन घंटे की गिरिया व बका के बाद अपनी हालत सँभाली और अपनी आयन्दा क़िस्मत का यही फ़ैसला किया कि—

हुबउलवतन् अज़ मुलक सुलेमां खुशतर। ख़ार वतन अज़ संबुल व रेहां खुशतर॥ यूसुफ़ के बमिस्र बादशाही मेकर्द। मे गुफ्त गदा बूदन् कनआं खुशतर॥

वतन की वापसी के सिवा और कोई मुनासिब तदबीर उसके ज़ेहन में न आई। यह वह जानता था कि उसकी क़िस्मत में जुर्म के पादाश में सज़ाय सख्त बदी हुई है, मगर इस चन्दरोज़ा सख्ती के डर से हमेशा का ऐश व आराम को ख़ाक में मिलाना और एक बार्गी कमर हिम्मत चुस्त बांध कर मिसरये 'हरचे बादाबाद मां कश्ती दर आब अन्दाख्तम्' कहता हुआ फ़ौरन् इटावा रवाने हुआ।

इश्क़ बुतां में कोहे ग़म सर पै लिया जो हो सो हो। ऐश व निशात व ज़िन्दगी छोड़ दिया जो हो सो हो॥

अहलकारान् पुलिस जिसमें शेर खां कोतवाल सबके सरग़ना थे, अपनी फ़िक्र से ग़ाफ़िल न थे कि कानपूर के स्टेशन पर अलीमुल्ला को गिरफ्तार कर लिया और जो इनाम उसकी गिरफ्तारी के लिये मुक़र्रर था उसके हासिल करने को फ़ौरन् इटावा पहुँचे, साहब मैजिस्ट्रेट ज़िला ने अलीमुल्ला से उसकी तफ़सील दास्तान सुनी और वह ख़त जो मिसेज़् जान्स उस मकानमें छोड़गई थीं बग़ौर मुलाहज़ा किया, अलीमुल्ला की बेकसी और वाजिबुलरहम हालत ने अपना एक ख़ास असर मिस्टर मार्वेल पर डाला और साहब ममदूह ने निहायत रहम से अलीमुल्ला को सिर्फ़ ख़फ़ीफ़ जुर्माना करके रिहाई किया। अब बेचारा अपनी हर्कत पर नादिम और चन्दरोज़ा जनूं पर पशेमान है।

——

बाब बावनवां।

बीबी कुन्दन।

जब हिदायतरसूल धोखा दे कर और लखनऊ की शाहज़ादी बना कर कुन्दन को पटने से कलकत्ते ले गया उस वक्त से कुन्दन ने अपना कयाम भी कलकत्तेही में अख्तियार किया, वह कहती थी कि ख़ैर शाहज़ादे ने मुझे धोखा दिया मगर मैं उसकी याद में कम से कम इतना ज़रूर करूंगी कि इसी शहर में रहूंगी कि जहां शायद कभी गिरफ्तार हो कर वह आवे और फिर एक नज़र देख सकूं। हज़रात पुलिस भी कुन्दन को कलकत्ते में कयाम करने की तर्ग़ीब दे रहे थे, क्योंकि बहालत गिरफ्तारी कुन्दन से ज्यादा क़ाबिल एतबार उस मुक़द्दमे में कोई दूसरा गवाह न हो सकता था। बहरहाल बी कुन्दन कलकत्ते में रहीं और अपनी नौजवानी और हुसन की बदौलत कलकत्ते में भी उन्हें रुपये की कमी नहीं रही। जब इटावे से तार पहुँचा और पुलिस के अहलकारों ने हिदायतरसूल की गिरफ्तारी का क़िस्सा बी कुन्दन को सुनाया वह बहुतही ख़ुश हुई।

कुन्दन—कान्हिबिल साहब! क्या आप सच कहते हैं कि वह शाहज़ादा पकड़ गया?।

कान्हिबिल—जी हां मैं सच कहता हूं।

कुन्दन—और अब उसकी सज़ा हो जायगी?।

कान्हिबिल—सात बरस से कम तो होती नहीं दो चार बरस ज्यादा हो जाय तो ताज्जुब नहीं।

कुन्दन—अफ़सोस मूआ इटावा में पकड़ा गया. कलकत्ते में गिरफ्तार होता तो हम भी देखते।

कान्हिबिल—और जो आपको उसे दिखला दें तो क्या दोगी ?।

कुन्दन—मैं ग़रीब आदमी किस लायक हूँ आपको क्या दे सकती हूँ, एक बीड़ा पान तुम भी खा लेना।

कान्हिबिल—यह लीजिये आपको तलबी का समन है, आपको इटावे जाना पड़ेगा, इसपर दस्तख़त कर दीजिये।

कुन्दन—उह मेरे मियां, मैं अकेलो वहां कैसे जाऊंगी, मैं ऐसे दीदार से दर गुज़री, ना साहब इतनो दूर मुझसे न जाया जायगा।

कान्हिबिल—तुम्हारी अख़्तियारी बात नहीं है कि चो चाहे जाओ जी चाहे न जाओ, सर्कारी हुक्म है जाना ही पड़ेगा और अकेले काहे को जाओगी, सेठ पिहनजी भी जानेवाले हैं उन्हीं के साथ चली जाना।

कुन्दन—सेठ जी भी जायंगे ? ख़ैर तो कुछ मुज़ायका नहीं बड़े सेठ जो भी बहुत अच्छे आदमी हैं मैं उनके साथ २ हो लूंगी।

कुन्दन ने समन पर दस्तख़त करदिये और इटावा जाने की तयारी में मसरूफ हुईं। दो जोड़े कपड़े साथ के वास्ते निकाले और बाज़ार से झूठे काम के पीतल के जड़ाऊ ज़ेवर ख़रीदे और इस उमेद पर कि शाहज़ादा अवध मिलेगा बहुत खुश थीं॥ उसी रोज़ पिहनजी की दूकान पर जाकर सेठ जी से मिलीं उन्होंने खुशी से अपने साथ चलने की इजाज़त दी और उन्हीं के साथ बी कुन्दन इटावा पहुँची। सरा में मुकीम हुईं जैसा कि नाज़रीन सुनचुके है, इटावा में यह सुना कि हिदायतरसूल पर कोई मुकद्दमा कायम नहीं है यह सिर्फ गवाह है बी कुन्दन को और भी मसर्रत हुई, उसको अब तक यह उमेद बाकी थी कि शाहज़ादा साहब अगर मिल जायेंगे तो शाहज़ादी बनाने का वादा पूरा करेंगे कि जिस रोज़ रोबेकारी होने को थी बी कुन्दन ने सुबह बनाव सिँगार के नकली ज़ेवर से अपने को पैर से सिर तक मुरस्सा किया।

बहरामजी—क्यों बी कुन्दन! आज

तो खूब ठाट कर रही हो।

कुन्दन—आज मेरा शाहज़ादा मिलेगा, क्यों सेठ जी यह सच है कि शाहज़ादे पर कोई मुक़द्दमा नहीं है ?।

बहरामजी—शाहज़ादा ! अरे बेवकूफ़ किस चक्कर में पड़ी है, वह अब तेरी बात भी न पूछेगा और वह शाहज़ादा नहीं है, मामूली आदमी है, तू बार २ शाहज़ादा २ कह रही है।

कुन्दन—सेठजी, मेरी निगाह में वह शाहज़ादे से बढ़ कर है, उससा परीज़ाद मर्द मैंने कभी नहीं देखा उसकी प्यारी२ बातें आज तक मुझको याद हैं और मियां ऐसा शीन क़ाफ़ उसका दुरुस्त है कि वाह जी वाह। कलकत्ते के एक रईस को उसकी सी बातें करनी नहीं आतीं, बात २ पर ग़ज़लें पढ़ देता है।

बहरामजी—अाहहा ! यह कहिये कि अब तक आपका इश्क़ बाक़ी है, फिर क्या है, हिदायतरसूल आज हवालात से निकल जायँगे तुम अब यहीं रह जाओ। जिसतरह वह मेम कान्हिबिल के साथ भाग गई तुम हिदायतरसूल के साथ भाग जाओ, हम लोग अकेले चले जायँगे, इसका तुम ख्याल न करना।

कुन्दन—सेठजी ! भला मुझ ग़रीब को वह काहे को पूछने लगा।

बी कुन्दन का दिल हिदायतरसूल के इश्क़ से अब तक भरा हुआ था और बड़ी २ उमेदों और आर्ज़ूओं के साथ कचहरी तशरीफ़ ले गईं। रोबकारी के पेशतर हिदायतरसूल को किसी से मिलने की इजाज़त नहीं हुई और पुलिसवालों ने कुन्दन को नज़दीक नहीं जाने दिया, सबसे पहले साहब मैजिस्ट्रेट के इजलास पर बी कुन्दन को अपने आशिक़ का निज़ारा नसीब हुआ, हिदायतरसूल ने ख़िजालत भरी निगाह से और बी कुन्दन ने हैरतआमेज़ इश्तियाक़ से एक दूसरे को देखा। चन्द मिनट में इज़हारात क़लम बन्द होकर हिदायतरसूल रुख़सत हुए हिदायतरसूल का मुतलक़ इरादा कुन्दन से मिलने का न था। अौवल तो वह अपनी हर्कत पर किसी क़दर शर्मसार था, दूसरे उसे यह डर था कि बी कुन्दन गले न पड़ें, कचहरी से निकलतेही शहर की तरफ़ रुख़ किया, मगर कुन्दन ऐसी मुस्तैद न थी जो उनको इतना जल्द चले जाने देती।

कुन्दन—(दौड़ कर) शाहज़ादा साहब बन्दगी, वाहरी बेमुरौव्वत, अजी ज़रा ठहर तो जाओ हमसे भी दो २ बातें कर लो।

हिदायतरसूल—आहहा! बी कुन्दन साहब हैं, मिज़ाजशरीफ़।

कुन्दन—हम ग़रीबों का कौन मिज़ाज आप अपनी कहिये, मैं तो समझी कि आप मुँह चुराये भागे जाते हैं।

हिदायतरसूल—सुनो बी कुन्दन अौव्वल तो मुझे इसका यक़ीन न था कि इन सब वाक़ात के बाद तुम मुझसे मिलना भी पसन्द करोगी, मैं तुम्हारी ख़फ़गी से इस क़दर ख़ौफ़ खाये हुये था कि इलाही तेरी पनाह, बारे ख़ुदा का शुक्र है कि मेरी ख़ताओं ने तुम्हारे दिल को मेरी तरफ़ से बर्गश्ता नहीं किया।

कुन्दन—अजी हम क्या और हमारी ख़फ़गी क्या और हम काहे को ख़फ़ा होने लगे? ख़फ़ा होंगे सेठ पिसनजी जिनका नुकसान हुआ था, मुझको तो साहब सिर्फ़ इसी का रंज था कि तुमने मुझे दग़ा की मँझधार में छोड़ दिया ऐसा तुम्हें मुनासिब न था।

हिदायतरसूल—अजी अब पिछली बातों का ज़िक्र हो क्या।

जो कुछ हुआ सो हुआ बस गुज़श्तारा सलवात। कहां तलक् कोई रोया करे गिला दिल का॥

कुन्दन—मैं अब तक आपके सहारे रही और इस उमेद पर जीती थी कि एक न एक दिन मेरा प्यारा शाहज़ादा मुझको ज़रूर मिलेगा। कहो प्यारे! अब क्या कहते हो।

हिदायतरसूल—किस बात में?।

कुन्दन—वाह जी वाह!।

तुम हमें भूल गये थे जानी।
हम तुम्हें याद किया करते थे॥

मियां साहब अपना वादा याद कीजिये, किसी ग़रीब का दिल जलाना अच्छा नहीं होता, देखिये वह ग़ज़ल याद कीजिये जो आपने मुझको सिखलाई थी।

ग़ज़ल।

क्या तुझको मिलेगा दिल दुखाकर।
काबा को न ढा ख़ुदा ख़ुदा कर॥
हम ध्यान में ज़ुल्फ़ यार लाकर।
रोये सुर्मा लगा लगा कर॥
याद अबरू प भूल ऐ दिल।
नाख़ुन को न गोश्त से जुदा कर॥
कहता हूं किया है तुमने बेहोश।
फ़र्माते हैं होश की दवा कर॥

चलने में किसी का दिल न पिस जाय
रखियेगा कदम ज़रा बचा कर ॥
ऐ दिल कोई नाला हस्ब मामूल।
बुलबुल एक आध चहचहा कर ॥
रोआ किया मैं न वह पसीजे।
क्या टाल दिया है मुस्किरा कर ॥

क्यों जनाब साहब ! देखिये कैसी कही।

हिदायतरसूल—मैं इस वक्त पछता रहा हूं कि तुमको यह ग़ज़ल क्यों याद कराई थी।

कुन्दन—अजी अभी और सुनिये तब पछताइयेगा।

ग़ज़ल।

दिल में कोई हौसला रह न जाय।
जी खोल के मुझ पै तू जफ़ा कर ॥
ऐ यार जले को क्या जलाना।
अब मुँह न छिपाइये दिखा कर ॥
क्यों कदर बुतों का ज़िक्र कैसा।
ऐ मर्देखुदा खुदा खुदा कर ॥

हिदायतरसूल—बस और कोई शेर तो इस ग़ज़ल की अब याद नहीं।

कुन्दन—अजी याद तो सैकड़ों शेर हैं मगर मियां साहब कहिये मुझको क्या हुक्म है, मैं आपको न छोडूंगी। देखिये मैं आजतक आपकी लौ लगाये रही और आपके मिलने की उमेद पर जीती रही।

हिदायतरसूल—प्यारी कुन्दन ! तुम वाकिफ़ नहीं हो, मेरी शादी हो चुकी है और मेरी बीबी बहुत बदमिजाज़ है वह सुन पावेगी तो मुझको इतना मारेगी कि सिर में एक बाल न रह जायगा और जो तुम्हारी गत होगी वह बयान काबिल नहीं, इसलिये इस ख्याल को अपने दिमाग़ से निकाल डालो।

कुन्दन—तो तुम मुझसे न ब्याह करोगे ?।

हिदायतरसूल—देखो अगर मैं चाहूं भी तो मेरे अख्तियार से बाहर है, कुन्दन अब और बातें करो।

कुन्दन—ऐसी बेमुरौव्वती, ऐसी दग़ाबाज़ी, ऐ रब करीम तू इसको सज़ा दे और क्या कहूं !।

हिदायतरसूल—हां दो चार और कोसने सही बस।

कुन्दन—मियां हँसी दिल्लगी नहीं है, देखना क़यामत में तुम्हारा दामन पकडूंगी।

हिदायतरसूल—
यही इकरार यही कौल यही वा-

यदा था ओ दग़ाबाज़ फन्दसाज़
मुकरनेवाले ॥ इश्क़ में लुत्फ़ हो
जब उनसे हों दो दो बातें । वह कहें
कौन हो तुम, हम कहें मरनेवाले ॥

कुन्दन—ख़ैर मियां साहब बस, ज़माना माशूक़ों से खाली नहीं, आप यह समझे कि आप न मिलेंगे तो कोई मुझे पूछेगा नहीं? मियां आपसे अच्छे २ हमारे शहर में घूमते हैं कि कुन्दन आंख उठा कर देख ले और मैं आंख नहीं उठाती।

हिदायतरसूल—ख़ैर आपको आप के माशूक़ मुबारक रहें, मगर मुझको माफ़ रक्खें।

हिदायतरसूल की इस कजअदाई से कुन्दन का दिल टूट गया और उसको जिस क़दर सदमा हुआ उसका अन्दाज़ा मुश्किल है। आज वह समझी कि उसकी शाहज़ादे से तमन्ना पूरी नहीं हो सकती, आज उसको वह उमेदें कि एक दिन हिदायतरसूल सा शाहज़ादा उसको हमेशा के लिये मिल जायगा टूट गई कुन्दन मायूस होगई।

इस तरह से जिसको टूटी हो उमेद।
नाउमेदी उसको देखा चाहिये॥

कुन्दन ने वापस आकर कलकत्ते की तैयारी कर दी और अब धोखे में भी हिदायतरसूल को याद नहीं करती बल्कि जब कोई ज़िक्र करता है तो दो दो सौ गालियां देती है।

——

बाब निरपनवां।

जान्स का अञ्जाम।

जान्स गर्नर और ऐटकिन्स कलकत्ते वापस आये, जान्स ने अपने ससुर बुज़र्गवार की पर्वरिश और अतायत से मुँह नहीं मोड़ा और गो ज़ाहिरदारी के तौर पर गर्नर ने एक आध मर्तबा चुनार जाने का इरादा किया मगर जान्स ने नहीं माना। कान्हिबिल की वापसी और मिसेज़ जान्स की बेवफ़ाई ने जान्स को किसी क़दर तस्कीन दी बक़ौल शायर—

आदम् के बारकीबां दामनकशां
गुज़श्ती। गो मुश्ते खाक दाहम्
बर्बाद रफ्ता बाशद॥

जान्स—क्या आप समझते हैं कि उसको बेवफ़ाई का कोई इल्ज़ाम आप के ऊपर है या मुझको कुछ आपसे रंज है? फिर क्यों बार २ आप मुझसे अलहदा होने की दर्ख़ास्त करते हैं। मैं कह चुका कि मेरे कोई बाप मां

भाई नहीं है सिर्फ एक एलिस का सहारा था वह भी इस तरह धोखा दे गई। अब ऐसी हालत में अगर आपका साये आतफत मुझपर क़ायम रहेगा तो एक तरह की मुझे तस्कीन और तक़वीयत रहेगी।

गर्नर—जान्स ! तुम्हारी नेकबख्ती और शराफत में कुछ शुबहा नहीं, मैं इस बुढ़ापे में कहाँ जाऊं और क्या करूं, तुम्हारे पास रहने में सिवाय फायदे के नुक़सान नहीं, देखो मेरे क़र्ज़ख्वाह तुम्हारे यहां रहने से मेरा पता निशान नहीं जान सकते। हां मुझे कम्बख्त एलिस की हालात ख्याल करके अलबत्ता एक शर्म सी आती है और इस वजह से तुम्हारे पास रहने को जी नहीं चाहता।

जान्स—एलिस के हालात से शर्मिन्दा होकर मुझे आप न छोड़ें मैं उसको इतना जल्द फ़रामोश नहीं कर सकता जब तक दम में दम है मैं उसकी तलाशी से ग़ाफ़िल न हूंगा, बेशक उसने मेरे साथ सख्त जुल्म और बेवफ़ाई की मगर—

वफ़ा में हमको दावा है ज़फ़ा में तुमको ग़र्रा है। वह एक खसलत हमारी है यह एक शेवा तुम्हारा है॥

गर्नर—प्यारे जान्स ! मेरी सलाह मानो और मेरे बुढ़ापे पर रहम करके अब उसके ख्याल से दरगुज़रो, समझो कि वह मर गई, ज़िन्दा नहीं है, तुम अदालत के ज़रिये से अपनी शादी मंसूख करा लो और कहीं दूसरी जगह किसी बाअसमत और हसीन लेडी से शादी कर लो खुदा के लिये अपनी जवानी बर्बाद न करो।

जान्स—मिस्टर गर्नर आप मुझे इस बारे में सलाह न दीजिये, मैं हर्गिज़ एलिसको नहीं भुला सकता और जिस तरह मुमकिन होगा ज़िन्दा या मुर्दा अगर वह खुदा की खुदाई में है तो उसको ढूंढ़ निकालूंगा। हाय ! अब भी अगर वह मुझे याद करे और मुझ पर मेहर्बान हो।

मेहर्बां हो के बुला लो मुझे चाहो जिस वक्त। मैं गया वक्त नहीं हूं कि फिर आ भी न सकूं॥

गर्नर—एलिस मख़फ़ी मुक़द्दमा के खौफ़ से भाग गई, उसको पूरा यक़ीन था कि जेवरवाले जुर्म में किसी तरह बरीयत मुमकिन नहीं और मैं समझता

हूं यह ख्याल उसका ठीक भी था।

जान्स—बेशक वह इसी डर से भाग गई और इसी वजह से तो मैं अब भी उसकी खता माफ करने को तैयार हूं, बशर्ते कि वह मुझे अपना राज़दार समझे और मुझे अपनी हालत से इत्तला दे!

गर्नर—एलिस हिन्दुस्तान में नहीं है मैं समझता हूं अमेरिका या फ्रान्स को चली गई।

जान्स—अफ़सोस पुलिस ने अच्छी कोशिश गिरफ्तारी में न की, वर्ना जहाज़ पर सवार होने से पेश्तर उसका पकड़ जाना कुछ मुश्किल न था।

गर्नर—अगर वह अमेरिका पहुँच गई तो फिर मिलना कुछ मुश्किल नहीं, हम तुम वहीं चले चलेंगे और उसी मुल्क में बूदबाश अख्तियार कर लेंगे।

नाज़रीन! देखिये इश्क़ क्या चीज़ है अभी के दिन हुये कि मिष्टर जान्स एलिस की बेवफ़ाई पर नाराज़ होकर जामे से बाहर हुये जाते थे या वही बेचारा जान्स फिर अफ़ू खता पर मुस्तैद है, फिर उसी बेवफ़ा से वफ़ा करने को तयार है।

फिर उसी बेवफ़ा पै मर्ते हैं।
फिर वही ज़िन्दगी हमारी है॥

सच तो यह है कि एक मित्र के लिये भी जान्स को एलिस की मुहब्बत कम नहीं हुई कभी गुस्सा और यास के सबब से वह बेरहम हो जाता मगर फिर दूसरे ही ख्याल में वह वही बन्दा बेदिरम और वही आशिक़ जाँनिसार हो जाता जैसा हमेशा था और जैसा हमेशा रहेगा।

जान्स ने गर्नर की इस राय से इत्तफ़ाक़ किया कि बेशक एलिस अमेरीका या फ्रान्स चलदी उसने फ़ौरन् अख़बारात अमेरीका व फ्रांन्स व नीज़ इङ्गलिस्तान व जर्मनी में हस्ब ज़ैल इश्तिहार छपवाये—

एलिस! एलिस!! एलिस!!!

तुम कहीं हो और किसी हालत मे हो खुदा के लिये जान्स को न भूलो—आशिक़ का इश्क़ कुल खतायें माफ़ करने को तयार है, बाप की मोहब्बत बेटी के लिये कहीं और किसी हालत में कम नहीं हो सकती, तुम जहां कहीं हो इत्तला दो तुम्हारा राज़ अफ़शा न किया जायेगा और तुम्हारे पास तुम्हारा शोहर और बुड्ढा बाप दोनों आने को तयार हैं, अगर कोई

और मख्स एलिस जान्स अलमारूफ मिसेज़ होल के हाल से इत्तला देगा तो पांच हज़ार रुपया इनाम पावेगा।

अलमुश्तहर गर्नर और जान्स।

यह इश्तिहार कई हफ्ते बराबर अखबारात में छपते रहे मगर कोई जवाब न आया।

जान्स की हालत रोज़ बरोज़ खराब होती जाती थी, पहिले सदमा फिराक और ग़मे बेवफाई से सिर्फ दिल शिकस्ता और मगमूम था या अब रफ्ता २ और सदमा सहते सहते बीमार भी हो गया। उसकी हालत मदकूक की सी हो गई खाना पीना सब छोड़ दिया दवा से कतई परहेज़ था दोस्त अहबाब से बिलकुल नफरत थी, ऐटकिन्स ने तो इटावा से वापस आतेही किनाराकशी कर ली थी मगर गर्नर बेचारा कुछ मोहब्बत से और कुछ गर्ज से जान्स की बीमारदारी और दिलजोई में मुस्तैद था, गर्नर ने एक रोज़ जान्स को बहुत ही बेचैन देखकर डाक्टर के बुलवाने की इजाज़त चाही।

जान्स — डाक्टर क्या करेगा, मैं बीमार नहीं हूं मेरा दिल बीमार है मेरी ज़िन्दगी बगैर एलिसके मुमकिन नहीं, वह आ जावे तो मैं अभी अच्छा हुआ जाताहूं और अगर वह नहीं आती तो मेरीज़िन्दगी भी मुमकिन नहीं और मेरे जीने की कुछ ज़रूरत भी नहीं। हाय! जब मैं मुफलिस था एलिसके लिये रुपये कमाने को ब्रह्मा गया और फ़िराक की मुसीबत सही, जब खुदा ने रुपैया दिया और इस काबिल किया कि हमऔर एलिस बादशाह और मलका की तरह ज़िन्दगी बसर कर सकें तब खुदा ने यह मुसीबत डाली। हाय तकदीर! हाय तकदीर!

शिकवा न यार से न शिकायत रकीब से। जो कुछ हुआ खुदा से हुआ या नसीब से॥

गर्नर ने डाक्टर बुलाये और जान्स को दिखलाया, डाक्टरों ने आर्ज़ा दिल तजवीज़ किया और बहुत दिन न गुज़रे थे कि मिस्टर जान्स एक रोज़ सुबह को पलँग पर हमेशा के लिये सोते हुये मिले। अफसोस! सदअफसोस!! मिस्टर जान्स की वफात के बाद मालूम हुआ कि वह अपनी कुल दौलत यतीम खानों के लिये वक्फ़ कर गया सिर्फ पचास रुपे माहवार मिस्टर गर्नर के लिये उस वसीयतनामे में दर्ज है और

वही अब उनकी मआश का ज़रिया है।

मिस्टर जान्स की वफ़ात का हर शख़्स को अफ़सोस हुआ और अब मिसेज़ जान्स कानूनन् जिससे चाहें शादी करने को आज़ाद हैं।

बाब चौवनवां।

अमीरहसन की असली हालत।

अमीरहसन पर इन वाक़ात ने एक अजीब असर डाला, इन चन्दरोज़ा मुसायब ने उन्हें बतला दिया कि अज़ीज़ और भाई कैसेही बदतहज़ीब बद ख़िसाल या पुरानी लकीर के फ़कीर हों मगर फिर भी मुसीबत के वक़्त में वही काम आते हैं और यारानि सरेपुल चाहे कैसेहो वज़्अदार फ़ैशनएबुल बांके तिरछे और तराश ख़राश के वाक़िफ़कार हों मगर बिगड़े वक़्त में बात पूछने के भी रवादार नहीं होते। सैयद नज़ीरहसन का मुक़द्दमे की ख़बर सुनते ही बेताब होकर दौड़ आना, सैयद महम्मद अकरम का बावजूद सख़्त नाराज़ी के दौरान मुक़दमा में दौड़ धूप करना, मौलवी मुकर्रमहुसेन और ग़ैरख़ां का बावजूद कई मर्तबा ज़िल्लत उठाने के दौड़ दौड़आना और हर तरह मदद देना यह सब बातें ऐसी न थीं जो क़ाबिल क़दर न होतीं, अमीरहसन की आंखों पर फ़ैशन के कैसे ही परदे पड़ गये हों मगर वह बिलकुल अन्धे न थे और आख़िरकार उन्होंने चश्म इबरत से देखना शुरू किया और अपनी ग़लती से वाक़िफ़ हो चले। मुक़द्दमे में राज़ीनामा हो जाने के बाद भी सैयद नज़ीरहसन इटावा में मुक़ीम थे और अपने भाई की दिलजोई और तसकीनदेही में हरतरह मसरूफ़ थे। अमीरहसन पर मिस्टर मार्वेल की तक़रीर ने भी एक ताज़ुब ख़ेज़ असर डाला था और वह अब बिलकुल आमादा थे कि अपनी पिछली बेहतनाइयों से तोबा करें और दोस्त आशना अज़ीज़ आक़ारब सब से मिलें और अपने को एकबार फिर उस दुनियां में दाख़िल करें जहां उन्हें तमाम उम्र बसर करनी है मगर शर्म माना थी।

नज़ीरहसन—अमीरहसन तुम इस वक़्त तक सैयद साहब से मिलने नहीं गये देखो कितनी बुरी बात है।

अमीरहसन—मैं ख़ुद मुनफ़ैल हूं और जब कहो चलूं।

नज़ीरहसन—मेरी राय यह है कि तुम आज सैयद साहब के पास चलो और उन्हें अपने बँगले पर उठा लाओ।

अमीरहसन—तहसीलदार साहब को शायद रंज हो।

नज़ीरहसन—तहसीलदार साहब को कुछ रंज न होगा बल्कि खुश होंगे।

अमीरहसन—तहसीलदार साहब भी आज यहीं खाना क्यों न खाँय।

नज़ीरहसन—बहुत बेहतर मगर तुम्हारे यहां सिवा अँगरेज़ी खाने के हिन्दुस्तानी खाने तो पकते नहीं वह बेचारे क्या खायँगे। दूसरे तुम्हारा बावर्ची चमार है इस मर्दूद को आजही निकालो।

अमीरहसन—मेरा बावर्ची हिन्दुस्तानी खाना पकाही नहीं सकता आज उसको जवाब दे दूंगा।

नज़ीरहसन—क्यों भाई अब हम लोगों से कब तक खफ़ा रहोगे?।

अमीरहसन—नज़ीरहसन! मुझे शर्मिन्दा न करो मैं अपनी बेवकूफ़ियों के ख्याल से खजिल होरहा हूं, मेरी यह मजाल है कि मैं तुमसे या किसी से नाराज़ हूं, एक जुनूं मेरे सिरपर सवार था जो खुदा के फ़ज़ल से अब उतर चला है और यक़ीन है जल्द बिलकुल उतर जायगा मैं अपनी हालत को बख़ूबी ग़ौर कर रहा हूं और मुझे इस बात के इकबाल करने में ज़रा शरमिन्दगी नहीं है कि मैंने अँगरेज़ी फ़ैशन् के झगड़ों में अपने को डालकर सख्त तबाह और बर्बाद किया, हिन्दुस्तानियों से मैंने क़तई मिलना तर्क कर दिया इस उमेद पर कि अँगरेज़ ज्यादा क़द्र करेंगे मगर अफ़सोस 'खुद ग़लत बूदुश्चे मा पिन्दाशतेम'। अँगरेज़ों ने धोखे से भी बात न पूछी और उस का नतीजा यह हुआ 'अजीं सूं बर आन्दा वज़ीं सूं दर आन्दा' धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का, जिस कोफ़्त और इन्तशार से मैंने ये दिन काटे हैं खुदा दुश्मन को भी न नसीब करे। बड़ी मुश्किल एक और पड़ जाती है जो लोग अँगरेज़ी तर्ज़ें माशरत से नावाकिफ़ हैं वे मज़े में हैं, अगर किसी अँगरेज़ ने उनसे बदसुलूकी भी की वह बवजह नावाकफ़ियत होने के बुरा नहीं मानते, अगर उनको अच्छा साहब कह कर उठा भी दिया तो वह इसको अँगरेज़ी दस्तूर के मुताबिक समझ कर चुप हो रहते हैं, खत किता-

बत में भी अगर अलकाब आदाब में कोई बदतहज़ीबी की तो भी तमाम लोग बुरा नहीं जानते। बहरहाल वह हर ख्याल में ख़ुश हैं और मज़े में अपनी ज़िन्दगी बसर करते हैं, बख़िलाफ़ उसके वह लोग जो अँगरेज़ी फ़ैशन के वाक़िफ़कार हैं सख़्त मुसीबत में रहते हैं। मैं उन हिन्दुस्तानियों का तज़किरा नहीं करता जो ग़ैरमामूली तौर पर मोअज़्ज़िज़ ओहदों पर हैं या जिनके दर्जा निहायतही ख़ास तौर पर आले हैं, लेकिन औसत दर्जे के लोग जो अँगरेज़ी फ़ैशन में हैं मैं अपने तजरुबा से कह सकता हूं कि सख़्त बुरी हालत में हैं, वह उमेद करते हैं उस बर्ताव की जैसा कि बराबरी में अँगरेज़ एक दूसरे से करते हैं और किया जाता है उनसे वह बर्ताव जो आम तौर पर अँगरेज़ी इख़लाक़ की शान नहीं। बेचारे नौकरी के डर से कुछ बोल नहीं सकते मगर दिलही दिल में कुढ़ते हैं और रंज करते हैं, फिर इसपर भी हज़ार बखेड़े, कहीं जूते का झगड़ा, कहीं नम्बर की मुलाक़ात पर तकरार, ग़र्ज़ किसी तरह ख़ुशी से ज़िन्दगी बसर नहीं होती।

नज़ीरहसन — और अख़राजात का तुमने तज़किरा नहीं किया सबसे ज़्यादा क़ाबिल एतराज़ अँगरेज़ी फ़ज़ूल-ख़र्ची है।

अमीरहसन - कुछ शुबहा नहीं हम लोग तक़लीद करते हैं उन लोगों की जो हज़ार २ बारह २ सौ रुपया माहवार तनख़ाह पाते हैं और हमारी तनख़ाहें इन मुसारफ़ के लिये काफ़ी नहीं होतीं इस वजह से हम लोग सख़्त क़र्ज़दार और ज़ेरबार हो जाते हैं। भाई नज़ीरहसन! पिछले चन्द रोज़ में बहुत कुछ सबक़ हासिल हुए। मिसेज़ जान्स की बेवफ़ाई और बदइख़लाक़ी ने हिन्दुस्तानी औरतों की क़दर व मंज़िलत मेरी निगाह में बहुत ज़्यादा कर दी, वह लाख बदतहज़ीब और जाहिल हों मगर किसी तरह बदचलन और बदकार नहीं। यह मैं नहीं कहता कि अँगरेज़ी क़ौम में अस्मत नहीं या कुल अँगरेज़ी औरतें ख़राब होती हैं लेकिन जिस तरह शरीफ़ और रज़ील हम लोगों में होते हैं वैसेही अँगरेज़ों में भी हैं और उसी तरह उनके इख़लाक़ भी ख़राब हैं। हिन्दुस्तानी जो अँगरेज़ी मेमों से शादी करते हैं उनको

आम तौर पर शरीफ़ औरतें नसीब नहीं होतीं, छोटे दर्जे की मेमें मिलती हैं और उसका नतीजा वही होता है जो मैंने अपनी आंखों से देखा । नज़ीरहसन ! मैं अब नहीं समझता कि मेरा अंजाम क्या होगा, चन्द महीने अपरेल की बाक़ी हैं जिसमें इस साल इम्तिहान होनेवाला है, कर्ज़ की सुझ पर वह कसरत होगई है कि एक मिनट मुझे इतमीनान से बसर करना नसीब नहीं होता और इसी वजह से पढ़ने में जी नहीं लगता । दूसरे इटावे में मिसेज़ जान्स के बदनसीब किस्से ने मुझे इस दर्जा शर्मिन्दा और रुसवा किया है कि मैं अँगरेज़ हो या हिन्दुस्तानी सब को मुँह दिखाते शर्माता हूँ, भाई कोई राय बताओ मैं अपनी क़िस्मत का फ़ैसला अब तुम्हारे हाथ छोड़ता हूं ।

नज़ीरहसन मेरी यह राय है कि चलो हम तुम इस वक़्त मावेल साहब से मिलें और उनसे भी तुम्हारे बारे में मश्विरा करें, उनसे ज़्यादा हमारा मेहर्बान और मुश्फ़िक दोस्त कोई नहीं, सच यह है कि वालिद मर्हूम के बाद तुम्हारे साथ इसी अँगरेज़ ने पिदरी मुहब्बत का बर्ताव किया ।

अमीरहसन—मगर इन सब वाक़यात से वह भी मुझसे ख़फ़ा हैं और मुझको उनसे भी कुछ उमेद नहीं ।

नज़ीरहसन—यह तुम्हारी ख़ामख़्याली है । मिस्टर मावेल उन लोगों में नहीं हैं जिनकी इनायत या जिनका क़हर हवा के साथ फिर जाता हो वह उनपुख़्तामिज़ाज शरीफ़ों में से हैं जिन परहर हाल में भरोसा हो सकता है । बहरहाल दोनों भाई मिस्टर मावेल से मिलने गये, साहब बहादुर दोनों भाइयों को देख कर अज़हद ख़ुश हुए और पहले उन्हीं ने इसी की मुबारकबादी दी । सैयद नज़ीरहसन ने मिस्टर मावेल का बहुत २ शुक्रिया अदा किया और उसके बाद अमीरहसन के ख़्यालात में जो इनकिलाब पेश आया था साफ़ २ बयान किया और मुफ़स्सिल सलाह चाही ।

मावेल—मिस्टर अमीरहसन ! मैं इस वक़्त अपनी मसर्रत का अल्फ़ाज़ में इज़हार नहीं कर सकता, मैं तुमको फिर मुबारकबाद देता हूं कि तुमने इस चन्दरोज़ा मुसीबत और शर्मिन्दगी से वही फ़ायदा उठाया जो एक लायक और समझदार आदमी को उठाना चाहिये

था, तुम जानते हो हिन्दुस्तानमें मुझको तुमसे ज़्यादा किसी शख्स की बेहतरी और तरक्की का ख्याल नहीं और तुम्हारी ग़लतियों को सुन २ कर जिस क़दर मुझे सदमा होता था वह बयान करना फ़ज़ूल है। बहरहाल निहायत खुशी की बात है कि तुमने खुदबखुद अपनी हालत दुरुस्त करनी चाही और क़बल इसके कि तुम्हारा मर्ज़ लाइलाज हो जाता तुमने अपनी दवा की।

मेरी राय में लिबास अँगरेज़ी और अँगरेज़ी तर्ज़ माशरत हर्गिज़ बुरा नहीं मगर उसके साथही यह ज़रूर है कि अपनी हालत और अन्दाज़ा के मुताबिक़ सब काम करना चाहिये। अगर तुम समझो कि तुम्हारी आमदनी उन अख़राजात की मुतहम्मिल न होगी तो हर्गिज़ उसको अख्तियार न करो, दुनियां की निगाह में मक़रूज़ और ज़ेरबार होने से यह बदर्जहा बेहतर है कि तुम चन्द अँगरेज़ों में नीमवहशी या ग़ैर महज़्ज़ब समझे जाओ। तुम लोग अँगरेज़ी वज़ह और लिबास में हमलोगों की तक़लीद करते हो लेकिन इसमें हमारी पैरवी नहीं करते कि हम रुपये को किस इन्तिज़ाम से खर्च करतेहैं बेशक हिन्दुस्तान में अँगरेज़ों को बाज़ खर्च मजबूरन् बेज़रूरत करने होते हैं लेकिन तब भी कैसीही कम तनख्वाह का अँगरेज़ क्यों न हो कुछ न कुछ ज़रूर बचाता है। मिस्टर अमीरहसन! तुम ग़ौर करो कि अगर तुम खुदानख्वास्ता बीमार हो जाओ और किसी दोस्त से तुमको कुछ इमदाद की तवक्का न हो तो उस वक्त अगर तुम्हारे पास रुपया नहीं है तो क्या करोगे, डाक्टर की फ़ीस, दवा की क़ीमत कहाँ से दोगे, इस तरह हज़ारों ज़रूरतें पेश आजाती हैं जिनका पहिले से कुछ भी शान व गुमान नहीं रहता।

अमीरहसन—अफ़सोस मैंने बहुत वक्त ग़फ़लत में खो दिया और मैं इस वक्त भी आठ दस हज़ार रुपये का क़र्ज़दार हूं।

मिस्टर माबेल—एक दिन में आदमी अपनी हालत दुरुस्त नहीं कर सकता लेकिन अब भी अगर तुम अच्छी तरह अपने को सम्हालो तो बहुत कुछ कर सकते हो, मैं ख़ास रिपोर्ट करके तुम्हारी तनख़ाह दो सौ पचास रुपये करा दूंगा, तुम सौ रुपया खर्च करो और डेढ़सौ रुपया क़र्ज़ में दो जब

ज़ेरबारी रफ़ा हो जाय तब वही रुपया जमा किया करो।

अमीरहसन—मिस्टर माबेल ! मैं आपकी नसीहत पर चलने की दिल व जान से कोशिश करूंगा, लेकिन मुझे एक सख्त मुसीबत है, मैं शर्मिन्दगी से इटावे में किसी को मुँह नहीं दिखा सकता। इस बदनसीब क़िस्से के हालात इस दर्जा मशहूर हैं और इस तरह के वाहियात अफ़साना लोगों की ज़बानों पर हैं कि मैं यहां अपना क़याम बिलकुल मुनासिब नहीं समझता।

अौव्वल तो आम लोगों की निगाह में मेरा वकार बाकी नहीं रहा, दूसरे मैंने इबतदाअन् हिन्दुस्तानियों से यहां ऐसा बर्ताव किया कि सब लोग मुझसे नाराज़ हैं, मैं निहायत एहसानमन्द हूंगा अगर मेरे लाइफ का सीन आप तबदील करा दें, आपको यक़ीन दिलाता हूं कि हर तरह अपने सम्हालने की कोशिश करूंगा।

मिस्टर माबेल ने अमीरहसन की यह बात बहुत पसन्द की और दूसरी जगह तबादला करा देने का वादा किया। अमीरहसन और नज़ीरहसन वहां से तहसीलदार साहब के घर आये और सैयद महम्मद अकरम व मौलवी मुकर्रमहुसेन मिले। अमीरहसन ने निहायतही पुर्निदामत अल्फाज़ से अपनी पिछली बेउनवानियों की माफ़ी मांगी और अफ़सोस ज़ाहिर किया।

नज़ीरहसन ने साहब कलेक्टर बहादुर की मुलाकात का किस्सा और अमीरहसन के इनकलाब हालात का तज़किरा किया जिससे सब लोग निहायत खुश हुए, ख़ास कर सैयद महम्मद अकरम साहब की मसर्रत देखने के काबिल थी, वह अपनी दामाद की वजह से अज़हद रंजीदा और ग़मगीन थे और इटावे में आने के बाद किसी तरह उनको इसलाह की उमेद न थी बारे खुदा का शुक्र है कि उनकी मेहनत ठिकाने लगी और सैयद अमीरहसन के सिर से नशाये फ़ैशन् उड़ गया, सिर्फ़ फ़ैशन् का नशाही नहीं उतरा बल्कि उसके खुमारी के उतरने की भी पूरी उमेद हुई। तहसीलदार साहब ने मिसेज़ जान्स के भागजाने का क़िस्सा छेड़ा जो किसी क़दर सैयद अमीरहसन को नागवार हुआ और आखिरकार सैयद नज़ीरहसन ने इशारे से मना कर दिया और तहसीलदार

साहब ख़ामोश हो रहे। शहर में भी अमीरहसन के इसलाह की ख़बर खुद बखुद मशहूर होगई और हर तरीके के लोग इस बात से खुश थे कि एक रईस का लड़का बिगड़ गया था बारे सँभल गया। सैयद अमीरहसन तहसीलदार साहब से इजाज़त लेकर अपने मोअज़्ज़िज़ ससुर और भाई को उस रोज़ अपने बँगले पर उठा ले गये और शाम को बड़ी धूमधाम से हिन्दुस्तानी तरीके से दावत की, जिसमें तहसीलदार साहब, डिप्टी शरीफ़उल्ला और नव्वाब महम्मदहुसेन खां भी बुलाये गये और तहसीलदार साहब की वजह से शरीक हुए। एक हफ्ता भी न गुज़रा था कि गवर्नमेण्ट गज़ट ने अमीरहसन की तबदीली ज़िला बिजनौर और तरक्की का मुज़्दा सुनाया, जिसको सुन कर मिस्टर माबेल भी निहायत खुश हुए और अमीरहसन को मुबारकबाद की चिठ्ठी लिखी। बिजनौर एक छोटासा मुकाम है, वहां रेल भी नहीं है, आबादी का क्या तज़किरा। सिवा चन्द मोअज़्ज़िज़ अफसरों के और कोई छोटे दर्जे के अँगरेज़ भी नहीं रहते थे, इस वजह से सैयद महम्मद अकरम और नज़ीर हसन भी इस तबदीली से खुश हुये।

इस हुक्म के पातेही सैयद अमीरहसन बिजनौर जाने को तैयार हुए। नज़ीरहसन ने उनका सब क़र्ज़ अदा करदिया और दो चार रोज़ में सैयद अमीरहसन मिस्टर माबेलसाहब से रुख़सत होकर इटावे से आगरे गये, वहां अपनी मां से मिलकर फ़ौरन् बिजनौर चले गये। सैयद महम्मद अकरम भी अपने दामाद की क़ल्बे माहियत से मुतमैयन और मसरूर होकर अपने वतन को वापस गये और सबसे ज़्यादा मसर्रत यह है कि अमीरहसन की अहलख़ाना इस मर्तबा बिजनौर उनके हमराह गई।

सैयद अमीरहसन ने अपना इम्तिहान भी पास कर लिया और अब मग़रबी व शुमाली के सरबर आवुर्दा अफ़सरों में उनका शुमार है, अँगरेज़ी कपड़ा अब भी पहनते हैं मगर उसी तरह जैसा कि हिन्दुस्तानियों को चाहिये। अब न वह बादशाहाना ठाठ हैं न गवर्नमेण्ट हाउस से मुक़ाबला करने वाली कोठी और न वह फ़ज़ूलख़र्ची आराम से बसर कर रहे हैं, जब पिछले हालात याद करते हैं कभी तास्सुफ करते हैं और कभी पिछली हि-

माकतें याद करके खुद मुनफैल हो जाते हैं और अपने तसनीफकर्दा यह अख़बार पढ़ते हैं।

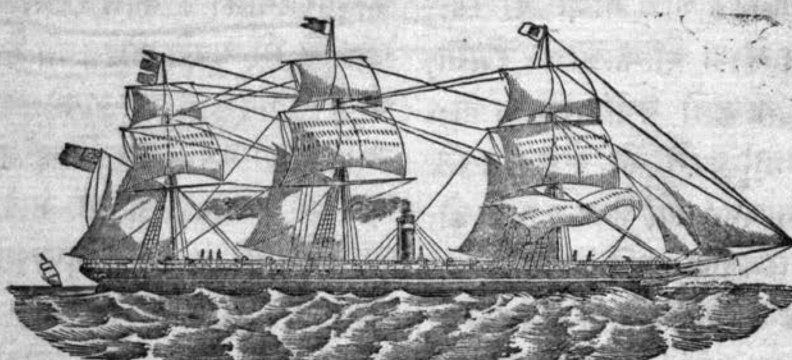
सर में फैशन् का नहीं अब मेरे सौदा बाकी। दिल में मेसर्स का कुछ भी नहीं धड़का बाकी॥ शर्ट की अब है ज़रूरत न हवस् कालर की। और न इसकार्फ का गर्दन में है फन्दा बाकी॥ लाल मोज़ा हो डिरेस हट में या हो काला। रेशमी हो वह कि छूती नहीं झगड़ा बाकी॥ खाना खाने को ड्रेस हट भी पहना साहब। क्यों है अब टाई की रंगत पै मचहला बाकी॥ ऊस्ले यूरप का नहीं शौके-निज़ारा मुझको। लेडियों का नहीं सिर पर मेरे साया बाकी॥ बाल होते रहें हर रोज़ पकड़ कूद मचै। नाचने की न हवस है न तमन्ना बाकी॥ जिसका जी चाहे बुलाये न बुलाये मुझको। कुछ कलब में नहीं शिर्कत की भी परवा बाकी॥ है करी भात की ख्वाहिश न मटन का लालच। अब डिनर और टिफन का नहीं चसका बाकी॥ मछली काटो न छुरी से यह कबाहत कैसी। रोटी खाने में नहीं हाथ से खतरा बाकी॥ फेंक दो तोड़ दो बर्बाद इसी दम कर दो। मेरे खुमखाने में अब जितनी हों अब्ला बाकी॥ नींद आती न थी दिन रात बिलों के डर से। अब है आराम किसी का नहीं देना बाकी॥ जिस कदर मिलती है तनखाह बहुत काफी है। कर्ज़ का खौफ़ महाजन का न खतरा बाकी॥ काम रखते नहीं रब्बबसे भी अपने कोई। गो है इहाफ में सर्दार न बैरा बाकी॥ आये आखिर को वही काम जिन्हें छोड़ा था। सद ग़नीमत कि था भाई का सहारा बाकी॥ ख्वाब ग़फ़लत से बहुत जल्द मैं जागा गाफ़िल। पिछली हर्कात का पर है मुझे सदमा बाकी॥

सैयद नज़ीरहसन बदस्तूर आगरे में शान व शौकत से वकालत कर रहे हैं और भाइयों भाइयों में अब दिली मुहब्बत है। मियां हिदायतरसूल बिजनौर भी गये थे लेकिन वहां घुसने नहीं पाये और मालूम नहीं अब कहां हैं।

नतीजा।

उसको भूला न चाहिये कहना।
सुबह जो जाये और आये शाम॥

फ़क़त।



भारतजीवन पुस्तकालय का प्रसिद्ध सूचीपत्र ।

शिवशम्भु प्रथम भाग	।)
संगीतसार	//)
संगीतमाला	//)
सुधाबुन्द	=)
सियबरकेलिपदावली	//)॥
श्यामसुधातरङ्गनी	//)
होलीविनोद	=)
राधाबरबिहार	/)
सुरसतरंगिणी	।)
हरिभक्तिरमण	।)
ऋतुरंग	/)॥
अलिफनामा	/)
अंग्रेजीरीतिदीपिका	=)
आरम्भगणित पहिला भाग	)॥
,, ,, दूसरा भाग	/)
आरोग्यदर्पण वैद्यक	१।)
आत्मविद्या	=)
ईसाईमतपरीक्षा	=)
एण्टीकालैराइन	=)
ईसाईमतखण्डन प्रथम भाग	//)
,, ,, दूसरा भाग	।)
,, ,, तीसरा भाग	=)
उपदेशलता	।)
उत्सवावली	/)
उपदेशपञ्चाशिका	/)
कन्यासम्बाद	/)
काश्मीरकुसुम	॥)
किष्किन्धाकाण्ड	/)
सुन्दरकाण्ड	/)
कायस्थकुलभूषण	।)
गणितकौमुदी पहिला भाग	=)॥
गोचिकित्सा	/)
गणितविज्ञान	//)
गणितविनोद पहिला भाग	=)।
,, ,, दूसरा भाग	//)
,, ,, तीसरा भाग	//)
,, ,, चौथा भाग	।)
,, ,, पांचवां भाग	//)
,, ,, छठवां भाग	//)
गोश्रावली	/)
चतुरंगचातुरी	१)
चाणक्यनीतिदर्पण	।)
जङ्गल में मङ्गल	=)
जन्मपत्री	=)
ताशकौतुकपचीसी दोनों भाग	१।)
ताशकौतुकपचीसी १ भाग उर्दू	॥=)
दयानन्दखण्डन	/)
पञ्चाङ्गविचार	।)
प्रश्नोत्तरी इतिहास तिमिरनाशक	१/)॥
,, ,, दूसरा भाग	=)

प्रश्नोत्तरी विद्याङ्कुर	/)
प्रश्नोत्तरी योरप	/)
प्रश्नोत्तरी हिन्दुस्तान	/)
प्रश्नोत्तरी पदार्थविज्ञानविटप	=)
प्रश्नोत्तरी प्राकृतिभूगोलचन्द्रिका	/)
परिभाषाबोधनी पहिला भाग	/)
पत्रकौमुदी	=)
पत्रमालिका	)॥
पत्रविज्ञान दोनों खण्ड	।)
प्रश्नोत्तरीमाला भाषा	)॥
परीक्षाभूषण	≡)
प्रतिबिम्बचिन्तामणि	।)
फिसानाअजायब	।)
बूंदी का राजवंश	)॥
बुल्लाशाह की सिहर्फी	)॥
बुढ़वामंगल	)॥
बालशिक्षा प्रथम भाग	)॥
ब्रजविलास	१)
बिसातिनलीला	)॥
विद्यारत्न	॥।)
बारज्ञानसुधाकर	=)
बैतालपचीसी	≡)
बैतालपचीसी	।=)
वेश्यास्तोत्र	≡)
वासन्तिककुसुम	।)
वणिकबन्धु	=)
भाषा बाल्मीकि रामायण गद्य	५)
भारतवर्ष के मध्यप्रदेश का संक्षिप्त राजनैतिक वृत्तान्त	=)
भूगोल रत्नाकर	=)
भक्तिसूत्र वैजयन्ती	।)
भाषा कोष	॥)
भारतवर्षमेंचरित्रकीदरिद्रताकेकारण	=)
भारतेन्दुशताब्दी	=)॥
मुहूर्त्तमंजरी	।=)
मानसकोष	॥)
महाताशकौतुकपचासा	॥।)
मानसशङ्कावली	१)
मिडिलक्लास भूगोल	।/)
रामायणसमस्यादर्श	।)
रसायन संग्रह	॥)
राजदर्पण	२)
लैलेमजनूं	=)
लघुगुटका	/)
लण्डन का यात्री	=)॥
विज्ञानबोध	≡)
वेदान्तप्रदीप	॥)
विधवाविपत्ति	/)॥)
वस्तुविचार	॥=)
श्रीयुत भारतेन्दु जी का फोटोग्राफ	॥)
सामयिकहिन्दीसमाचारपत्रोंकाइतिहास	।)
शब्दार्थबोधक	/)